CMYK

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

तापमान अधिकतम :39°C न्यूनतम: 25°C
सेंसेक्स 82,445.21 निफ्टी 25,103.20
सोना 98,600 चांदी 1,08,000

हल्द्वानी, मंगलवार 10 जून 2025 हल्द्वानी संस्करण: वर्ष 22 अंक 289 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

www.shahtimesnews.com

विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें। मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष 14 विक्रमी सम्वत् 2082 13 ज़िलहिज्जा 1446 हिजरी नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

अमेरिका में 12 देशों के नागरिकों की एंट्री बैन

विस्तृत खबर देश-विदेश पर

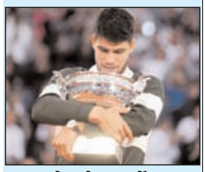

स्पेन के कार्लोस अल्काराज फ्रेंच ओपन चैंपियन बने

विस्तृत खबर खेल टाइम्स पर

मोदी के 11 साल के राज में बदली देश की तस्वीर

शाह , राजनाथ और नड्डा ने कहा: 'ऐसा ही हुआ'

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि उनकी सरकार के 11 वर्ष के कार्यकाल में देश ने 140 करोड़ लोगों की सामूहिक भागीदारी से सुशासन के बल पर विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से बदलाव देखा है, जिससे तेजी से प्रगति हुई है और 'जीवन में सुगमता' आई है। श्री मोदी ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार के कार्यकाल के 11 वर्ष पूरे होने पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सिलसिलेवार पोस्ट में कहा कि भारत न केवल सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बन गया है, बल्कि जलवायु परिवर्तन और डिजिटल नवाचार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर एक प्रमुख वैश्विक आवाज भी बन गया है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2014 में राजग सरकार के केन्द्र की सत्ता में आने के बाद श्री मोदी ने पहली बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली थी। प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के 11 वर्ष पूरे होने के अवसर पर श्री मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सिलसिलेवार पोस्ट में कहा कि सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के सिद्धांत से प्रेरित होकर राजग सरकार ने तेजी से और संवेदनशीलता के साथ युगांतकारी परिवर्तन किए हैं। श्री मोदी ने कहा है कि आर्थिक विकास से लेकर सामाजिक उत्थान तक, सरकार ने जन-केंद्रित, समावेशी और सर्वांगीण प्रगति को प्राथमिकता दी है। उन्होंने कहा -**शेष पृष्ठ दो पर**

सुशासन से विभिन्न क्षेत्रों में आया बदलाव, प्रगति के साथ जीवन में सुगमता बढ़ी: मोदी

पिछले11 वर्ष का कार्यकाल रहा आर्थिक पुनरुत्थान व राष्ट्रीय सुरक्षा का नया युग

नई दिल्ली। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि केन्द्र में राजग सरकार के 11 वर्ष के कार्यकाल में देश ने आर्थिक पुनरुत्थान, सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय सुरक्षा का एक नया युग देखा है। श्री शाह ने राजग सरकार का 11 वर्ष का कार्यकाल पूरा होने के मौके पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सिलसिलेवार पोस्ट में कहा कि मोदी सरकार के ऐतिहासिक 11 वर्ष जनसेवा के संकल्प, साधना और समर्पण का स्वर्णिम कालखंड रहे हैं।

अभूतपूर्व विकास व आर्थिक परिवर्तन व युगांतरकारी राजनीतिक दौर रहा

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पीएम मोदी के 11 वर्ष के कार्यकाल की सराहना करते हुए इसे 'अभूतपूर्व विकास' व 'युगांतरकारी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन' का युग बताया है। श्री सिंह ने रक्षा क्षेत्र में भारत की बढ़ती आत्मनिर्भरता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण ने देश को दुनिया की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में आत्मविश्वास के साथ खड़ा होने में सक्षम बनाया है। उन्होंने एक्स पर सिलसिलेवार पोस्ट में कहा कि भारत आज अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की हर कीमत पर रक्षा करने के संकल्प पर पूरी तरह से सुसज्जित, आश्वस्त और अडिग है।

बदली राजनीति की संस्कृति, लिए कई बड़े और कड़े फैसले

नई दिल्ली। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने सोमवार को मोदी सरकार को 'पारदर्शी व भविष्यदर्शी' बताया और कहा कि पीएम ने भारत में राजनीति की संस्कृति में आमूल-चूल परिवर्तन किया है। श्री नड्डा ने मोदी सरकार के 11 वर्ष पूरे होने के मौके पर यहां पार्टी मुख्यालय में विशेष रूप से आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा कि सरकार ने निराशा के वातावरण को दूर कर विकसित भारत की मजबूत आधार रखने का काम किया है। उन्होंने कहा कि 2014 से पहले की सरकार में भ्रष्टाचार का बोलबाला था और वह नकारात्मक एजेंडा के साथ चल रही थी।

कारगिल युद्ध के शहीदों को उनके घर जाकर सम्मानित करेगी सेना

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। सेना 26वें कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में करीब डेढ़ महीने तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करेगी और शुरुआती कार्यक्रम में कारगिल युद्ध में सर्वोच्च बलिदान देने वाले योद्धाओं के परिजनों को इस सप्ताह उनके निवास पर ही सम्मानित किया जाएगा। सेना के अनुसार ये कार्यक्रम विजय दिवस यानी 26 जुलाई तक आयोजित किए जाएंगे और इनमें देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले नायकों की अदम्य भावना, बलिदान और साहस का सम्मान किया जाएगा।

सेना ने इस सप्ताह एक विशेष संपर्क अभियान की योजना बनाई गई है जिसमें कारगिल युद्ध के दौरान राष्ट्र की सेवा में सर्वोच्च बलिदान देने वाले युद्ध नायकों के परिजनों को सम्मानित किया जाएगा। अपनी तरह के इस पहले अभियान में सेना के प्रतिनिधि शहीदों के 545 निकटतम परिजनों से मिलेंगे और उनके निवास स्थान पर उनका सम्मान किया जाएगा। सेना कर्मियों की एक टीम सेना की ओर से आभार पत्र, एक स्मृति चिन्ह, विभिन्न केंद्रीय और राज्य सरकार एजेंसियों द्वारा अधिकृत लाभों का विवरण लेकर 25 राज्यों, दो केंद्र शासित प्रदेशों तथा नेपाल का दौरा करेगी और युद्ध नायकों के परिवारों से बातचीत कर उनकी किसी भी समस्या के बारे में पूछताछ करेगी। सेना शहीदों के परिवारों की सहायता के साथ-साथ इस अवसर का इस्तेमाल निकटतम परिजनों की शिकायतों को दूर करने के लिए भी करेगी। सेना विरासत को संरक्षित करने के लिए यादगार चीजें भी एकत्र करेगी और इन्हें कारगिल युद्ध स्मारक, द्रास में सम्मानजनक स्थान देगी। ये कार्यक्रम 26 जुलाई को करगिल युद्ध स्मारक पर पुष्पांजलि समारोह के साथ समाप्त होंगे, जो देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले बहादुरों के सम्मान और आदर का प्रतीक है। डेढ़ महीने से भी अधिक समय तक चलने वाला यह स्मरणोत्सव न केवल अतीत का सम्मान करेगा, बल्कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों को सेवा तथा बलिदान के मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रेरित भी करेगा। देश में हर वर्ष 26 जुलाई को करगिल विजय दिवस मनाया जाता है जो राष्ट्र के दिल में गौरव व गंभीर यादों के साथ अंकित है।

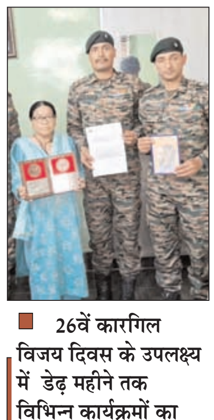

26वें कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में डेढ़ महीने तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करेगी सेना

सऊदी ने भारतीय यात्रियों पर नहीं लगाया कोई प्रतिबंध

नई दिल्ली। सऊदी अरब द्वारा भारतीय यात्रियों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया है। सूत्रों ने सोमवार को कहा कि सऊदी अरब की यात्रा करने वाले भारतीयों पर किसी भी प्रतिबंध के बारे में रिपोर्ट गलत है। सऊदी सरकार ने इस मामले में कोई अधिसूचना जारी नहीं की है। सूत्रों ने बताया कि हर साल हज के दौरान भीड़भाड़ से बचने के लिए अल्पकालिक वीजा पर अस्थायी प्रतिबंध लगाया जाता हैं, जो हज के समापन के साथ समाप्त होता है। इस साल भी वही किया गया है।

यूपी समेत छह राज्यों में और चढ़ेगा पारा श्रीगंगानगर देश में सबसे ज्यादा गर्म

नई दिल्ली। देश का उत्तर पश्चिमी इलाका इन दिनों भीषण गर्मी की चपेट में है। मौसम विभाग ने सोमवार को राजस्थान में हीटवेव का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। राज्य का श्रीगंगानगर रविवार को देश में सबसे ज्यादा गर्म रहा। यहां 47.4 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया। विभाग के मुताबिक 11 जून तक बीकानेर संभाग में पारा 47 डिग्री तक पहुंच सकता है। इस बीच 30 से 40 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से धूल भरी हवाएं चल सकती हैं। इसके अलावा पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में भी तापमान बढ़ सकता है। मानसून की बात करें, तो यह अभी भी बिहार-पश्चिम बंगाल की सीमा पर अटका है। 15 जून तक इसके मध्य प्रदेश में पहुंचने की संभावना है। भारत मौसम विभाग (आईएमडी) ने बताया कि जब से बारिश का रिकॉर्ड रखा जा रहा है (साल 1901) तब से अब तक सबसे ज्यादा बारिश इस साल मई में हुई है। इस साल देश में औसतन 126.7 एमएम बारिश हुई।

गोवा के स्वास्थ्य मंत्री ने डाक्टर से माफी मांगी, निलंबन वापस लिया

पणजी। गोवा के स्वास्थ्य मंत्री विश्वजीत राणे ने गोवा मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (जीएमसीएच) में एक डाक्टर से बदसलूकी करने के मामले में सोमवार को माफी मांग ली। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा कि मैंने हीट ऑफ द मूमेंट में जिस तरह से स्थिति को हैंडल किया, उसका मुझे बहुत दुख है। दरअसल, स्वास्थ्य मंत्री राणे ने 7 जून को जीएमसीएच का औचक निरीक्षण किया था। इस दौरान उन्होंने ड्यूटी पर तैनात डा. रुद्रेश कुट्टीकर पर मरीजों के साथ गलत व्यवहार करने का आरोप लगाया और सबके सामने फटकार लगाई। उन्होंने डाक्टर को सस्पेंड करने का आदेश भी दे दिया था। हालांकि, गोवा सरकार ने सस्पेंशन वापस ले लिया है। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। इसमें स्वास्थ्य मंत्री राणे ने डाक्टर की तरफ उंगली दिखाते हुए कहा था कि आप अपनी जुबान पर काबू रखना सीखिए, आप डाक्टर हैं। मैं आमतौर पर अपना आपा नहीं खोता, लेकिन आपको मरीजों से ठीक से व्यवहार करना होगा।

सुप्रीम कोर्ट ने मप्र के दो पत्रकारों को दी गिरफ्तारी से राहत

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने मध्य प्रदेश में एक पुलिस अधीक्षक के कार्यालय में कथित तौर पर मारपीट और जान के खतरे की आशंका के खिलाफ दायर दो पत्रकार शशिकांत जाटव और अमरकांत सिंह चौहान की याचिकाओं पर गिरफ्तारी से अंतरिम राहत देते हुए उन्हें मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाने की सोमवार को अनुमति दी।

पीठ ने याचिकाकर्ता दोनों पत्रकारों -शशिकांत जाटव और अमरकांत सिंह चौहान को गिरफ्तारी से तो राहत दी, लेकिन किसी अन्य प्रकार की राहत के लिए उनकी याचिका पर विचार करने से इन्कार कर दिया और उन्हें मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय जाने को कहा। पीठ ने कहा कि हम याचिका पर विचार नहीं कर रहे हैं। हालांकि, आरोपों को देखते हुए हम याचिकाकर्ताओं को आज से (नौ जून 2025) दो सप्ताह के भीतर संबंधित उच्च न्यायालय जाने की अनुमति देते हैं। इस बीच जब तक याचिकाकर्ता उच्च न्यायालय नहीं जाते तब तक उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जाएगा। याचिकाकर्ताओं ने अधीक्षक असित यादव सहित भिंड पुलिस पर हिरासत में हिंसा, जाति-आधारित दुर्व्यवहार और जान को लगातार खतरा होने का आरोप लगाया है। इससे पहले, शीर्ष अदालत ने दो जून को उन पत्रकारों की याचिका पर नौ जून को सुनवाई करने की सहमति व्यक्त की थी।

केरल में सिंगापुर के कार्गो शिप में आग लगी, पांच घायल

कोच्चि। केरल के कोच्चि में सिंगापुर के कार्गो शिप एमवीडब्ल्यूएएनएचएआई 503 में सोमवार सुबह आग लग गई। कार्गो श्रीलंका के कोलंबो पोर्ट से 7 जून को रवाना हुआ था। इसे 10 जून को नवी मुंबई के जवाहरलाल नेहरू पोर्ट (न्हावा शेवा पोर्ट) पहुंचना था। इंडियन कोस्ट गार्ड के मुताबिक घटना के दौरान कार्गो पर 18 क्रू मेंबर्स सवार थे। इनमें से 4 मेंबर्स लापता बताए जा रहे हैं, 5 घायल हैं। न्यू मंगलौर के पास इंडियन कोस्ट गार्ड के शिप- राजदूत, अर्नवेश, सचेत, समुद्र प्रहरी, राजदूत और सी-144 रेस्क्यू में जुटे हैं। इंडियन नेवी का आईएनएस सूरत भी ऑपरेशन में शामिल है।

तहव्वुर को परिवार से बात करने की मिली छूट

शाह टाइम्स ब्यूरो

तिहाड़ जेल अधिकारी की मौजूदगी में सिर्फ एक बार फोन करेगा, मुंबई हमले का मास्टरमाइंड

नई दिल्ली। मुंबई आतंकी हमले के मास्टरमाइंड तहव्वुर हुसैन राणा की याचिका पर सोमवार को दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट में सुनवाई हुई। राणा को अपने परिवार से बात करने की परमिशन मिल गई है।

मामले की सुनवाई स्पेशल एनआईए जज चंद्र जीत सिंह ने की। राणा फिलहाल अपने परिवार को केवल एक बार फोन कर सकेगा। यह कॉल जेल के नियमों के अनुसार और तिहाड़ जेल के अधिकारी की निगरानी में की जाएगी। कोर्ट ने जेल अधिकारियों से रिपोर्ट भी मांगी है, जिसमें पूछा गया है कि क्या राणा को भविष्य में नियमित फोन कॉल की अनुमति दी जानी चाहिए। इससे पहले 24 अप्रैल को कोर्ट ने राणा की याचिका खारिज कर दी थी। राणा के वकील पीयूष सचदेवा ने कहा था कि एक विदेशी नागरिक के तौर पर उसे परिवार से बात करने का अधिकार है और उसके इलाज को लेकर परिवार चिंतित है, लेकिन एनआईए ने जांच का हवाला देकर इसका विरोध किया था, जिसके बाद कोर्ट ने याचिका खारिज कर दी थी। आरोपी राणा 9 जुलाई तक एनआईए की हिरासत में है। 28 अप्रैल को पिछली सुनवाई में उसकी कस्टडी 12 दिन के लिए बढ़ा दी गई थी। दरअसल, एनआईए ने 10 अप्रैल को तहव्वुर राणा को अमेरिका से भारत लाया था। उसका प्रत्यर्पण 'ऑपरेशन राणा' के तहत हुआ था। तहव्वुर को अमेरिका के शिकागो में अक्टूबर 2009 में अमेरिकी एजेंसी एफबीआई ने गिरफ्तार किया था।

मणिपुर हिंसा: नेशनल हाईवे बंद, दवाएं तक नहीं मिल रहीं

इंफाल। मणिपुर में हिंसा के बाद हाईवे ब्लॉकेज और ट्रांसपोर्ट रूट्स प्रभावित होने से आम लोगों को महंगाई का सामना कर पड़ रहा है। खास तौर पर चुराचांदपुर और राजधानी इंफाल में खाने-पीने की चीजें और दवाइयों की भारी कमी हो गई है। जरूरी सामानों के दाम बढ़ गए हैं। हिंसा प्रभावित कई इलाकों में दवाइयां तक नहीं मिल रही हैं। एक स्थानीय निवासी ने बताया कि अब सारी चीजें मिजोरम के रास्ते आ रही हैं, इसलिए महंगी हो गई हैं। पहले जैसी स्थिति नहीं रही है। चुराचांदपुर कुकी समुदाय का गढ़ माना जाता है। यह नेशनल 2 और 37 पर निर्भर है, जो असम और नागालैंड को मणिपुर से जोड़ते हैं। अब ये रास्ते बंद हैं।

मद्रास के राष्ट्रीय राजमार्ग पर टोल वसूली पर अंतरिम आदेश

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने मद्रास उच्च न्यायालय के उस आदेश पर सोमवार को अंतरिम रोक लगा दी, जिसमें मदुरै-तूतीकोरिन राष्ट्रीय राजमार्ग के पुनर्निर्माण नहीं होने तक वहां टोल शुल्क वसूली पर रोक लगाई गई थी। शीर्ष अदालत के इस अंतरिम आदेश के बाद एनएचएआई मद्रास के मदुरै- तूतीकोरिन राष्ट्रीय राजमार्ग पर टोल वसूली करने के लिए स्वतंत्र हैं।

शिक्षा मद का 2291.30 करोड़ रोकने के मामले में तत्काल सुनवाई से इन्कार

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने केंद्र सरकार पर समग्र शिक्षा योजना की 2291.30 करोड़ रुपये की धनराशि रोकने का आरोप लगाते हुए उसका भुगतान करने का निर्देश देने की तमिलनाडु सरकार की याचिका पर शीघ्र तत्काल सुनवाई करने से सोमवार को इन्कार कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा इसमें कोई जल्दबाजी नहीं।

लोकल ट्रेन से गिरने पर पांच लोगों की मौत, सात घायल

मुंबई। महाराष्ट्र के मुंब्रा रेलवे स्टेशन पर कसारा से आने वाली एक भीड़भाड़ वाली लोकल ट्रेन से गिरने से सोमवार को पांच लोगों की मौत हो गई और सात अन्य घायल हो गए। मुंब्रा पुलिस स्टेशन के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक अनिल शिंदे ने यह जानकारी दी। श्री शिंदे ने कहा कि यह दुर्घटना सुबह करीब नौ बजे हुई और हमें सवा नौ बजे सूचना मिली और हम मौके पर पहुंचे, तो पाया कि करीब सात लोग घायल हैं और कम से कम पांच लोगों की मौत हो चुकी है। घायलों और मृतकों को तुरंत नजदीकी छत्रपति शिवाजी महाराज अस्पताल, कलवा ले जाया गया, जिनमें से चार घायल खुद जुपिटर अस्पताल चले गए। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक रिपोर्टों से पता चलता है कि घटना के दौरान 10 से 12 यात्री ट्रेन से गिरे थे। अधिकारियों ने दुर्घटना का मुख्य कारण अत्यधिक भीड़ बताया है, कथित तौर पर उस समय कई यात्री ट्रेन के दरवाजों पर लटके हुए थे।

सुकमा विस्फोट में एएसपी शहीद

सुकमा। जिले में सोमवार सुबह नक्सलियों ने आईईडी ब्लास्ट कर पुलिस अधिकारी की गाड़ी को उड़ा दिया है, जिसमें एएसपी आकाश राव गिरपुन्जे शहीद हो गए। वहीं एसडीओपी व टीआई समेत दो लोग घायल हो गए।कोंटा- गोलापल्ली मार्ग पर नए कैंप की स्थापना कर पुलिस अधिकारी लौट रहे थे। इस दौरान नक्सलियों द्वारा लगाए गए आईईडी की चपेट में आने से एएसपी गिरपुन्जे गंभीर रूप से घायल हो गए, उन्हें कोंटा स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, जहां इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। अतिरिक्त एसपी आकाश क्षेत्र में पैदल गश्त ड्यूटी पर थे। ताकि भाकपा-माओवादी की ओर से 10 जून को भारत बंद के आह्वान के मद्देनज़र किसी भी प्रकार की नक्सली घटना को रोका जा सके। आईजी बस्तर पी. सुंदरराज ने बताया कि कोंटा- एर्राबोरा मार्ग पर डोंड्रा के पास आईईडी विस्फोट की चपेट में आने से उपचार के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया।

कोरोना मामलों की संख्या 6491 तक पहुंची

नई दिल्ली। देशभर में कोरोना संक्रमण के सक्रिय मामलों की संख्या सोमवार सुबह तक 6491 पहुंच गई और राहत की बात यह है कि इसके संक्रमण से पिछले 24 घंटों के दौरान किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार सोमवार सुबह आठ बजे तक 358 नए संक्रमण के मामले सामने आए, जिससे कोविड-19 के कुल मामलों की संख्या 6,491 हो गई। राहत की बात यह है कि पिछले 24 घंटों में कोरोना से संबंधित किसी अन्य मरीज की मौत नहीं हुई और मृतकों की संख्या 65 पर स्थिर है। मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार सबसे ज्यादा मामले केरल में दर्ज किए गए हैं। देश के दस राज्यों में कोरोना सक्रिय मामलों में वृद्धि हुई है। जिनमें से केरल, दिल्ली, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल में भी मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। कोरोना संक्रमण के मामले में केरल सबसे अधिक प्रभावित राज्य बना हुआ है, जहां सोमवार सुबह सक्रिय मामलों की संख्या 1957 तक पहुंच गई और दिल्ली में लगभग 42 नए मामले सामने आए, जिससे कुल मामलों की संख्या 728 हो गई।

अंतरिक्ष में नई इबारत लिखने को तैयार शुभांशु शुक्ला

शाह टाइम्स ब्यूरो

पोस्टरों से सजाया गया उनका घर, आईएसएस जाने से पहले की फाइनल रिहर्सल, आज रवाना होंगे, ऐसा करने वाले पहले भारतीय बनेंगे शुभांशु

नई दिल्ली/लखनऊ। इंडियन एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला एक्सिओम मिशन 4 के तहत (आज) 10 जून को इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) जाएंगे। उनके अंतरिक्ष रवाना होने से उनके घर को उनकी जीवन यात्रा से जुड़े पोस्टर लगाकर सजाया गया है। साथ ही इसमें उनको इस बड़ी उपलब्धि के लिए बधाई दी गई है। इनमें वह अलग-अलग कार्यक्रमों में दिख रहे हैं।

किसी में प्रधानमंत्री मोदी उनका हौसला अफजाई कर रहे हैं। किसी में वह प्रशिक्षण स्थान पर दिख रहे हैं। इससे पहले रविवार को शुभांशु ने फुल ड्रेस फाइनल रिहर्सल की। इसमें असेंबली बिल्डिंग से रॉकेट तक जाने और उसमें बैठने के प्रोसेस को फॉलो किया। इस दौरान शुभांशु ने कहा कि यह एक बेहतरीन यात्रा रही है। ये पल बताते हैं कि आप किसी ऐसी चीज का हिस्सा बनने जा रहे हैं, जो आपके खुद से बहुत बड़ी है। मैं बस इतना कह सकता हूं कि मैं बहुत सौभाग्यशाली हूं कि मुझे मिशन का हिस्सा बनने का अवसर मिला। एक्सिओम मिशन 4 में चार देशों के चार एस्ट्रोनॉट 14 दिन के लिए स्पेस स्टेशन जाने वाले हैं। यह मिशन 10 जून 2025 को शाम 5:54 बजे लॉन्च होगा। शुभांशु आईएसएस पर जाने वाले पहले और स्पेस में जाने वाले दूसरे भारतीय होंगे। इससे पहले राकेश शर्मा ने 1984 में सोवियत यूनियन के स्पेसक्राफ्ट से अंतरिक्ष यात्रा की थी। एक्सिओम 4 मिशन के चालक दल में भारत, पोलैंड और हंगरी के मेंबर शामिल हैं। स्लावोज़ उज्नान्स्की 1978 के बाद स्पेस में जाने वाले पोलैंड के दूसरे एस्ट्रोनॉट होंगे। टिबोर कापू 1980 के बाद स्पेस में जाने वाले हंगरी के दूसरे एस्ट्रोनॉट होंगे। अमेरिकी की पैगी व्हिटसन का यह दूसरा कामर्शियल ह्यूमन स्पेस फ्लाइट मिशन है। मिशन में जा रहे चार एस्ट्रोनॉट ने नासा में 8 महीने की ट्रेनिंग पूरी की। 12 अप्रैल को क्रू ने केक काटकर जश्न -**शेष पृष्ठ दो पर**

RADIO SD 90.8 FM
...आपके दिल की बात
2 National Awards & Golden Mikes Awarded
only Community Radio Station of India
रेडियो पर विज्ञापन के लिए संपर्क करे
8937095000/20
WE ARE HIRING
MARKETING EXECUTIVES & INTERNS FOR RADIO
MANDI SAMITI ROAD, MUZAFFARNAGAR- 251001
CONTACT - 8937095000/20

संक्षिप्त समाचार

दोनों डिप्टी सीएम लोगों को आपस में लड़ा रहे: सपा

कौशांबी। जिले में रामबाबू आत्महत्या प्रकरण को लेकर सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एक्स पर ट्वीट करते हुए लिखा है कि भाजपा की राजनीति में इन दिनों अंदरूनी खींचतान का भयानक दृश्य देखने को मिल रहा है, जो कौशांबी में दो भाजपाई उपमुख्यमंत्रियों के बीच चल रही नोकझोंक से स्पष्ट होता है। उन्होंने आगे लिखा कि समाज में फैल रही असमंजस और अविश्वास की स्थिति को देखना अत्यंत चिंताजनक है। पहले एक उपमुख्यमंत्री ने पाल समाज के लोगों को मोहरा बनाकर अपनी स्वार्थी राजनीतिक खेल खेला, जबकि दूसरे ने अपने समाज को सहानुभूति दिखाकर झूठी रणनीति अपनाई। इसके पीछे दोनों के ऊपरवाले और उनके राजनीतिक गुलामों के बीच की टकराहट भी एक महत्वपूर्ण कारण बन रही है। सपा की राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एक्स पर ट्वीट करते हुए लिखा है कि इस सब के बीच यह समझना आवश्यक है कि भाजपा की अंदरूनी राजनीति केवल सत्ता की होड़ नहीं, बल्कि जनता को बांटने और विभाजित करने का एक प्रयास है।

पंजाब के गांवों में धर्म परिवर्तन चिंता का विषय: समिति

नई दिल्ली। दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक समिति ने कहा है कि पंजाब के 12 हजार गांवों में से आठ हजार गांवों में ईसाई धर्म के प्रचारक गरीब और कमजोर सिखों का तरह-तरह के लालच और लोभ देकर धर्म परिवर्तन करा रहे हैं जो चिंता का विषय है। समिति के अध्यक्ष सरदार हरमीत सिंह कालका और महासचिव सरदार जगदीप सिंह काहलों ने सोमवार को यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पंजाब के गांवों में ईसाई धर्म के प्रचारक पहुंच चुके हैं, जो गरीब और कमजोर सिखों को तरह-तरह के लालच और लोभ देकर ईसाई धर्म में शामिल कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि पंजाब में ईसाई धर्म का प्रचार बड़े स्तर पर पहुंच चुका है, लेकिन एसजीपीसी समिति सिख धर्म के प्रचार-प्रसार की अपनी जिम्मेदारी निभाने में असपफल रही है। पंजाब में सीमित संसाधनों के बावजूद, दिल्ली गुरुद्वारा समिति ने हाल के समय में 2500 से अधिक सिखों की अमृत संचार के जरिये सिख धर्म में वापसी करवाई है।

यूपी के तीन जिलों में लू का अलर्ट

लखनऊ। देश में मानसून के पिछले महीने समय से पहले आ जाने जाने से दिल्ली समेत कई राज्यों में मूसलाधार बरसात देखने को मिली, लेकिन अब बरसात का दौर थमने के बाद एक बार फिर दिल्ली और उत्तर भारत के कई राज्यों में गर्मी लोगों को झुलसा रही है। देश की राजधानी में सूरज आसमान से आग बरसा रहा है। आज दिल्ली में मौसम साफ रहने वाला है। अगले 4 दिन तक दिल्ली को गर्मी से राहत नहीं मिलने वाली है, हालांकि इसके बाद 13 जून को बारिश के आसार हैं। उत्तर प्रदेश में चुभती-जलती गर्मी पड़ रही है। मौसम विभाग ने आज से 11 जून के बीच प्रदेश के दक्षिणी और पश्चिमी भागों में कहीं-कहीं लू चलने का अनुमान जताया है। आगरा, ब्रज और बुंदेलखंड क्षेत्र में धूल भरी हवाओं के साथ लू चल सकती है। प्रदेश में 11 जून से बारिश होने की संभावना है। इससे पहले राज्य में गर्मी और लू देखने को मिल सकती है।

विफलताओं की मिसाल साबित हुए हैं मोदी शासन के 11 साल : खड़गे

वादे करके छीन ली गई करोड़ों की नौकरियां

नई दिल्ली, वार्ता

■ समाज में नफरत, धमकी और डर फैलाने की हो रही कोशिश, लोकतंत्र, अर्थव्यवस्था व सामाजिक ताने-बाने को पहुंचाया गहरा आघात

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने मोदी सरकार के 11 साल के शासन काल को विफल, संवैधानिक ढांचे को नुकसान पहुंचाने, हकीकत की जगह सिर्फ जुमलेबाजी करने और सामाजिक ताने बाने को आघात पहुंचाने वाला करार देते हुए सोमवार को कहा कि इस दौरान राज्यों की अनदेखी हुई तथा संघीय ढांचे को कमजोर किया गया है।

खड़गे ने कहा कि पिछले 11 वर्ष में मोदी सरकार ने लोकतंत्र, अर्थव्यवस्था और सामाजिक ताने-बाने को गहरा आघात पहुंचाया है। भाजपा-आरएसएस ने हर संवैधानिक संस्था को कमजोर कर, उनकी स्वायत्तता पर कड़ा प्रहार किया है। चाहे वो जनमत चुराकर पिछले दरवाजे से सरकारें गिराना हो या एक-दलीय तानाशाही शासन जबरन लागू करना हो। इस दौरान, राज्यों के हकों की अनदेखी हुई है और संघीय ढांचे को कमज़ोर किया गया है। उन्होंने कहा कि समाज में नफ़रत, धमकी और डर का वातावरण फैलाने की कोशिश जारी है। दलित, आदिवासी, पिछड़े, अल्पसंख्यक तथा कमजोर वर्गों का शोषण लगातार बढ़ा है। इनके आरक्षण और बराबरी के अधिकार से वंचित रखने की साजिश जारी है। मणिपुर की ना थमने वाली हिंसा भाजपा की प्रशासनिक विफलता का सबसे बड़ा सबूत है। भाजपा-आरएसएस ने देश के जीडीपी विकास दर को 5-6 प्रतिशत की आदत डाल दी, जो यूपीए सरकार के दौरान औसतन आठ प्रतिशत हुआ करता था। सालाना दो करोड़ नौकरियों का वादा पूरा करने के बजाय युवाओं से करोड़ों नौकरियां छीनी गई गई। महंगाई से जनता की बचत 50 साल में सबसे कम हो गई है और आर्थिक असमानता 100 साल में सबसे अधिक कर दी गई है। कांग्रेस अध्यक्ष ने मोदी सरकार की हर नीति को विफल करार देते हुए कहा कि नोटबंदी, गलत जीएसटी, अनियोजित लॉक-डाउन और असंगठित क्षेत्र पर हथौड़ा चलाकर करोड़ों का भविष्य बर्बाद किया। मेक इन इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया, डिजिटल इंडिया, नमामी गंगे, 100 स्मार्ट शहर, सब फेल हुए। रेलवे का बंटाधार किया। केवल कांग्रेस-यूपीए के बनाए गए ढांचे के फीते काटे। उन्होंने मोदी सरकार पर तानाशही का अरोप लगाया और कहा,ह्पिछले 11 वर्ष, मोदी सरकार ने संविधान के हर पन्ने पर तानाशाही की स्याही रगड़ने में गंवाए हैं।

हमारी चुनौती का जवाब मोदी हैं, नड्डा नहीं

नई दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि एक दिन पहले पार्टी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपने कार्यकाल पर प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सवालों का जवाब देने की चुनौती दी थी, लेकिन सोमवार को भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा को 11 साल की उपलब्धियों का लेखा-जोखा पेश करने को प्रेस के सामने लाया जा रहा है। कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख जयराम रमेश ने कहा कि जब चुनौती मोदी के लिए थी, तो नड्डा को प्रेस के सवालों का जवाब देने और 11 साल की उपलब्धियां गिनाने क्यों भेजा जा रहा है। उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा कि क्या सवाल करने वाले अनुकूल चेहरे अब तक नहीं मिले हैं। उन्होंने कहा कि कल हमने प्रधानमंत्री को उनकी सत्ता में 11 साल पूरे होने के मौके पर पहली बार एक अनस्क्रिप्टेड और बिना पूर्व-निर्धारित सवाल-जवाब वाला प्रेस कॉन्फ्रेंस करने की खुली चुनौती दी थी, लेकिन भाजपा अध्यक्ष नड्डा आज सामने आएंगे, जिन्हें दोपहर 12 बजे प्रेस से बात करने के लिए भेजा गया।

दस मुद्दों पर केंद्र को घेरेगी कांग्रेस

नई दिल्ली। मोदी सरकार के 11 साल पूरे होने पर कांग्रेस केंद्र से लेकर राज्य और जिलास्तर तक पोल-खोल अभियान चलाने की तैयारी में है। कांग्रेस के रिसर्च विभाग को जिम्मेदारी दी गई थी कि वो तथ्यों और आंकड़े जुटाए, जिससे राज्यवार मोदी सरकार के 11 साल की पोल खोल की जा सके। इसमें मुख्य रूप से इन मुद्दों का ख्याल रखा गया है।

कांग्रेस आर्थिक मोर्चे पर नाकामी, विदेश नीति भटकी हुई, 11 साल में वो वादे जो जुमले साबित हुए, सामाजिक ताने बाने को चोट, संवैधानिक संस्थाओं और एजेंसी का बेजा इस्तेमाल, चुनावी प्रक्रिया में धांधली, क्रोनी कैपेटलिज़्म को बढ़ावा, आतंकी हमलों पर जवाबदेही नहीं, सेना के शौर्य पर सियासी लाभ लेने की लगातार कोशिश और पीएम ने 11 सालों में एक भी पीसी क्यों नहीं की, जवाबदेही का सवाल मुद्दों पर बीजेपी को घेरेगी। रिसर्च विभाग ने इसके इर्द गिर्द तैयारी पूरी कर ली है। अब राज्य और केंद्र के नेताओं ने उसी आधार पर मीडिया, सोशल मीडिया, पीसी, पोस्टर और रैलियों में इसका इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। इसकी शुरुआत चुनावी राज्य बिहार में कांग्रेस ने की है, जुमलों की लिस्ट के जरिए। इस दौरान कांग्रेस प्रवक्ता राजीव गौड़ा ने कहा कि सरकार अर्थव्यवस्था पर पीठ थपथपा रही है, लेकिन जॉबलेस ग्रोथ हो रही है। वहीं, कांग्रेस प्रवक्ता महिमा सिंह ने कहा कि सरकार जो आंकड़े जारी कर रही है, उसमें तथ्यों और आंकड़ों की बाजीगरी है। उसने किसान लाभार्थियों को 3.7 लाख करोड़ रुपए वितरित किए, जबकि हकीकत यह है कि अप्रैल 2022 से नवंबर 2023 के बीच करीब सवा 2 करोड़ लाभार्थी लिस्ट से ही हटा दिए गए।

हरियाणा-महाराष्ट्र चुनाव डेटा कब शेयर करेगा ईसी

नई दिल्ली, वार्ता

■ तारीख बताए चुनाव आयोग, दो दिन पहले कहा था कि विस 24 के चुनाव में मैच फिक्सिंग हुई थी: राहुल

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने सोमवार को हरियाणा और महाराष्ट्र में 2009 से 2024 के दौरान हुए चुनावों का डेटा शेयर करने के चुनाव आयोग के फैसले की सराहना की।

राहुल ने पूछा कि क्या चुनाव आयोग डिजिटल फार्मेट में डेटा सौंपने की तारीख बता सकता है। राहुल ने यह सवाल एक्स पर एक पोस्ट के जरिए पूछा। उन्होंने 7 जून को पब्लिश एक मीडिया रिपोर्ट का स्क्रीनशाट भी शेयर किया, जिसमें दावा किया गया है कि चुनाव आयोग ने 2025 की शुरुआत में दिल्ली हाईकोर्ट को 2009 से 2024 तक हरियाणा और महाराष्ट्र के वोटर्स लिस्ट का डेटा शेयर करने का आश्वासन दिया था। हालांकि, चुनाव आयोग की ओर से इस पर अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। राहुल ने शनिवार को देश के दो दैनिक अखबारों में अपने लेख के जरिए 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में धांधली का आरोप लगाते हुए चुनाव आयोग से जवाब मांगा था। आयोग के सूत्रों ने रविवार को कहा कि वह तभी जवाब देगा जब राहुल उन्हें डायरेक्ट लेटर लिखेंगे। राहुल ने कहा था- महाराष्ट्र की तरह बिहार में मैच फिक्सिंग होगी राहुल गांधी ने अखबारों में अपने लेख में कहा था कि- महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में श्मैच फिक्सिंगश की गई थी, जिसमें पहले से भाजपा की जीत तय करने की पूरी कोशिश की गई। भाजपा और उसके सहयोगियों ने चुनाव जीतने के लिए 5 स्टेप की प्लानिंग की थी। राहुल ने ये भी कहा कि महाराष्ट्र की तरह ही मैच फिक्सिंग अगली बार बिहार में होगी, फिर किसी भी राज्य में जहां भाजपा हारती दिख रही हो। हालांकि, चुनाव आयोग ने राहुल के दावों को निराधार करार दिया और कहा कि चुनाव के फैसले पक्ष में नहीं आने के बाद ऐसे आरोप लगाना बेतुके हैं। राहुल ने शनिवार रात एक्स पर पोस्ट कर लिखा, आप (ईसी) बिना साइन और टालमटोल वाले नोट जारी करके गंभीर सवालों के जवाब देने का तरीका सही नहीं है।

फरार सोनम ने यूपी में किया आत्मसमर्पण

शिलांग, वार्ता

पति की हत्या के लिए भाड़े के गुंडे लिए थे: मेघालय पुलिस

राजा रघुवंशी की हत्या की पत्नी सोनम रघुवंशी ने उत्तर प्रदेश पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है। प्रारंभिक जांच से पता चला है कि उसने कथित तौर पर अपने पति की हत्या के लिए मेघालय में भाड़े के गुंडों को रखा था।

यह जानकारी एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने सोमवार को दी। मेघालय पुलिस ने इस मामले में सोनम द्वारा अपने लोगों की हत्या के लिए कथित तौर पर भाड़े के गुंडों में से तीन को पहले ही गिरफ्तार कर लिया है। मेघालय पुलिस के एक अधिकारी ने को बताया कि सोनम ने रविवार रात उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के नंदगंज पुलिस स्टेशन में पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। राजा की निर्मम हत्या से संबंधित परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर मेघालय पुलिस के विशेष जांच दल ने हत्या के तीन अन्य संदिग्धों - मध्य प्रदेश के इंदौर से दो और उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले से एक को गिरफ्तार किया। पुलिस अधिकारी ने बताया कि प्रारंभिक जांच में पता चला है कि तीनों आरो. पियों को राजा की हत्या के लिए कथित तौर पर सोनम ने किराए पर लिया था। उन्होंने बताया कि एक और आरोपी को पकड़ने के लिए तलाश जारी है। पुलिस अधिकारी ने बताया, ह्चारों आरोपियों को इस निर्मम हत्या की आगे की जांच के लिए राज्य में ट्रांजिट रिमांड के लिए अदालतों में पेश किया जाएगा। मामले के बारे में और जानकारी के लिए सभी आरो. पियों से पूछताछ की जा रही है। हत्या का मामला दर्ज किया जा रहा है और विशेष जांच दल जांच कर रहा है। मध्य प्रदेश के इंदौर के इस जोड़े ने 11 मई को शादी की थी और 21 मई को हनीमून पर मेघालय की राजधानी शिलांग पहुंचे। नवविवाहित जोड़ा 22 मई को अपने हनीमून के हिस्से के रूप में मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स जिले में सोहरा तक अपने किराए के दोपहिया वाहन पर सवार होकर गया, जो पृथ्वी पर सबसे अधिक बारिश वाला स्थान है। यह जोड़ा 22 मई को प्रसिद्ध लिविग डबल डेकर रूट ब्रिज के घर - नोंग्रियाट गांव में शिपारा होमस्टे में चेक इन किया था। राजा और सोनम सुबह-सुबह अपने होमस्टे से चेक आउट कर गए। टूर गाइड अल्बर्ट पीडी ने कहा कि उन्होंने इस जोड़े को ट्रेक के बीच में देखा था, नोंग्रियाट से लौटते हुए, उनके साथ तीन अन्य पुरुष पर्यटक भी थे। पीडी ने कहा, ह्राजा तीनों पुरुषों के साथ चल रहा था, जबकि सोनम उनके पीछे धीरे-धीरे चल रही थी। दंपत्ति के लापता होने का मामला तब प्रकाश में आया जब 24 मई को शिलांग और सोहरा रोड के बीच सो. हरारिम गांव में एक दोपहिया वाहन लावारिस हालत में मिला, जिसे उन्होंने किराए पर लिया था।

जनता को भ्रमित कर रहे हैं तेजस्वी यादव: राजीव रंजन

नई दिल्ली। जनता दल यूनाइटेड ने बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव पर जनता को भ्रमित करने का आरोप लगाते हुए सोमवार को कहा कि लालू प्रसाद यादव के शासनकाल के दौरान आरक्षण के लिए कोई प्रावधान नहीं किए गए।

जनता दल यूनाइटेड के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन प्रसाद ने यहां कहा कि नीतीश सरकार द्वारा कराए गए जाति सर्वेक्षण पर सवाल उठाकर श्री तेजस्वी यादव जनता को भ्रमित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि श्री लालू प्रसाद यादव के शासनकाल के दौरान पिछड़ों, वंचितों और महिलाओं को उनके अधिकार देने के लिए कोई प्रयास नहीं किए गए। वर्ष 1990 से वर्ष 2005 तक राजद की सरकार थी और इस दौरान पंचायतीराज या अन्य संस्थानों तथा नौकरियों में महिलाओं, वंचितों और पिछड़ों वर्ग के लिए आरक्षण के प्रावधान नहीं किए गए।

जनता के सामने पेश करें लेखा-जोखा: सपा

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ मोदी सरकार के 11 साल पूरे होने पर सपा सुप्रीमो ने सरकार को घेरा

लखनऊ। केंद्र में मोदी सरकार के सोमवार 9 जून को 11 साल पूरे होने पर समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने बीजेपी पर हमला बोला है। सपा मुखिया ने कहा कि एक हिंदी कहावत है एक पे एक ग्यारह और दूसरी है नौ दो ग्यारह, लेकिन मेरा सवाल सिर्फ 11 साल का नहीं है। अखिलेश यादव ने कहा कि दिल्ली सरकार के 11 साल और उत्तर प्रदेश सरकार के 9 साल मिलाकर कुल 20 साल होते हैं। इन 20 वर्षों का हिसाब जनता को देना होगा। सरकार को तमाम क्षेत्रों में अपने कामकाज का लेखा-जोखा पेश करना चाहिए।

सरकार के 11 साल पूरे होने पर अखिलेश यादव ने मोदी सरकार पर सवालों की बौछार की। उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में हम कितने पिछड़ गए? रोजगार देने में सरकार कितनी सफल रही? जिन निवेशों की बात की गई थी, उनमें से कितना निवेश असल में आया? अखिलेश ने कहा कि उत्तर प्रदेश के लोग इसलिए ज्यादा आकलन करेंगे, क्योंकि देश के प्रधानमंत्री इसी राज्य से आते हैं। दिल्ली और लखनऊ के बीच तालमेल नहीं दिखाई देता। अखिलेश ने आगे कहा कि दिल्ली और लखनऊ के बीच कोई तालमेल है, ऐसा नहीं लगता। यह मैं नहीं कह रहा, बल्कि यह इनकी योजनाओं में साफ दिखता है। उन्होंने सरकार की योजनाओं पर सवाल उठाते हुए कहा कि जो गांव गोद लिए गए, अगर उनकी तस्वीर नहीं बदली, तो प्रश्न चिह्न लगता है और यह प्रश्न चिह्न उत्तर प्रदेश सरकार पर लगता है। अखिलेश यादव ने बीजेपी सरकार पर आंतरिक खींचतान का आरोप लगाते हुए कहा कि यहां जितने लोग बीजेपी में बैठे हैं, वे एक-दूसरे के सिर से टकरा रहे हैं। कोई ऐसा विभाग नहीं है, जहां खींचतान न चल रही हो। गांवों में अब भी गंदगी भरी हुई है। सपा प्रमुख ने किसानों की समस्याओं पर सरकार को घेरते हुए सवाल उठाया कि फसलों का कोई एरियल सर्वे करता है क्या? आपको खुद जाकर किसानों का सामना करना चाहिए, जो आप करना नहीं चाहते। उत्तर प्रदेश में आज भी बड़े पैमाने पर लोग बेरोजगारी और महंगाई से जूझ रहे हैं। कार्यवाहक डीजीपी को लेकर अखिलेश यादव ने कहा कि जब स्थायी सरकार बनेगी, तभी प्रदेश को स्थायी डीजीपी मिलेगा। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि अब 2027 के बाद ही उत्तर प्रदेश को स्थायी डीजीपी मिल पाएगा।

अर्थ व्यापार   अर्थ व्यापार   अर्थ व्यापार

लिवाली की बदौलत शेयर बाजार में रही तेजी

मुंबई, वार्ता

अमेरिका और चीन के बीच लंदन में होने वाली व्यापार वार्ता से वैश्विक स्तर पर तनाव कम होने की उम्मीद से उत्साहित निवेशकों की स्थानीय स्तर पर हुई चौतरफा लिवाली की बदौलत सोमवार को शेयर बाजार लगातार चौथे दिन तेजी रही। बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 256.22 अंक की छलांग लगाकर 82,445.21 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ढ्ढएनएसईऋ कि निफ्टी 100.15 अंक उछलकर 25103.20 अंक पर पहुंच गया।

इसी तरह बीएसई का मिडकैप 1.03 प्रतिशत की तेजी के साथ 46,570.16 अंक और स्मॉलकैप 1.19 प्रतिशत मजबूत रहकर 54,074.88 अंक हो गया। इस दौरान बीएसई में कुल 4335 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2798 में लिवाली जबकि 1409 में बिकवाली हुई वहीं 128 में कोई बदलाव नहीं हुआ।

इसी तरह एनएसई में कारोबार के लिए रखी गई कुल 3055 कंपनियों के शेयरों में से 2066 में तेजी जबकि 904 में गिरावट रही वहीं 85 में टिकाव रहा। बीएसई में रियल्टी की 0.11 प्रतिशत की गिरावट को छोड़कर अन्य 20 समूहों में तेजी का रुख रहा। शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 386 अंक की तेजी के साथ 82,574.55 अंक पर खुला और लिवाली दम पर थोड़ी देर बाद ही 82,669.00 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। वहीं, बिकवाली होने से दोपहर बाद यह 82,369.24 अंक के निचले स्तर तक लुढ़क गया। अंत में पिछले दिवस के 82,188.99 अंक के मुकाबले 0.31 प्रतिशत उछलकर 82,445.21 अंक पर पहुंच गया। इसी तरह निफ्टी 157 अंक चढ़कर 25,160.10 अंक पर खुला और सत्र के दौरान 25,160.10 अंक के उच्चतम जबकि 25,077.15 अंक के निचले स्तर पर रहा। अंत में पिछले सत्र के 25,003.05 अंक की तुलना में 0.40 प्रतिशत मजबूत होकर 25,103.20 अंक पर बंद हुआ।

एसबीआई ने दिया 8076 करोड़ का लाभांश

नई दिल्ली। देश के सबसे बड़े वाणिज्यिक बैंक भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने सरकार को वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 8076 करोड़ रुपये से अधिक का लाभांश दिया है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को बैंक अध्यक्ष सीएस सेट्टी ने सोमवार को यहां इस राशि का चेक सौंपा। बैंक ने मई 2025 में एक नियामक फाइलिग में बताया था कि उसने वित्त वर्ष 2025 के लिए 15-90 रुपये या 1590 प्रतिशत का अंतिम लाभांश को मंजूरी दी है। यह बीते 12 सालों के दौरान बैंक की ओर से सबसे बड़ा लाभांश भुगतान है। इससे पहले साल 2013 में बैंक ने 41-5 रुपये या 4500 प्रतिशत का लाभांश दिया था।

अधिकांश खाद्य तेल सस्ते, जिंसों में टिकाव

नई दिल्ली, वार्ता

विदेशी बाजारों के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर उठाव सुस्त रहने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में अधिकांश खाद्य तेल 953 रुपये प्रति क्विंटल तक सस्ते हो गए जबकि अन्य जिंसों के भाव स्थिर रहे।

तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का जून वायदा 14 रिंगिट बढ़कर 3925 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। वहीं, जून का अमेरिकी सोया तेल वायदा 0-02 सेंट की गिरावट के साथ 47-49 सेंट प्रति पौंड बोला गया। इस दौरान घरेलू बाजार में अधिकांश खाद्य तेलों में तेजी का रुख रहा। मूंगफली तेल 110 रुपये, सोया रिफाइंड 219 रुपये, पाम ऑयल 521 रुपये और वनस्पति तेल के भाव 953 रुपये प्रति क्विंटल लुढ़क गए। वहीं, सरसों तेल और सूरजमुखी तेल में कोई बदलाव नहीं हुआ। गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टीके रहे।

दाल-दलहन : दाल-दलहन के बाजार में टिकाव रहा। इस दौरान चना, दाल चना, मसूर दाल, मूंग दाल, उड़द दाल और अरहर दाल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ। अनाज : अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान चावल और गेहूं के दाम पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर पड़े रहे। सरकारी वेबसाइट पर जारी खाद्यान्नों के थोक दाम इस प्रकार रहे :- दाल-दलहन : चना 5700-5900, दाल चना 6700- 6800, मसूर काली 7500 -7600, मूंग दाल 9500-9600, उड़द दाल 9200-9300, अरहर दाल 8600-8700 रुपये प्रति क्विंटल रहे। अनाज : ढ्भाव प्रति क्विंटलऋ गेहूं दड़ा 2950-3050 रुपये और चावल 3650-3750 रुपये प्रति क्विंटल रहा। चीनी-गुड़ : चीनी एस. 4280-4380, चीनी एम. 4500-4600, मिल डिलीवरी 3620-3720 और गुड़ 4400-4500 रुपये प्रति क्विंटल बोले गए।

प्रथम पृष्ठ के शेष...

मोदी के ....

कि भारत आज न केवल सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है, बल्कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए कार्रवाई और डिजिटल नवाचार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर एक प्रमुख वैश्विक आवाज भी है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि देश को अपनी सामूहिक सफलता पर गर्व है, लेकिन इसके साथ ही, हम आशा व विश्वास के साथ विकसित भारत के निर्माण के लिए नए संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि पिछले 11 वर्षों में कई सकारात्मक बदलाव आए हैं और जीवन की सुगमता को बढ़ावा मिला है। श्री मोदी ने सरकार की उपलब्धियों को संवाद-शैली के माध्यम से प्रस्तुत करने वाली नमो एप के माध्यम से इस परिवर्तनकारी यात्रा के बारे में जानकारी जुटाने के लिए देशवासियों को प्रोत्साहित भी किया है।

इस ऐप के जरिये इंटरैक्टिव गेम, क्विज़, सर्वेक्षण और अन्य प्रारूपों के माध्यम से प्रेरणादाई जानकारी प्राप्त की जा सकती है। प्रधानमंत्री ने लोगों को नमो एप और आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध वीडियो, इन्फोग्राफिक्स और लेखों जैसे विभिन्न आकर्षक प्रारूपों के माध्यम से भारत की विकास यात्रा के बारे में जानकारी लेने के लिए भी आमंत्रित किया। श्री मोदी ने अपने पोस्ट में कहा कि सुशासन और परिवर्तन पर स्पष्ट ध्यान! 140 करोड़ भारतीयों के आशीर्वाद और सामूहिक भागीदारी के बल पर भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से परिवर्तन देखे हैं। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' के सिद्धांत से प्रेरित होकर, एनडीए सरकार ने तेजी से और संवेदनशीलता के साथ युगांतकारी परिवर्तन किए हैं। आर्थिक विकास से लेकर सामाजिक उत्थान तक, जन-केंद्रित, समावेशी और सर्वांगीण प्रगति पर ध्यान केंद्रित किया गया है। हमें अपनी सामूहिक सफलता पर गर्व है, लेकिन साथ ही, हम एक विकसित भारत के निर्माण के लिए आशा, विश्वास और नए संकल्प के साथ आगे बढ़ते हैं।

अंतरिक्ष में...

मनाया। शुभांशु शुक्ला मूल रूप से उत्तर प्रदेश के लखनऊ के रहने वाले हैं। इनकी शुरुआती पढ़ाई-लिखाई अलीगंज, लखनऊ के सिटी मान्टेसरी स्कूल से पूरी हुई। 12वीं के बाद उन्होंने नेशनल डिफेंस एकेडमी (एनडीए) का एंट्रेंस एग्जाम क्लियर किया और यहीं से ग्रेजुएशन की डिग्री हासिल की। एनडीए भारत में सशस्त्र बलों (थल सेना, नौसेना और वायुसेना) के लिए ऑफिसर कैडेट्स को प्रशिक्षण देने वाली एक प्रमुख संस्था है।

ये ट्रेनिंग के साथ-साथ एकेडमिक डिग्री भी देती है, जो जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), नई दिल्ली से एफिलिएटेड होती है। शुभांशु को 17 जून, 2006 को भारतीय वायुसेना के फाइटर विंग में शामिल किया गया। वे एक अनुभवी फाइटर और टेस्ट पायलट हैं। उनके पास 2,000 घंटे से अधिक का फ्लाइंग एक्सपीरियंस है। उन्होंने सुखोई-30 एमकेआई, मिग-21, मिग-29, जगुआर, हाक, डोर्नियर और एएन-32 जैसे लड़ाकू विमानों को उड़ाया है।

उत्तर प्रदेश के 10 जिलों में सभी भूलेख होंगे ऑनलाइन

शाह टाइम्स ब्यूरो

नक्शा कार्यक्रम से मिलेगी सटीक जानकारी, जमीन के लिए नहीं होंगे झगड़े

लखनऊ। यूपी के 10 जिलों में नक्शा कार्यक्रम के तहत शहरी भूमि रिकॉर्ड तैयार किए जा रहे हैं। इनमें टांडा, नवाबगंज, गोरखपुर, झांसी आदि शहर शामिल हैं, इससे शहरी नियोजन के साथ संपत्ति कर निर्धारण और विवादों को कम करने में मदद मिलेगी। साल 2031 तक प्रदेश की 40 प्रतिशत आबादी शहरी क्षेत्रों में निवास करने लगेगी। ऐसे में सटीक भूमि रिकॉर्ड का होना बेहद जरूरी है।

यूपी राजस्व निदेशालय में सोमवार को भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय के सचिव मनोज जोशी ने पत्रकार वार्ता में यह जानकारी दी। उन्होंने यूपी में डिजिटल इंडिया लैंड रिकॉर्ड मॉडर्नाइजेशन प्रोग्राम और शहरी क्षेत्रों के लिए 'नक्शा' कार्यक्रम' के बारे में बताया। परिषद के अध्यक्ष अनिल कुमार ने भी डिजिटल भूमि प्रबंधन, नवाचारों और भविष्य की योजनाओं के बारे में बताया।

सचिव ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार का लक्ष्य एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था हासिल करना है। राजस्व विभाग ने ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि रिकॉर्ड को डिजिटल कर दिया है। अब रियल-टाइम खतौनी, नक्शा और खसरा ऑनलाइन उपलब्ध हैं। गांवों के नक्शों को डिजिटल और जियो-रेफरेंस्ड किया गया है। प्रत्येक भूखंड को यूनिक लैंड पार्सल आइडेंटिफिकेशन नंबर (यूएलपीआईएन) दिया गया है। इसमें भूखंड का आकार, स्वामित्व और भौगोलिक निर्देशांक शामिल हैं। इससे संपत्ति लेन-देन, कर निर्धारण और आपदा प्रबंधन में आसानी होगी। स्वामित्व योजना के तहत ड्रोन सर्वेक्षण से ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय अधिकार रिकॉर्ड तैयार किए गए हैं। नक्शा कार्यक्रम के तहत प्रदेश के 10 शहरी निकायों में शहरी भूमि रिकॉर्ड तैयार किए जा रहे हैं। इनमें अंबेडकर नगर का टांडा, बाराबंकी का नवाबगंज, बुलंदशहर का अनूपशहर, चित्रकूट, गोरखपुर, हरदोई, झांसी, मिर्जापुर का चुनार, पीलीभीत का पूरनपुर, शाहजहांपुर का तिलहर शामिल हैं।

शाह टाइम्स क्लासीफाईड्स Sale

स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना खोई हुई मर्दाना ताकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें या फोन करें।
काजीजादा, अमरोहा-UP
हाशमी दवाखाना
9997161320, 8272800800

काम कोर्स उदास क्यों?
अधिक संतुष्टि, हैरतअंगेज पावर, शीघ्रपतन, नपुंसकता, बचपन की गलतियों से हमेशा के लिए छुटकारा।
फोन कर घर बैठे औषधियां डाक द्वारा प्राप्त करें।
ऋषि इन्टरनेशनल
08899787114
09808917010

Cipzer
HEALTH WITH CARE
जॉन्डिस क्योर
लिवर का जिगरी दोस्त
भूख की कमी, बदहजमी, जॉन्डिस, फैटी लीवर, एल्कोहलिक लिवर डिसीज आदि से लड़ने की ताकत देता है ताकि आप रहें फिट एण्ड एक्टिव
प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

वैधानिक सूचना
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार में प्रकाशित होने वाले सभी विज्ञापनों पर कार्यवाही करने से पहले पूरी जांच-पड़ताल कर लें तथा उचित सलाह ले लें। कोई भी अभिदाता जो इस अखबार में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संदर्भ में कोई राशि भेजता है, किसी चिकित्सीय सलाह पर कोई कार्यवाही या खर्च करता है या कोई वचन देता है, तो ऐसा वह स्वविवेक, बुद्धि तथा जोखिम पर करेंगे। कम्पनी, प्रकाशक या उसका कोई कर्मचारी विज्ञापनदाता या उसके किसी उत्पाद या सेवा हेतु किये गये किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन नहीं देते तथा ऐसे विज्ञापनों विश्वास करके किसी व्यक्ति को हुई क्षति, हानि परिणाम के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

लोक साहित्य को डिजिटली किया जाएगा संरक्षित: धामी

■ मुख्यमंत्री ने कहा–दीर्घकालीन साहित्य सेवी सम्मान प्रदान करेगी राज्य सरकार ■ उत्तराखंड की बोलियों का एक भाषाई मानचित्र बनाएगा उत्तराखंड भाषा संस्थान ■ प्रदेश में भेंट स्वरूप बुके के बदले बुक का प्रचलन शुरू करने पर जोर

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। उत्तराखण्ड की बोलियों, लोक कथाओं, लोकगीतों एवं साहित्य के डिजिटलीकरण की दिशा में कार्य किये जाएं। इसके लिए ई–लाइब्रेरी बनाई जाए। लोक कथाओं पर आधारित संकलन बढ़ाने के साथ ही इन पर ऑडियो विजुअल भी बनाये जाएं। स्कूलों में सप्ताह में एक बार स्थानीय बोली भाषा पर भाषण, निबंध व अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए। उत्तराखण्ड भाषा एवं साहित्य का बड़े स्तर पर महोत्सव किया जाए, इसमें देशभर से साहित्यकारों को बुलाया जाए। उत्तराखण्ड की बोलियों का एक भाषाई मानचित्र बनाया जाए। यह बात मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सचिवालय में उत्तराखण्ड भाषा संस्थान की साधारण सभा एवं प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति बैठक के अध्यक्षता करते हुए कही। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से अपील की है कि भेंट स्वरूप बुके के बदले बुक के प्रचलन का राज्य में बढ़ावा दिया जाए।

भाषा मंत्री सुबोध उनियाल ने कहा कि पिछले तीन सालों में उत्तराखण्ड में भाषा संस्थान की और से अनेक नई पहल की गई है। भाषाओं के संरक्षण और संवर्द्धन के साथ ही स्थानीय बोलियों को बढ़ावा देने की दिशा में तेजी से प्रयास किये जा रहे हैं। भाषा की दिशा में लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा अनेक पुरस्कार दिये जा रहे हैं।

इस अवसर पर प्रमुख सचिव आर.के. सुधांशु, सचिव वी. षणमुगम, श्रीधर बाबू अदांकी, निदेशक भाषा स्वाति भदौरिया, अपर सचिव मनुज गोयल, कुलपति दून विश्वविद्यालय डॉ. सुरेखा डंगवाल, कुलपति संस्कृत विश्व. विद्यालय हरिद्वार प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री व सदस्यगण उपस्थित थे।

उत्तराखंड साहित्य गौरव सम्मान की राशि में हुआ इजाफा

देहरादून। बैठक में निर्णय लिया गया कि उत्तराखण्ड साहित्य गौरव सम्मान की राशि 5 लाख से बढ़ाकर 5 लाख 51 हजार की जायेगी। राज्य सरकार की और से दीर्घकालीन साहित्य सेवी सम्मान भी दिया जायेगा, जिसकी सम्मान राशि 5 लाख रूपये होगी। राजभाषा हिन्दी के प्रति युवा रचनाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए युवा कलमकार प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। इसमें दो आयु वर्ग में 18 से 24 और 25 से 35 के युवा रचनाकारों को शामिल किया जायेगा। राज्य के दूरस्थ स्थानों तक सचल पुस्तकालयों की व्यवस्था कराने के साथ ही पाठकों के लिए विभिन्न विषयों से संबंधित पुस्तकें व साहित्य उपलब्ध कराने के लिए बड़े प्रकाशकों का सहयोग लेने पर सहमति बनी। भाषा संस्थान लोक भाषाओं के प्रति बच्चों की रूचि बढ़ाने के लिए छोटे–छोटे वीडियो तैयार कर स्थानीय बोलियों का बढ़ावा देने की दिशा में कार्य करेगा।

पंडवाणी गायन 'बाकणा' को किया जाएगा संरक्षित

देहरादून। बैठक में निर्णय लिया गया कि जौनसार बावर क्षेत्र में पौराणिक काल से प्रचलित पंडवाणी गायन 'बाकणा' को संरक्षित करने के लिए इसका अभिलेखीकरण किया जायेगा। उत्तराखण्ड भाषा संस्थान की और से प्रख्यात नाट्यकार 'गोविन्द बल्लभ पंत' का समग्र साहित्य संकलन, उत्तराखण्ड के साहित्यकारों का 50 से 100 वर्ष पूर्व भारत की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित साहित्य का संकलन और उत्तराखण्ड की उच्च हिमालयी एवं जनजातीय भाषाओं के संरक्षण एवं अध्ययन के लिए शोध परियोजनों का संचालन किया जायेगा। राज्य में प्रकृति के बीच साहित्य सृजन, साहित्यकारों के मध्य गोष्ठी, चर्चा–परिचर्चा के लिए 02 साहित्य ग्राम बनाये जायेंगे।

कुशासन व कुनीतियों पर आधारित केंद्र में भाजपा के 11 साल: दसौनी

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 11 वर्षों के कार्यकाल को सेवा और सुशासन के रूप में मनाने को उत्तराखंड कांग्रेस की मुख्य प्रवक्ता गरिमा मेहरा दसौनी ने हास्यास्पद बताया। दसौनी ने कहा कि केंद्र सरकार का पिछला ग्यारह वर्षों का कार्यकाल कुशासन और कुनीतियों का काला लेखा–जोखा है। गरिमा ने कहा बीते 11 वर्षों को यदि एक वाक्य में समेटा जाए तो वह होगा 'जनता के साथ छल, लोकतंत्र पर प्रहार और देशहित के नाम पर निजी हितों का विस्तार।'

दसौनी ने कहा कि 2014 में बड़े–बड़े वादों और भारी जनसमर्थन के साथ सत्ता में आई भाजपा सरकार ने जनता को 'अच्छे दिन' का सपना दिखाया था। बीते एक दशक से अधिक समय में जो कुछ भी सामने आया, वह निराशाजनक, विभाजनकारी और विनाशकारी रहा। गरिमा ने कहा कि केंद्र सरकार के 11 साल का कार्यकाल सामाजिक सौहार्द पर चोट का रहा। देश में धार्मिक ध्रुवीकरण और अल्पसंख्यकों के खिलाफ बढ़ते हमले हुए, जिन्हें सत्ता की मौन सहमति प्राप्त होती रही। भाजपा सरकार में कोविड कुप्रबंधन का खामियाजा गरीब जनता को भुगतना पड़ा। महामारी की दूसरी लहर में हजारों जानें गईं, लेकिन सरकार ने जिम्मेदारी लेने के बजाय प्रचार को प्राथमिकता दी। किसानों और श्रमिकों की उपेक्षा की गई। तीन कृषि कानूनों ने किसानों को आंदोलित किया, पर सरकार ने उनकी आवाज को नजर. अंदाज किया जब तक यह आंदोलन 700 किसानो की जान नहीं लील गया।

ट्रक के नीचे घुसी बाइक, एक की मौत, तीन घायल

विकासनगर। सहसपुर थाना क्षेत्र में एक बड़ा सड़क हादसा हो गया, हादसे में बाइक सवार तीन लोग रॉन्ग साइड से फिसल कर ट्रक के नीचे घुस गये, जिससे तीनों युवक गंभीर रूप से घायल गो गये, जिनमें से एक की मौत हो गई है। देहरादून जिले के सहसपुर क्षेत्र कि लांघा रोड तिराहे के पास बाइक सवार तीन लोग रॉन्ग साइड से आने के कारण फिसल कर ट्रक के नीचे आ गए। घायलों की पहचान आशिक(25) निवासी सहसपुर, फरमान(24) फुरकत अली निवासी सहसपुर के रूप में हुई है, वहीं, मृतक की पहचान आजम (21) वर्ष निवासी सहसपुर के रूप में हुई है।

31 जुलाई तक बढ़ा पंचायतों में तैनात प्रशासकों का कार्यकाल

■ 1 जून को समाप्त हो गया था प्रशासकों का कार्यकाल ■ पंचायती राज सचिव चंद्रेश यादव ने जारी किए आदेश

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। उत्तराखण्ड में त्रिस्तरीय पंचायत में तैनात प्रशासकों का कार्यकाल एक बार फिर से बढ़ा दिया गया है। पंचायती राज विभाग ने 9 जून 2025 को आदेश जारी करते हुए पंचायत में तैनात प्रशासकों के कार्यकाल को 31 जुलाई तक के लिए बढ़ा दिया है।

उत्तराखंड के त्रिस्तरीय पंचायत में तैनात प्रशासकों का कार्यकाल पिछले महीने समाप्त हो गया था, मगर पंचायत में तैनात प्रशासकों का कार्यकाल नहीं बढ़ाया जा सका था, अब विभाग में आदेश जारी करते हुए पंचायत में तैनात प्रशासकों के कार्यकाल को 31 जुलाई तक के लिए बढ़ा दिया है। जारी किए गए आदेश के अनुसार, उत्तराखंड सरकार जुलाई महीने में पंचायत का चुनाव कराए जाने पर जोर दे रही है, ऐसे में नई पंचायत के गठन होने तक या फिर 31 जुलाई तक के लिए पंचायत का कार्यकाल बढ़ाया गया है। उल्लेखनीय है कि साल 2019 में हरिद्वार जिले को छोड़ बाकी प्रदेश के 12 जिलों में हुए त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के बाद पंचायत का गठन हुआ था, मगर साल 2024 में पंचायत का कार्यकाल समाप्त होने के बाद पंचायती राज विभाग ने पंचायतो को अगले 6 महीने के लिए प्रशासकों के हवाले कर दिया था। इस दौरान पंचायत चुनाव नहीं हो पाए और पंचायत में तैनात प्रशासकों का कार्यकाल भी समाप्त हो गया। ग्राम पंचायत में तैनात प्रशासकों का कार्यकाल 27 मई, क्षेत्र पंचायत में तैनात प्रशासकों का कार्यकाल 29 मई और जिला पंचायत में तैनात प्रशासकों का कार्यकाल 1 जून को समाप्त हो गया था।

बचपन से योग को बनाएं दिनचर्या का हिस्सा : रेखा

■ आगामी योग दिवस पर आंगनबाड़ी केंद्रों पर भी योग सीखेंगे बच्चे ■ खेल मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश किए जारी

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। विश्व योग दिवस 21 जून को इस साल आंगनबाड़ी केंद्रों के बच्चे भी योगासन सीखेंगे। योग दिवस के आयोजन को लेकर खेल मंत्री रेखा आर्या ने सोमवार को विधानसभा सभागार में आयोजित समीक्षा बैठक में अधिकारियों को निर्देश जारी किए।

बैठक के बाद खेल मंत्री रेखा आर्या ने कहा कि बचपन से ही बच्चों की दिनचर्या में योग को शामिल करना जरूरी है, इसके लिए सभी अभिभावकों को और समाज को जागरूक होना होगा। उन्होंने कहा कि योग दिवस से एक सप्ताह पहले ही आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों को उनके लिए उपयुक्त योगासन सिखाए जाएंगे। कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने बताया कि इस साल योग दिवस पर महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग, खेल विभाग और युवा कल्याण विभाग मिलकर एक आयोजन करने जा रहे हैं। इसमें आम लोगों के अलावा, स्पोर्ट्स कॉलेज के छात्र, शिशु सदनों के बच्चे, आंगनबाड़ी कार्यकत्रियां और उनके बच्चे शामिल होंगे। अलग–अलग आयु वर्ग के लोगों के लिए उपयोगी योगासन उन्हें प्रशिक्षित ट्रेनर द्वारा कराए जाएंगे। इसके अतिरिक्त बैठक में 23 जून को अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय आयोजनों की रूपरेखा की भी समीक्षा की गई खेल मंत्री रेखा आर्या ने बताया कि गौलापार के मानसखंड खेल परिसर में राज्य स्तरीय आयोजन की तैयारी की जा रही है। बैठक में विशेष प्रमुख खेल सचिव अमित सिन्हा, सचिव चंद्रेश कुमार, खेल निदेशक प्रशांत आर्य, उपनिदेशक शक्ति सिंह, स्पोर्ट्स कॉलेज के प्राचार्य राजेश मंमगाई आदि शामिल हुए।

3.20 करोड़ की ठगी करने वाले को एसटीएफ ने पश्चिम बंगाल से दबोचा

■ आरोपी के खाते में एक ही दिन में एक करोड़ रुपये से भी अधिक का हुआ था लेनदेन

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। होटल के अकाउंटेंट से 3.20 करोड़ रुपये ठगने के आरोपी साइबर ठग को एसटीएफ ने पश्चिम बंगाल से गिरफ्तार कर लिया है। एसटीएफ ने पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना के रहने वाले सूरज मौला नाम के इस आरोपी के पास से कई सिम और मोबाइल फोन बरामद हुए हैं। वहीं, आरोपी के खाते में एक ही दिन में एक करोड़ रुपये से भी अधिक का लेनदेन पाया गया है। एसटीएफ आरोपी के साथियों की तलाश कर रही है।

एसएसपी एसटीएफ नवनीत भुल्लर ने बताया कि गत मई में टिहरी गढ़वाल के रहने वाले व्यक्ति ने शिकायत की थी। उन्होंने बताया था कि उन्हें एक व्यक्ति ने खुद को कंपनी का एमडी बताते हुए कॉल किया था। फोन पर बताया गया था कि उसने एक नया नंबर लिया है। अब इसी नंबर को सुरक्षित कर लो। इसके बाद कहा गया कि एक नए प्रोजेक्ट में पैसा लगाना है। इसके लिए तत्काल 1.95 करोड़ रुपये के भुगतान को प्रोसेस करने के लिए कहा गया। पीड़ित ने उसकी बातों पर विश्वास करते हुए यह रकम श्याम ट्रेडिंग कंपनी के खाते में जमा करा दी। इसके बाद और रकम जमा करने के लिए कहा गया। इस पर उन्होंने सवा करोड़ रुपये और जमा करा दिए। कुल मिलाकर विभिन्न खातों में 3.20 करोड़ रुपये जमा करा दिए गए, मगर इसी बीच उन्हें पता चला कि एमडी ने कोई नंबर नहीं बदला है और न ही प्रबंधन ने किसी अन्य प्रोजेक्ट में पैसा लगाने की बात कही है। इस पर उन्हें ठगी का पता चला।

एग्री मित्रा महोत्सव से कृषि, नवाचार व स्थानीय उत्पादों को मिलेगा मंच : जोशी

■ एग्री मित्रा उत्तरांड महोत्सव की जोर–शोर से तैयारी ■ कृषि मंत्री ने की कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा ■ 14-15 जून को देहरादून में होगा एग्री मित्रा महोत्सव का भव्य आयोजन

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। प्रदेश के कृषि मंत्री गणेश जोशी ने सोमवार देहरादून स्थित कैंप कार्यालय में कृषि विभाग उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित किए जाने वाले ष्एग्री मित्रा उत्तराखण्ड 2025ष महोत्सव की तैयारियों की समीक्षा बैठक की।

बैठक के दौरान कृषि मंत्री जोशी ने महोत्सव की सभी व्यवस्थाओं को समयबद्ध एवं व्यवस्थित ढंग से पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कार्यक्रम स्थल पर शौचालय, पेयजल की उपलब्धता एवं साफ–सफाई की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए अधिकारियों को विशेष रूप से निर्देशित किया।

मंत्री गणेश जोशी ने बताया कि यह महोत्सव 14 और 15 जून 2025 को देहरादून के गढ़ीकैंट स्थित जसवंत ग्राउंड में आयोजित किया जाएगा। इसमें उत्तराखण्ड के कोने–कोने से आने वाले किसान, एफपीओ, कृषि स्टार्टअप्स, विश्व. विद्यालय, अनुसंधान संस्थान, कृषि वैज्ञानिक, सहकारी समितियाँ और स्वयं सहायता समूह कृषि विश्वविद्यालयों के छात्र छात्राएं सहित कई प्रदेशों के कृषि मंत्री भाग लेंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान और प्रदेश के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की उपस्थिति में किया जाएगा।

कृषि महोत्सव का प्रमुख आकर्षण स्थानीय उत्पादों की प्रदर्शनी, स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए जैविक व पारंपरिक उत्पादों की प्रदर्शनी, मोटे अनाज (मिलेट्स) पर केंद्रित विशेष चर्चा: पौष्टिकता, संभावनाएं और बाजार से जुड़ी जानकारियाँ वैज्ञानिक सत्र: कृषि वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों के साथ संवाद नवाचारों की प्रस्तुति: आधुनिक कृषि तकनीकों और इनोवेटिव मॉडल्स की झलक आदि। मंत्री जोशी ने कहा कि यह महोत्सव केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि उत्तराखण्ड की कृषि को आत्मनिर्भरता, नवाचार और समृद्धि की ओर ले जाने का प्रयास है। कृषि मंत्री ने कहा कि यह महोत्सव किसानों को नए विचारों, तकनीकों और नेटवर्किंग का बेहतर मंच प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड की जलवायु और भूगोल के अनुरूप खेती को कैसे और अधिक लाभकारी बनाया जाए, इस पर भी चर्चा की जाएगी। इस अवसर पर कृषि महा. निदेशक रणवीर सिंह चौहान, बाग. वानी मिशन निदेशक महेंद्र पाल, संयुक्त निदेशक डॉ रतन कुमार, मुख्य कृषि अधिकारी देहरादून देवेंद्र सिंह, दिनेश कुमार सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

प्रधान, बीडीसी व सभी अध्यक्ष सीट जीतेगी भाजपा : भट्ट

■ मोदी सरकार के शानदार 11 वर्षों पर देवभूमिवासियों की तरफ से दी बधाई ■ सभी जिला पंचायत अध्यक्ष समेत अधिकांश क्षेत्र पंचायत अध्यक्ष सीटों कमल खिलेगा

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। भाजपा ने पंचायत चुनावों में सभी प्रधान, बीडीसी सदस्य पद पर कार्यकर्ताओं को उतारने के लक्ष्य के साथ सभी अध्यक्ष पदों को जीतने का दावा किया है। इसके अतिरिक्त प्रदेशाध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट ने कांग्रेस में लंगड़े घोड़ों की तलाश पर तंज किया कि वहां अधिकांश लंगड़े घोड़े होने के चलते ही कांग्रेस की दुर्दशा हुई है, जो दौड़ने वाले थे वे सब भाजपा में आ गए और दो चार शेष बचे भी शीघ्र आ जाएंगे।

वहीं कांग्रेस के बेटी बचाओ अभियान पर पलटवार किया कि हमारी सरकार दोषियों को दंड दिलाने में अपने पराए का भेद नहीं करती, जबकि कांग्रेस सरकारों ने दोषियों को बचाया। पार्टी मुख्यालय में मीडिया से बातचीत करते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 11 सफल वर्ष पूरे होने पर प्रदेशवासियों की तरफ से बधाई दी। साथ ही कहा कि यूं तो प्रत्येक वर्ष अपने कामकाज और उपलब्धियों का रिपोर्ट रखने की नई परम्परा पर मोदी अमल करते आ रहे हैं। लेकिन 11 वर्षों के विशेष अवसर पर आयोजित राष्ट्रव्यापी अभियान की शुरुआत राज्य में कल मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की पत्रकार वार्ता के साथ हो जाएगी। 11,12 को जिला केंद्रों पर पत्रकार वार्ता श्रृंखला के बाद जनसभाओं, प्रदर्शनी, प्रबुद्ध सम्मेलन, विभिन्न प्रतियोगिताओं आदि विभिन्न कार्यक्रमों से पार्टी सरकार की उपलब्धियों को जन जन तक पहुंचाएगी। पंचायत चुनावों को लेकर प्रदेशाध्यक्ष ने स्पष्ट किया कि सरकार की तरह पार्टी संगठन भी पूर्णतया तैयार है। अब तक की जानकारी के अनुसार परिस्थितियां अनुकूल होने पर जुलाई माह में चुनाव हो सकते हैं।

अधिकांश लंगड़े घोड़े होने से ही कांग्रेस की दुर्दशा

इस दौरान कांग्रेस में लंगड़े घोड़े की चर्चा से संबंधित सवाल का जवाब देते हुए कटाक्ष किया कि वहां सभी घोड़ों के लंगड़े होने से ही कांग्रेस की दुर्दशा हुई है। जो घोड़े राजनीति में दौड़ने वाले थे वे भाजपा में आ गए और जो दो चार शेष होंगे वे भी 2027 तक पार्टी में आ जायेंगे। लिहाजा कांग्रेस नेता बेकार में आपसी सिरफुटव्वल न करे क्योंकि अगले विधानसभा चुनावों में भाजपा का प्रचंड बहुमत से जीतना तय है।

अब निष्पक्ष कठोर कार्यवाही होती है, कांग्रेस सरकार दोषियों को बचाती थी

देहरादून। कांग्रेस के बेटी बचाओ अभियान के सवाल पर पलटवार करते हुए महेंद्रभट्ट ने कहा कि, हमारी सरकार में सभी अपराध विशेषकर महिला अपराध में लिप्त मामलों में कठोर कार्यवाही की जाती है। कांग्रेसी सरकारों की तरह हम अपना या पराया, छोटा या बड़ा मानकर किसी को भी बचाने का काम नहीं करते हैं, सभी पर निष्पक्ष और अविलंब कार्रवाई की जाती है। झूठे आरोप लगाने वाली कांग्रेस का दौर भी जनता ने देखा है, जब मंत्री, मुख्यमंत्री, कांग्रेस पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि पर गंभीर महिला अपराधों के मामले सामने आए लेकिन सरकार द्वारा दबा दिए गए या ठीक पैरवी नहीं की गई।

अखिल भारतीय वन खेल प्रतियोगिता की मेजबानी में जुटा वन विभाग

■ राज्य में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं: उनियाल

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। उत्तराखण्ड वन विभाग अखिल भारतीय वन खेल प्रतियोगिता की मेजबानी की तैयारियों में जुट गया है। उत्तराखंड को इस बार 28वीं अखिल भारतीय वन खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित कराने का अवसर मिला है, जिसके लिए वन विभाग तैयारी में जुटा हुआ है।

इसी कडी में वन विभाग ने नव्या पांडे को सम्मानित किया है। जॉर्डन में जु–जित्सू खेल में गोल्ड और सिल्वर मेडल जीतकर आने वाली खिलाड़ी नव्या पांडे को सोमवार को वन मंत्री सुबोध उनियाल और प्रमुख वन संरक्षक हॉफ धनंजय मोहन ने मेडल पहना कर नवाजा। नव्या पांडे उत्तराखंड वन विभाग में वन दारोगा के पद पर काम कर रही हैं। नव्या ने जॉर्डन में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए देश को पदक दिलाए हैं, वहीं, एशियाई चौंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीतने वाली भारत की वो पहली महिला हैं। नव्या इससे पहले भी कई पदक जीत चुकी हैं और इसीलिए उन्हें पूर्व में आउट ऑफ टर्न प्रमोशन भी मिल चुका है। उत्तराखंड के वन मंत्री सुबोध उनियाल ने बताया कि राज्य में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है।

बजाज इंजीनियरिंग कौशल प्रशिक्षण (बेस्ट) बजाज ऑटो लिमिटेड की प्रमुख सीएसआर पहल।

युवाओं को सशक्त बनाना, उन्नत विनिर्माण में कौशल

इंजीनियरिंग और डिप्लोमा स्नातकों के लिए उद्योग से जुड़ा पाठ्यक्रम

हमें यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि यूपीईएस देहरादून ने बजाज ऑटो लिमिटेड के सहयोग से बेस्ट सेंटर (बजाज इंजीनियरिंग कौशल प्रशिक्षण) शुरू किया है – यह एक प्रमुख सीएसआर पहल है जो अगली पीढ़ी के इंजीनियरों और डिप्लोमा धारकों को उन्नत विनिर्माण और उद्योग 4.0 प्रौद्योगिकियों में अत्याधुनिक कौशल से लैस कर रही है।

इस पहल का मुख्य उद्देश्य कौशल अंतर को पाटना और निम्नलिखित विषयों में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करके भविष्य के लिए तैयार कार्यबल का निर्माण करना है:

- मेक्ट्रोनिक्स
- मोशन कंट्रोल और सेंसर तकनीक
- रोबोटिक्स और ऑटोमेशन
- स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग और इंडस्ट्री 4.0

16+ विश्व स्तरीय प्रयोगशालाओं और 140+ से अधिक उन्नत उपकरणों तक पहुँच के साथ, जिसमें AR/VR, IoT, AI/ML, ऑटोनॉमस मोबाइल रोबोट (AMR), और कंप्यूटर इंटीग्रेटेड मैन्युफैक्चरिंग (CIM) जैसी तकनीकें शामिल हैं - प्रशिक्षु कक्षा से परे वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों का अनुभव करते हैं।

प्रस्तावित कार्यक्रम:

- डिप्लोमा ट्रेनी इंजीनियर (DTE)- 4 महीने
- ग्रेजुएट ट्रेनी इंजीनियर (GTE) – 6 महीने

कौन आवेदन कर सकता है? इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल, आम्टोमोबाइल, इंस्ट्रूमेंटेशन, मेक्ट्रोनिक्स, या संबद्ध विषयों में अंतिम/पूर्व–अंतिम वर्ष के छात्र या स्नातक (न्यूनतम 50% कुल)।

UPES-BEST सेंटर को क्या खास बनाता है:-20+ उद्योग–संबंधित सॉफ्टवेयर टूल–अंत: विषय पाठ्यक्रम- छात्रवृत्ति सहायता- प्लेसमेंट सहायता–उद्योग–अकादमिक तालमेल

प्रवेश खुला:

पता: UPES देहरादून प्रश्नों के लिए: upesbest@upes.ac.in

+91-7617602727

ऋषिकेश पहुंची देवभूमि बद्री केदार श्री कार्तिक स्वामी एक्सप्रेस ट्रेन

■ भोजन परोसने के लिए ट्रेन में दो रेस्टोरेंट व आधुनिक उपकरणों से लैस रसोई यान ■ श्री कार्तिक स्वामी मंदिर, बद्रीनाथ धाम व केदारनाथ धाम के साथ ऋषिकेश भ्रमण का कार्यक्रम

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। राज्य के अल्पज्ञात गन्तवयों को देश के अन्य भागों से जोड़ने के लिए धामी सरकार नित नए प्रयास करती रहती है। इसी श्रृंखला में रुद्रप्रयाग स्थित श्री कार्तिक स्वामी मंदिर, जिसका वर्णन स्कन्द पुराण में भी किया गया है, के प्रचार को पर्यटन विभाग ने आईआरसीटीसी तथा भारतीय रेल के सहयोग से नागपुर से इटारसी, बीना, भोपाल, आगरा, मथुरा होते हुए एक विशेष पर्यटक ट्रेन का संच. ालन किया है। 218 श्रद्धालुओं के साथ नागपुर से 7 जून 2025 को प्रात: नौ बजे ट्रेन ने प्रस्थान किया और 8 जून को अपरान्ह अढ़ाई बजे योगनगरी ऋषिकेश पहुंची।

इस ट्रेन में तृतीय वाता, द्वितीय वाता तथा प्रथम वाता श्रेणी के शयन यान हैं। साथ ही यात्रियों के खान पान को दो रेस्टोरेंट भी है। यात्रियों की सुरक्षा को प्रत्येक कोच में एक सुरक्षाकर्मी भी तैनात है। श्रद्धालुओं को ऋषिकेश भ्रमण के साथ रविवार को सांयकालीन गंगा आरती का दर्शन कराया गया, सोमवार को सभी श्रद्धालु सड़क मार्ग से रुद्रप्रयाग के लिए रवाना हो गये। 10 जून से श्रद्धालुओं को तीन समूह में विभाजित किया जायेगा तथा प्रत्येक समूह श्री कार्तिक स्वामी मंदिर, बद्रीनाथ धाम तथा केदारनाथ धाम के दर्शन करेगा। ट्रेन 14 जून को रात्रि दस बजे ऋषिकेश से नागपुर के लिए प्रस्थान करेगी।

राज्य भर में फैले असंख्य प्राचीन धार्मिक स्थलों का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाएगा: महाराज

पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने विभाग की इस पहल की प्रशंसा करते हुए कहा की उत्तराखंड आदिकाल से ही आध्यात्म की भूमि रही है। राज्य सरकार का निरंतर प्रयास है कि राज्य भर में फैले असंख्य प्राचीन धार्मिक स्थलों का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाए जिस से भारत भर से आने वाले श्रद्धालु दर्शनलाभ ले सकें। महाराज ने यह भी बताया कि श्री कार्तिक स्वामी मंदिर उत्तर भारत का एकमात्र कार्तिक (मुरुगन) मंदिर है। भगवान शिव तथा माता पार्वति के पुत्र भगवान् कार्तिकेय को मुरुगन, स्कन्द, क्षणमुख, कुमारस्वामी आदि नामों से भी जाना जाता है तथा तमिल नाडु में श्री कार्तिकेय स्वामी कि मान्यता सर्वाधिक है। उत्तराखंड सरकार तमिलनाडु तथा अन्य दक्षिण भारतीय नागरिकों के साथ–साथ इन राज्यों के अप्रवासी भारतीयों को भी इस मंदिर में आने का निमंत्रण देती है।

एक नजर

पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसो. की बैठक सम्पन्न

काशीपुर। पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिशन काशीपुर शाखा की रेलवे स्कूल परिसर में सम्पन्न हुई मासिक बैठक में सचिव एसएस सिन्हा ने पेंशनरों की सभी प्रमुख मांगों के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि नेशनल इंक्रीमेंट का लाभ कुछ लोगों को मिल चुका है, कुछ को भी जल्द मिलेगा। इसी तरह एक्सीडेंट फ्री अलाउंस भी अधिकांश लोगों को मिल चुका है। मेडिकल लाभ हेतु उम्मीद कार्ड नया बनाए जाने और उससे मिलने वाले मेडिकल लाभ की भी जानकारी दी गई। इसके अलावा और भी कई महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई गई। शाखा अध्यक्ष एसपी गुप्ता, कोषाध्यक्ष राजीव पाल, संजय राय ने भी पेंशनरों को उनसे संबंधित कई महत्वपूर्ण जानकारी दीं। बैठक की अध्यक्षता संजय राय ने की। इस अवसर पर 6 पेंशनरों एसपी गुप्ता, फूल सिंह, कृष्ण पाल, जगत सिंह, फकीर चंद, केके शर्मा का जन्मदिन मनाते हुए उन्हें मिठाई खिलाकर माला पहनाकर तथा शाल ओढ़ाकर सम्मानित कर धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर सभी ने उन्हें बधाई दी। बैठक में मनोहर लाल, अमर सिंह, एके मिश्रा, मदनपाल, वीरेंद्र पाल, संजय राय, जय किशोर शर्मा, सुरेश कुमार, सुभाष घोषाल, लालता प्रसाद समेत करीब 50 सदस्य उपस्थित रहे।

न्यू चामुण्डा विहार में नशेड़ियों का जमावड़ा

काशीपुर। नीझड़ा रोड न्यू चामुण्डा विहार क्षेत्र पिछले काफी समय से नशेड़ी तत्वों के कब्जे में है। कच्ची शराब और नशीले कैप्सूल व इंजेक्शन का उपयोग करने वाले नशेड़ी तत्व अपने नशे की लत पूरी करने के लिए चोरियों की वारदात कै अंजाम देने से भी नहीं हिचक रहे। इससे क्षेत्र में असुरक्षा का माहौल है। मामले में पुलिस से कार्यवाही की गुहार लगाई गई है। नीझड़ा रोड न्यू चामुण्डा विहार क्षेत्र के व्यक्तियों ने बताया कि अक्सर यहां अनन्या होटल के समीप नशेड़ी तत्वों का जमावड़ा लगा रहता है, जो कि कच्ची शराब और नशीले कैप्सूल व इंजेक्शन का उपयोग करते हैं और चोरी की वारदात कर डालते हैं। एक-दो बार पकड़ लिये जाने पर भी इनके हौंसले पस्त नहीं हुए। आज सामान चोरी कर ले जाते इन नशेड़ियों के फोटो पुलिस को सौंपे गये हैं। यही स्थित राधेश्याम मेमोरियल हॉस्पिटल के डॉ. एके बंसल ने बताया कि उनके यहां दो-तीन बार चोरी हो गई है, लेकिन पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज नहीं की है।

वैश्य महासभा ने महापौर का जताया आभार

काशीपुर। आवास विकास स्थित एक निजी प्रतिष्ठान पर कुमायूं वैश्य महासभा के तत्वावधान में पदाधिकारियों एवं गणमान्य अतिथियों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में महासभा संरक्षक एसपी गुप्ता समेत पदाधिकारियों ने कहा कि वैश्य समाज की काफी समय से नगर में अग्रसेन चौक बनाए जाने को लेकर महापौर से मांग चली आ रही थी। ऐसे महाराजा अग्रसेन के नाम पर महापौर दीपक बाली तथा पार्षदगणों ने चीमा चौराहे का नाम महाराजा अग्रसेन चौक रखे जाने व उसे भव्य रूप दिए जाने को लेकर शासन को भेजे प्रस्ताव का वैश्य समाज ने समर्थन कर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी महापौर श्री बाली तथा समस्त पार्षदों का हृदय से आभार व्यक्त किया। बैठक की अध्यक्षता महासभा अध्यक्ष मनोहर गुप्ता ने की। बैठक में सुरेश चंद्र गुप्ता, शेष कुमार सितारा, केसी बंसल, ईश्वर चन्द्र गुप्ता, सुरेश गोयल, महेंद्र गुप्ता लोहिया, नवनीत विश्नोई, केके गुप्ता, अनिल अग्रवाल, राजेंद्र कुमार, वार्ष्णेय आरआर गुप्ता मौजूद थे।

निगम की नीलामी रद्द करने की मांग

काशीपुर। भारतीय किसान यूनियन (एकता) उगराहां ने प्रदर्शन कर तराई बीज विकास निगम की नीलामी को रद्द करने की मांग की। साथ ही, अपनी मांगों को लेकर मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन एसडीएम कार्यालय में एसडीएम के वरिष्ठ व्यक्तिगत सहायक को सौंपा। किसानों ने यूनियन के प्रदेश महासचिव अवतार सिंह के नेतृत्व में एसडीएम कार्यालय पहुंचकर तराई बीज विकास निगम की नीलामी को रद्द करने की मांग की। मुख्यमंत्री को भेजे गए ज्ञापन में किसानों ने आरोप लगाया कि पंतनगर स्थित तराई बीज विकास निगम, जो क्षेत्र के किसानों की एक प्रमुख बीज संस्था रही है और जिसने तराई क्षेत्र को एक नई पहचान दी है, आज अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रही है। निगम की संपत्तियों को नीलाम किए जाने की प्रकिया से किसानों में रोष है। वहीं, पंतनगर एयरपोर्ट विस्तार के कारण आने वाली इमारतों की नीलामी को तो जायज ठहराया जा सकता है, लेकिन हल्दी बीज विधायन संयंत्र और अन्य बीज विधायन इकाइयों की चालू हालत में मौजूद मशीनों को कबाड़ के भाव बेचना सफ़ तौर पर भ्रष्टाचार को दर्शाता है। ज्ञापन सौंपने वालों में टीका सिंह सैनी, निसार, मुख्तार सिंह व महेंद्र सिंह आदि थे।

झूठ-लूट की सरकार को करेंगे बेनकाब: रावत

अल्मोड़ा। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत सोमवार को सोमेश्वर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र में आयोजित तिरंगा सम्मान पद यात्रा में शिरकत की। पदयात्रा शहीद स्थल चनौदा और स्वतंत्रता संग्राम सैनानी शांति लाल त्रिवेदी की मूर्ति सहित दर्जनों स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धा सुमन अर्पित किए और सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। पूर्व सीएम रावत ने कहा कि देश में जिस प्रकार का माहौल बना हुआ है उसके खिलाफ कांग्रेस तिरंगे की आन बान बनाए रखने के लिए यात्रा निकाली जा रही है। प्रदेश सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ प्रदेश के हर मंत्रियों के विधानसभा क्षेत्र में जाकर जन जागरूकता अभियान चलाकर झूठ-लूट की सरकार कों बेनकाब करेंगे और प्रदेश की सरकार की नकामी कों जनता के सामने रखेंगे।

हमारी सरकार महिला सशक्तिकरण के लिए गंभीर

बग्वालीपोखर में लगे बहुउद्देशीय शिविर में कैबिनेट मंत्री डा. धन सिंह ने सुनीं समस्याएं

शाह टाइम्स संवाद्दाता

अल्मोड़ा। विकसित भारत का अमृत काल, सेवा सुशासन और गरीब कल्याण के 11 साल कार्यक्रम के तहत सोमवार को द्वाराहाट के बग्वालीपोखर में बहुउद्देशीय शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में कुल 72 शिकायतें विभिन्न विभागों से संबंधित पंजीकृत हुई। जिनका कैबिनेट मंत्री ने मौके पर ही अधिकारियों को उनकी समस्या का समाधान को निर्देशित किया। रामलीला मैदान में आयोजित में आयोजित शिविर को संबोधित करते कैबिनेट मंत्री रावत ने कहा कि हमारी सरकार गांव-गांव जाकर लोगों की समस्याओं का समाधान करने के लिए ख्रत संकल्पित है और लोगों का विकास करना भी हमारा ध्येय है। कहा कि मुख्यमंत्री धामी के नेतृत्व में उत्तराखंड राज्य श्रेष्ठ राज्य बनने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। उत्तराखंड

में लागू हुआ सशक्त भू-कानून, समान नागरिक संहिता राज्य की प्रगति के सशक्त स्तंभ बन गए हैं।

पलायन की समस्या के समाधान के लिए भी वर्तमान सरकार लगातार कार्य कर रही है। इस दिशा में सरकार ने कई अहम फैसले लिए हैं। कहा कि हमारी सरकार महिला सशक्तिकरण को लेकर संवेदनशील है और महिला उत्थान के लिए कार्य कर रही है। उन्होंने जनता को विश्वास दिलाया कि वे जो भी समस्याएं यहां लेकर आए हैं, उन पर कार्रवाई जरूर होगी। किसी को भी निराश नहीं होना पड़ेगा।

इसके लिए उन्होंने उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिए कि यहां आई समस्याओं को गंभीरता से लिया जाए। शिविर में कैबिनेट मंत्री ने ग्राम्य विकास एवं हिमोत्थान योजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह की 32 महिलाओं को 15 लाख रुपये से अधिक के चेक वितरित किए। महिलाओं को यह धनराशि उन्हें रोजगार स्थापित करने के लिए दी गई है। जबकि पांच दिव्यांग व्यक्तियों को सहायक उपकरण, पांच महिलाओं को महालक्ष्मी किट का वितरण भी वितरित किए गए। वहीं, 12 व्यक्तियों को विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। शिविर में कुल 72 शिकायतें विभिन्न विभागों से संबंधित पंजीकृत हुई। कई लोगों ने मौखिक रूप से अपनी समस्याओं से कैबिनेट मंत्री को अवगत कराया। कैबिनेट मंत्री ने एक-एक फरियादियों की समस्याएं सुनी और मौके पर ही उपस्थित अधिकारियों को उनकी समस्या का समाधान करने को निर्देशित किया। इनमें से अधिकतर समस्याओं का निस्तारण कैबिनेट मंत्री ने मौके पर ही कराया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि आपसी समन्वय की कमी नहीं होनी चाहिए। आपसी समन्वय के साथ लोगों की समस्याओं को निस्तारित करें। विभागीय स्टालों से प्रत्यक्ष रूप से 182 लोगों को लाभान्वित किया गया। जिसमें स्वास्थ्य विभाग की ओर से 111 व्यक्तियों का हेल्थ चेकअप के साथ ही दवाएं दी गई। यहां डीएम आलोक कुमार पांडेय, एसएसपी देवेंद्र पींचा, भाजपा जिलाध्यक्ष रानीखेत घनश्याम भट्ट, पूर्व विधायक महेश नेगी, पलायन आयोग सदस्य अनिल शाही, एसडीएम द्वाराहाट सुनील कुमार राज, संजू मठपाल, खंड विकास अधिकारी, तहसीलदार समेत अन्य जिला स्तरीय अधिकारी, जनप्रतिनिधि और क्षेत्रीय जनता मौजूद रही।

वैदिक संगोष्ठी का आयोजन

शाह टाइम्स संवाद्दाता

अल्मोड़ा। नगर के डोलीडाना मंदिर परिसर में सोमवार को वैदिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस दौरान लोगों को योग के विभिन्न आसनों का अभ्यास कराया गया। साथ ही वेद, पुराण और नदी सभ्यता पर केंद्रित संवाद के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा की अमूल्य धरोहरों की जानकारी दी गई। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि रविंद्र पांडे ने कहा कि वेद विज्ञान, संस्कृति और जीवन मूल्यों की आधारशिला हैं। इनसे जुड़ना हमारी जड़ों से जुड़ना है। योग शिक्षक लल्लन कुमार सिंह ने पुराणों में निहित नीति और भक्ति के समन्वय को संस्कृति का जीवंत स्रोत बताया। डा. गिरीश सिंह अधिकारी ने वेद-पुराणों को आत्मसात करने की प्रेरणा दी। रजनीश जोशी, रोबिन हिमानी, हेमलता अवस्थी, नेहा आर्य, गीतांशी, पंकज राठौर, अभय, आशीष, अनुराधा धामी, कविता, अंजलि, किरन, शालिनी, गीतांजलि आदि मौजूद रहे।

सांड के हमले में घायल की मौत

शाह टाइम्स संवाद्दाता

काशीपुर। सांड के हमले में घायल एक व्यक्ति की दिल्ली ले जाते समय रास्ते में मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है। कुंडेश्वरी निवासी 52 वर्षीय हरेंद्र कुमार निशाद पुत्र सुंदर लाल निशाद 6 जून की सुबह करीब सात बजे गाय को चारा डाल रहे थे। इस दौरान अचानक सांड़ ने उन पर हमला कर दिया। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। परिजनों ने उन्हें सरकारी अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर हल्द्वानी रेफर कर दिया। वहां से भी चिकित्सकों ने रेुर कर दिया। परिजन उन्हें दिल्ली लेकर जा रहे थे कि मुरादाबाद के पास उन्होंने दम तोड़ दिया। रविवार को पुलिस ने पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया। ग्रामीणों ने बताया कि हरेंद्र बाजपुर रोड स्थित एक कंपनी में काम करते थे। वह तीन भाइयों में सबसे बड़े थे। उन्होंने अपने पीछे पिता, माता, पत्नी और दो बेटियों को रोते बिलखते छोड़ा है। परिवार में कमाने वाले वह अकेले थे। ग्रामीणों ने बताया कि प्रशासन और संबंधित विभाग की निष्क्रियता के चलते आए दिन सांड़ लोगों पर हमला कर रहे हैं। इन्हें पकड़वाने के लिए कोई व्यवस्था नहीं की जा रही है। वह फसलों को भी भारी नुकसान पहुंचा रहे हैं। इनके डर से लोगों ने मॉर्निंगवॉक करना भी छोड़ दिया है। अब तक सांड़ चंद्र सिंह रावत, महेंद्र सिंह कुंवर, परमानंद देवली, कन्हैया लाल, विजेंद्र आदि पर हमला कर उन्हें घायल कर चुके हैं। इसके अलावा गोपीपुरा चांदपुर कॉलोनी में भी भागवती, प्रभुनाथ समेत कई लोगों पर हमला कर चुके हैं। इन्हें पकड़वाने के लिए ग्रामीण पुलिस, प्रशासन, वन विभाग के चक्कर काटते रहे, लेकिन कोई समाधान नहीं निकल सका।

ईएनटी, हड्डी रोग के सर्वाधिक मरीज पहुंचे

शाह टाइम्स संवाद्दाता

अल्मोड़ा। ईद और रविवार के अवकाश के बाद दो दिन बाद सोमवार को तीसरे दिन अस्पताल खुले। इस दौरान अस्पताल खुलते ही मरीजों की भीड़ उमड़ पड़ी। अकेले जिला अस्पताल में ही ओपीडी साढ़े सात सौ के पार चली गई। जिला अस्पताल में जहां अन्य दिनों साढ़े पांच सौ से छह सौ के करीब ओपीडी हो रही थी। सोमवार को 770 से भी अधिक मरीज इलाज को पहुंचे। ज्यादा मरीजों के आने से उन्हें इलाज के लिए काफी देर तक इंतजार करना पड़ा। डॉक्टरों के कक्ष के बाहर मरीजों की लाइन लगी रही। अस्पताल के मुताबिक नाक, कान, गला, हड्डी रोग, नेत्र रोग आदि के मरीज भी काफी संख्या में पहुंचे। इसके अलावा अल्ट्रासाउंड, एक्सरे, रक्त आदि जांचों के लिए भी मरीजों की लंबी लाइन लगी रही।

पार्टनर पर करोड़ों के गबन का आरोप

शाह टाइम्स संवाद्दाता

काशीपुर। पार्टनरशिप में स्टोन क्रेशर लगाने वाले तीन पार्टनरों ने एक पार्टनर पर करोड़ों रूपये गबन का आरोप लगाते हुए गत सायं एक प्रेसवार्ता कर बताया कि सन्

2016 में कुंडेश्वरी क्षेत्र में पांच पार्टनरों द्वारा स्टोन क्रशर लगाया गया, जिसमें अनूप अग्रवाल नामक व्यक्ति 55 प्रतिशत का पार्टनर बना था, जबकि जिस जमीन पर मुरलीवाला वाला नामक स्टोन क्रेशर लगाया गया था उसके स्वामी गुरपेज सिंह, गुरविंदर सिंह, बलविंदर सिंह राजू, लखविंदर सिंह, 45 प्रतिशत के पार्टनर बनाए गए। कुछ समय तक तो पार्टनरशिप ठीक-ठाक चली। उसके बाद जब अनूप अग्रवाल से चारों लोगों ने कुछ वर्षों बाद स्टोन क्रेशर के बाबत हिसाब किताब करने की बात कही तो वह टाल मटोली करने लगा, जिसकी शिकायत चारों पार्टनरों द्वारा तंग आकर पुलिस के अधिकारियों से भी की गई, लेकिन चारों पार्टनरों का कहना है कि पुलिस ने उनकी एक न सुनी। उन्होंने यह भी बताया कि अनूप अग्रवाल ने कहा कि हमारी ऊपर तक पहुंच है, तुम हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। उन्होंने कहा है कि गदरपुर के विधायक पूर्व शिक्षा मंत्री अरविंद पांडे उनके मामले में मदद कर रहे हैं, जबकि वह एक जनप्रतिनिधि हैं उनको सबकी की बात माननी चाहिए और सही का साथ देते हुए दूध का दूध पानी का पानी एक दूसरे को बिठाकर करना चाहिए। बताया कि उनको दिन प्रतिदिन धमकियां मिल रही हैं। उनका 33 से 40 करोड़ रूपया अनूप अग्रवाल डकार गया और अब बिजली विभाग, बैंक कर्मी उसको परेशान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस बार प्रशासन ने उनकी बात नहीं मानी तो वह आत्मदाह जैसी घटना को भी अंजाम दे सकते हैं। जिसकी पूर्ण जिम्मेदारी शासन प्रशासन की होगी।

पंतनगर विश्वविद्यालय ने किए दो अहम एमओयू पर हस्ताक्षर

शाह टाइम्स संवाद्दाता

पंतनगर। गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय ने आज दो महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। पहला एमओयू उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के साथ हुआ। इस समझौते के तहत दोनों संस्थान विभिन्न कार्यक्रमों जैसे ई-कंटेंट का आदान-प्रदान, शोध और प्रसार कार्यक्रमों को बढ़ावा देने, क्षमता विकास, कार्यशालाओं और संगोष्ठियों के आयोजन सहित अन्य पहलुओं पर सहयोग करेंगे। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति डा. ओपीएस नेगी और पंतनगर विश्व.

विद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए। डा. नेगी ने इस एमओयू की महत्ता पर बल दिया और बताया कि एआई के माध्यम से किसानों की आमदनी बढ़ाने के प्रयास किए जाएंगे। डा. चौहान ने किसानों तक नई तकनीकों को पहुंचाने की आवश्यकता पर जोर दिया। दूसरा एमओयू नेक्स्टिक्रॉन टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु के साथ हुआ, जिसका उद्देश्य पंतनगर विश्वविद्यालय को सेमीकंडक्टर डिजाइन के लिए एक प्रमुख प्रशिक्षण केंद्र बनाना है। इस समझौते के तहत छात्रों को उद्योग-ग्रेड ईडीए टूल्स और ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप का अवसर मिलेगा, जिससे उन्हें सेमीकंडक्टर डिज़ाइन में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होगा। इस सहयोग से उत्तराखंड को हिमालय की सिलिकॉन वैली के रूप में स्थापित करने के प्रयासों में तेजी आएगी। समारोह में पंतनगर विश्वविद्यालय के शोध निदेशक डा. एएस नैन ने सभी का स्वागत किया और समझौते के मुख्य प्रावधानों की जानकारी दी।

आजाद हिंद फौज के सेनानायक पूरन सिंह कोरंगा की पत्नी का निधन

शाह टाइम्स संवाद्दाता

शांतिपुरी। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी गांव जवाहर नगर निवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं आजाद हिंद फौज के सेनानायक रहे पूरन सिंह कोरंगा की पत्नी वीरांगना 102 वर्षीय आनुली देवी कोरंगा का सोमवार प्रात: 7 बजे निधन हो गया है। वह पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहीं थी।

उनका अंतिम करीब 12 बजे रानीबाग स्थित चित्रशिला घाट पर किया। जहां उनकी चिता को पुत्रगण जसपाल सिंह कोरंगा, प्रताप सिंह कोरंगा, धन सिंह कोरंगा व भोपाल सिंह कोरंगा ने संयुक्त रूप से मुखाग्नि दी। इससे पुर्व सरकार व जिला प्रशासन की ओर से तहसीलदार ग्रीश चंद्र त्रिपाठी ने उनके पार्थिव शरीर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। उनके निधन पर क्षेत्रीय विधायक तिलक राज बेहड़, जिलापंचायत सदस्य दीपा प्रेम आर्या, प्रधान दीपा ललित काण्डपाल, प्रदेश कांग्रेस सचिव विनोद कोरंगा, मोहन चंद्र पाण्डे, पूर्व दर्जा राज्यमंत्री डा. गणेश उपाध्याय, उत्तराखण्ड राज्य आंदोलनकारी ललित काण्डपाल व सैनिक संगठन अध्यक्ष दिगम्बर प्रसाद जोशी ने शोक श्रद्धांजलि दी है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

शाह टाइम्स संवाद्दाता

पंतनगर। पंतनगर विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ। इस कार्यक्रम का विषय प्रभावी शोध के लिए क्षमता विकास था, जिसे आसीएआर के एससी-एसपी अंतर्गत आयोजित किया गया था।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति डा. ओम प्रकाश सिंह नेगी और विशेष अतिथि पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय पुस्तकालय सभागार का नामकरण पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष श्री रामतीर्थ के नाम पर रामतीर्थ सभागार किया गया। कार्यक्रम में 30

परास्नातक और पीएचडी छात्रों ने भाग लिया, जबकि विभिन्न संस्थानों के विशेषज्ञों ने शोध के प्रभाव बढ़ाने से संबंधित 15 व्याख्यान दिए। कार्यक्रम में कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने श्री रामतीर्थ के योगदान को याद करते हुए उनका आभार व्यक्त किया और भविष्य में ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया। समापन समारोह में छात्रों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए और डा. ओम प्रकाश सिंह नेगी ने शोध पत्रों के लिए ओपन एक्सेस के महत्व पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में डा. दीपिका विनय, डा. पंकज सिंह, हेमा हल्दुआ और अन्य प्रमुख लोग भी उपस्थित थे।

योग दिवस उत्साह के साथ मनाया जाएगा

शाह टाइम्स संवाद्दाता

बागेश्वर। आगामी 21 जून को 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जनपद में बड़े उत्साह और भव्यता के साथ मनाया जाएगा। इस वर्ष की थीम योगा फॉर वन अर्थ वन हेल्थ है, जो स्वास्थ्य के प्रति वैश्विक जागरूकता बढ़ाने पर केंद्रित है। यह दिवस विश्व भर में एक भव्य उत्सव के रूप में मनाया जाता है। जिलाधिकारी आशीष भटगांई के निर्देशानुसार जनपद में आयुष एवं आयुष शिक्षा विभाग द्वारा इस अवसर पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे है। जिलाधिकारी ने लोगों से अपनी दैनिक दिनचर्या में योग के महत्व को समझने का आग्रह किया। उन्होंने कहा योग के महत्व को समझें और स्वस्थ रहें। उन्होंने कहा कि इस वर्ष योग दिवस का आयोजन वृहद स्तर पर होगा। शहरित योगश की थीम पर भी अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जो पर्यावरण और स्वास्थ्य के बीच संबंध को उजागर करेंगे। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन योग शिविर भी आयोजित किए जा रहे हैं, ताकि अधिक से अधिक लोग इन गतिविधियों में भाग ले सकें। उन्होंने बताया कि जनपद, ब्लॉक और ग्राम स्तर पर भी योग शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों के साथ-साथ, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए मैराथन और आयुष मेलों का भी आयोजन किया जाएगा। जिलाधिकारी ने जनपद वासियों से इन शिविरों का अधिक से अधिक लाभ उठाने और निरोगी रहने के लिए योग को अपनी दिनचर्या में अपनाने की बात कही है।

लिंक मोटरमार्ग का शुभारम्भ

शाह टाइम्स संवाद्दाता

बागेश्वर। कांडा के धपोलसरा रिखाड़ी लिंक मोटर मार्ग का विधायक गढ़िया ने विभिवत रिबन काट कर शुभारंभ करवाया। उन्होंने कहा कि सड़क का मिलान होने के बाद लोगों को लाभ मिलेगा। लंबे समय से धपोलसरा रिखाड़ी लिंक मोटर मार्ग की मांग ग्रामीणों द्वारा की जा रही थी।

लंबे समय से लंबित मोटर मार्ग को बनाए जाने के लिए ग्रामीणों ने वर्तमान विधायक सुरेश गढ़िया को ज्ञापन दिया। विधायक ने ग्रामीणों की समस्या को संज्ञान में लेते हुए सीएम पुष्कर धामी व मंत्री सतपाल महाराज से चर्चा कर सड़क के लिए धनराशि आवंटित करने की पहल की गई। विधायक गढ़िया के प्रयासों के बाद दो किमी मोटर मार्ग के लिए 60 लाख

की धनराशि आवंटित की गई है। जिससे जलस्तर मार्ग का निर्माण कार्य किया जाएगा। इस अवसर पर विधायक गढ़िया ने कहा कि वर्तमान में सीएम धामी के नेतृत्व वाली सरकार गांव के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाने के लिए प्रयास कर रही है। ग्रामीणों ने सीएम पुष्कर धामी, मंत्री सतपाल महाराज, विधायक सुरेश गढ़िया का आभार जताया है। इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष प्रभा गढ़िया, मंडल अध्यक्ष दरपान गैड़ा, हीरा सिंह कर्मयाल, सुंदर गढ़िय, आनंद धपोला, भगवान भंडारी, सविता नगरकोटी, नंदा बल्लभ तिवारी, आनंद बल्लभ तिवाड़ी सहित अन्य ग्रामीण मौजूद थे।

कीटनाशक पीने से बिड़ी हालत

बागेश्वर। नेपाली मजदूर ने घरेलू कारणों के चलते कीटनाशक गटक लिया। जिसके बाद उसकी तबीयत बिगड़ने लगी। परिजन उसे तत्काल सीएचसी बैजनाथ लाए। जहां से चिकित्सकों ने गंभीर अवस्था में उसे हायर सेंटर बागेश्वर रेफर किया। यहां उसका उपचार चल रहा है। बता दें कि मूल रूप से नेपाल, हाल ग्वालदम निवासी 34 वर्षीय प्रेम बहादुर ने घर में चालबाजी कलह के कारण जहरीला पदार्थ गटक लिया। परिजनों ने उसे उल्टी करता देख तत्काल बैजनाथ अस्पताल लाए। जहां पता चला उसने जहरीला पदार्थ गटका है। उसकेबाद परिजन उसे लेकर जिला अस्पताल पहुंचे। यहां फिजिशियन डा. प्रीति यादव ने उसका प्रथमिक उपचार किया। जिसकेबाद उसे वार्ड में भर्ती किया गया है। उन्होंने बताया कहा कि घायल की पहले से अब स्वास्थ्य में सुधार है।

भाजपा सरकार का पुतला फूंका

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। जिला महिला कांग्रेस कमेटी की जिलाध्यक्ष खष्टी बिष्ट की अध्यक्षता में भीमताल महिला नगर कांग्रेस अध्यक्ष हेमा दुमका के नेतृत्व में भीमताल शहर के मिनी स्टेडियम चौराहे पर सोमवार को भाजपा नेत्री अनामिका शर्मा द्वारा अपनी 13 साल की मासूम बच्ची के साथ दुष्कर्म के खिलाफ भाजपा सरकार का पुतला दहन किया गया जिसमें महिलाओं ने मामले की सीबीआई जांच की मांग की। पुतला दहन से पूर्व हुई सभा में जिलाध्यक्ष खष्टी बिष्ट ने कहा कि देवभूमि उत्तराखंड को शर्मसार करने वाली इस भाजपा नेत्री के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो, हरिद्वार की अनामिका शर्मा के कॉल डिटेल्स की फॉरेंसिक जांच हो और उसकी रिपोर्ट

सार्वजनिक करें साथ ही इस कुकृत्य में शामिल सभी दोषियों का नाम उजागर हो और उन्हें कठोर से कठोर सजा मिले। कहा कि जिसने सभी माताओं को शर्मशार किया है। कहा कि हरिद्वार की 13 वर्षीय नाबालिग बेटी को इंसाफ मिले। इस दौरान पालिकाध्यक्ष सीमा टम्टा, पूर्व पालिकाध्यक्ष दीपक चनौतिया, नगर अध्यक्ष डीके डालाकोटी, आशा आर्या, सुजान सिंह रजवार, दीपू मेहरा, खीम राम, शुभम नैनवाल, निखिल रावत, विनोद कुमार, प्रकाश कपिल, देवेंद्र सिंह, सरिता आर्या, सुनीता शाही तथा धनी दुमका, गीता तथा सभासद बिमला, हेमा, गीता देवी व मंजू सहित अनेकों महिलाएं उपस्थित थी।

नाला निर्माण में लापरवाही का आरोप

शाह टाइम्स संवाद्दाता

अल्मोड़ा। अल्मोड़ा नगर क्षेत्र में ड्रेनेज सिस्टम को बन रहे नाला निर्माण में घोर लापरवाही बरतने का आरोप लगाया है। सोमवार को इंद्रा कॉलोनी वार्ड वासियों ने अधिशासी अभियंता सिंचाई विभाग को ज्ञापन सौंप सवाल उठाए। ज्ञापन में कहा कि कार्यदायी संस्था ने स्टेडियम से जीवन ज्योति नाले जिसका निर्माण कार्य बॉन्ड की शर्तानुसार कार्य प्रारंभ होने की तिथि से पूर्ण होने की तिथि तक

पूरा नहीं किया गया। आरोप लगाए कि ठेकेदार के द्वारा उपरोक्त नाले का कोई कार्य नहीं किया गया था। बल्कि उपरोक्त नाले में ठेकेदार के द्वारा छूवा तक नहीं गया था। इन सबके बावजूद ठेकेदार को दो बार कार्य विस्तार दे दिया गया। चेतावनी दी कि यदि 15 दिन में इस नाले का निर्माण नहीं होने पर अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन को बाध्य होंगे। ज्ञापन सौंपने वालों में विनय किरौला, पार्षद कमला किरौला, गीता बिष्ट, मोहन सिंह, नरेंद्र बघरी, जीवन चंद्र तिवारी, मोहित साह, आनंद सिंह बिष्ट, मोहन सिंह गुसाई, पीएस मटियानी, प्रकाश बिष्ट, लक्ष्मण सिंह लटवाल, बिशन सिंह बिष्ट, सुजीत टम्टा, अमित चौधरी रहे।

पंतनगर विश्वविद्यालय में धान रोपाई का शुभारंभ

पंतनगर। पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने सुबह विश्वविद्यालय के बेनी फार्म पर धान की रोपाई का विधिवत शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि मानसून के पहले आगमन की संभावना के कारण इस वर्ष धान रोपाई जल्दी शुरू की गई है। उन्होंने बताया कि हर वर्ष विश्वविद्यालय फार्म में धान और गेहूं का उत्पादन 20-25 प्रतिशत बढ़ रहा है, और यह दोनों फसलें देश की प्रमुख खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। कुलपति ने किसानों के लाभ के लिए विश्वविद्यालय द्वारा विकसित नई किस्मों और तकनीकों को साझा करने का उल्लेख किया। उन्होंने फार्म के महाप्रबंधक डा. जयंत सिंह और उनकी टीम की मेहनत की सराहना की।

NAME CHANGE

I **MOHD REHAN** have changed my name from **MOHAMMAD REHAN** to **MOHD REHAN** hence forth I shall be known as **MOHD REHAN** S/o. MOHD RAISE AZAM R/o. Laxmipur Patti, Kashipur, Udham Singh Nagar, UK

NAME CHANGE

I **MOHD RAISE AZAM** have changed my name from **MOHAMMAD RAISE AZAM** to **MOHD RAISE AZAM** hence forth I shall be known as **MOHD RAISE AZAM** S/o. MOHAMMAD IDRIS R/o. Moh. Laxmipur Patti Kashipur, Udham Singh Nagar, UK

एसएसपी ने जांच के आदेश दिए

जाम में फंसी एंबुलेंस में मरीज की मौत का मामला

पुलिस की प्रारंभिक जांच में नहीं हुई जाम में फंस कर मौत होने की पुष्टि

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। कैंची धाम क्षेत्र में जाम में फंसकर मरीज की मौत के मामले को एसएसपी पीएन मीणा ने गंभीरता से लेते हुए एसपी क्राइम डा. जगदीश चंद्र को जांच सौंप दी है। जिसके बाद मामले की विस्तृत जांच शुरू कर दी गई है, हालांकि पुलिस की प्रारंभिक जांच में जाम में फंसने से मौत होने की पुष्टि नहीं हुई है। एसएसपी पीएन मीणा ने प्रेस को जारी एक बयान में बताया कि समाचार पत्रों के माध्यम से बीते रविवार, 8 जून का मामला है। इस प्रकरण में यह कहा गया था कि एक एंबुलेंस मरीज को लेकर हल्द्वानी जा रही थी। मरीज को तत्काल उपचार की जरूरत थी, लेकिन एंबुलेंस कैंची धाम में लगे जाम में फंस गई।

जाम की वजह से एंबुलेंस तय समय पर मरीज को लेकर अस्पताल नहीं पहुंच सकी और मरीज की मौत हो गई। एसएसपी पीएन मीणा ने बताया कि इस मामले को गंभीरता से लिया गया और इसकी जांच शुरू करा दी गई है। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि एंबुलेंस शाम लगभग साढ़े 6 बजे खैरना से रवाना हुई। लगभग 8 बजे के एंबुलेंस भीमताल अस्पताल पहुंची। यहां मरीज को लगभग 40 मिनट तक उपचार दिया गया। चिकित्सकों ने मरीज को उच्च चिकित्सा केंद्र रेफर किया। भीमताल से निकली एंबुलेंस लगभग 55 मिनट में हल्द्वानी स्थित निजी अस्पताल पहुंच गई। एसएसपी ने बताया कि प्रारंभिक जांच में यह स्पष्ट हुआ है कि एंबुलेंस के किसी स्थान पर विशेष रूप से जाम में फंसने या मरीज के उपचार में विलंब होने के ठोस साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए हैं। फिर भी मामले की गंभीरता को देखते हुए एक विस्तृत जांच की जा रही है। जिसमें एंबुलेंस चालक, खैरना व भीमताल अस्पताल के चिकित्साकर्मी और मौके पर ड्यूटी में तैनात ट्रैफिक कर्मचारियों के बयान दर्ज किए जा रहे हैं। विस्तृत रिपोर्ट जांच उपरांत प्रस्तुत की जाएगी। इसके साथ ही एसएसपी पीएन मीणा ने आमजन से अपील करते हुए कहा कि किसी भी प्रकार की भ्रामक सूचना से बचें।

सांप के डसने से महिला की मौत

हल्द्वानी। घर के बाहर आंगन में लगी पानी की मोटर चलाने गई एक महिला को अचानक सांप ने काट लिया। आनन फानन में परिजनों द्वारा उसे उपचार के लिए सुशीला तिवारी लाया गया। जहां उसकी उपचार के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया। जानकारी के अनुसार देवलचौड़ ग्राम घुडदौड़ा निवासी (65) मुन्नी देवी पत्नी चंदन सिंह बिष्ट बीते रविवार की शाम पांच बजे घर के आंगन में पानी की मोटर चलाने के लिए गई थी। बताया जा रहा कि तभी महिला का पैर सांप पर पड़ गया और इसी बीच सांप ने महिला को डस लिया। आनन-फानन में महिला को सुशीला तिवारी अस्पताल लाया गया। जहां पर देर रात महिला ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया। इधर मृतका के बेटे हेमंत बिष्ट ने बताया कि मामले की सूचना वन विभाग को दी है। वन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर मुआवजा राशि देने की कार्रवाई की जाएगी।

ट्रेन में महिला के गले से उड़ाया मंगलसूत्र

हल्द्वानी। बीते पांच जून को एक बार फिर शातिर चोरों ने ट्रेन में एक महिला के गले से मंगलसूत्र लूटा और फरार हो गए। महिला की तहरीर के आधार पर जीआरपी काठगोदाम पुलिस ने मुकदाम दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार मूलरूप से हैदराबाद तेलंगाना निवासी वाई कामेश्वरी ने जीआरपी पुलिस को सौंपी तहरीर में कहा कि वह काशीपुर में रहने वाले रिश्तेदार के घर गई थी। पांच जून को वह अपने परिवार के साथ काशीपुर से मुरादाबाद जाने को ट्रेन में सवार हुई थी। आरोप है कि काशीपुर स्टेशन पर कोच में चढ़ते समय उनके सोने का मंगलसूत्र लूट लिया गया। इधर जीआरपी काठगोदाम थानाध्यक्ष नरेश कोहली ने बताया कि महिला की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर सीसीटीवी फुटेजों को खंगाला जा रहा है।

विधायक कमिश्नर के पास लेकर पहुंचे दमुवाढूंगा का मुद्दा

प्रशासन की कार्यवाही को लेकर जताई आपत्ति

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। दमुवाढूँगा क्षेत्र से जुड़ी गंभीर समस्याओं को लेकर सोमवार को शहर विधायक सुमित हृदयेश ने कुमाऊं आयुक्त दीपक रावत से मुलाकात करते हुए एक ज्ञापन प्रेषित किया। विधायक सुमित हृदयेश द्वारा कुमाऊं आयुक्त दीपक रावत को सौंपे गए ज्ञापन में कहा कि वर्ष 2016 में दमुवाढूँगा को बंदोबस्ती राजस्व ग्राम घोषित किया गया था और शासनादेश के तहत यहां पारंपरिक रूप से निवास कर रहे नागरिकों को भूमिधर अधिकार दिए जाने थे। प्रशासन द्वारा उन्हीं नागरिकों की भूमि को अवैध घोषित किया जा रहा है और उन्हें डराने, धमकाने और बेदखल करने की कोशिश की जा रही है। विधायक ने इसे अनुचित, अवैधानिक और मानवीय दृष्टिकोण से निंदनीय बताया। विधायक ने कहा यह केवल भूमि का मामला नहीं है, बल्कि क्षेत्रवासियों के जीवन, भविष्य और उनके न्याय के अधिकार का प्रश्न है। उन्होंने कहा वह अपने क्षेत्रवासियों के अधिकार और सम्मान के लिए हर समय खड़े है। उन्होंने दमुवाढूँगा को राजस्व ग्राम घोषित किए जाने के बाद वहां के नागरिकों को नियमित करने के लिए मौके और कब्जे के आधार पर उनके अधिकारों की पुष्टि की जाए। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अगर किसी बाहरी व्यक्ति द्वारा अवैध कब्जा किया जाता है, तो क्षेत्रवासी इसका विरोध करेंगे और प्रशासन का सहयोग करेंगे। इस दौरान कुमाऊं आयुक्त दीपक रावत ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया कि किसी निर्दोष व्यक्ति को बिना कारण परेशान नहीं किया जाएगा और सभी को अपने कब्जे के साक्ष्य प्रस्तुत करने का पूरा अवसर दिया जाएगा। इस मौके पर कांग्रेस महानगर अध्यक्ष गोविन्द सिंह बिष्ट, हरीश लाल वैद्य, महेशानंद, फ़कीर राम टम्टा, कृष्ण कुमार, केसी भाई, जगदीश भारती, लाल सिंह पंवार आदि मौजूद रहे।

स्वस्तिका जोशी को आदियोगी नटराज रत्न सम्मान

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। शास्त्रीय नृत्य भरतनाट्यम में अपनी उत्कृष्टता के लिए स्वस्तिका जोशी को राष्ट्रीय आदियोगी नटराज रत्न सम्मान से नवाजा गया। यह सम्मान उन्हें हरिद्वार में आयोजित श्री शिव गंगा उत्सव में प्रदान किया गया। इस अवसर पर स्वस्तिका ने भरतनाट्यम की एकल प्रस्तुति दी, जो उनके नृत्य कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण था। हल्द्वानी निवासी स्वस्तिका जोशी 6 वर्ष की उम्र से भरतनाट्यम की शिक्षा ले रही हैं। उन्हें यह सम्मान उनके भरतनाट्यम नृत्य के क्षेत्र में शानदार प्रदर्शन के लिए दिया गया है। स्वस्तिका की नृत्य शिक्षा प्रसिद्ध गुरु शुभम् खोवाल से हो रही है। इससे पहले, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा स्वस्तिका को स्कॉलरशिप भी प्रदान की जा चुकी है। 11 वर्ष की आयु में स्वस्तिका ने दिल्ली, आगरा, शिमला, उज्जैन, गाज़ियाबाद, इलाहाबाद, लखनऊ, बनारस, हल्द्वानी, अल्मोड़ा, और हरिद्वार जैसे प्रमुख स्थानों पर अपनी एकल प्रस्तुति दी है। स्वस्तिका, सेंट थेरेसा स्कूल हल्द्वानी में कक्षा सात की छात्रा हैं। उनके नृत्य के प्रति समर्पण को मान्यता देते हुए, उन्हें उत्तराखंड बाल गौरव सम्मान, कुमाऊं श्रेष्ठ सम्मान, शशि कला प्रवीण सम्मान, और पं. बनारसी दास स्मृति पुरस्कार जैसे कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिल चुके हैं।

तीसरे दिन भी जारी रही आप्टिमम टेनिस प्रतियोगिता

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। आप्टिमम टेनिस एकेडेमी चूनाखान में प्रथम आइटा अंडर-12, अंडर-14 गर्ल्स ब्वायज स्व. वेदप्रकाश प्रकाश गुप्ता स्मृति आइटा प्रतियोगिता-2025 के तीसरे दिन सोमवार को मुख्य ड्रा के खेले गए मैचों में कोर्ट नंबर-1 पर अंडर-12 में रियान नन्दनकर ने विभोर श्रीवास्तव को 6-0, 6-0 से पराजित किया। हैरिश खान ने अर्थव गोयल, उत्तरप्रदेश को 6-2, 6-3 से पराजित किया। कोर्ट नंबर-2 में आरव मीरचंदानी महाराष्ट्र ने मानव अंन्नथू तेलंगाना को 6-4, 6-1 से, इसी कोर्ट पर आरव शुक्ला ने आसाम के आर्यन डेहरा को 6-0, 6-2 से पराजित किया। एक अन्य मैच में श्लोक स्वप्निल महाराष्ट्र ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन करते हुए विवन बेनीवाल दिल्ली पर 6-0, 6-0 से शानदार जीत दर्ज कर आसानी से अगले दौर मे प्रवेश किया। टूर्नामेंट डायरेक्टर डीएस रावत ने बताया कि अब तक कुल 30 मैच हो चुके हैं। कल भी अगले राउंड के मैच सुबह 8 बजे से शुरू होगे। प्रतियोगिता के आयोजन सचिव अविनीश रस्तोगी ने कहा कि विभिन्न प्रांतो से आए बालक बालिकाओ के साथ उनके अभिभावकगण भी आए हुए हैं।

मारपीट के मामले में सगे भाइयों पर मुकदमा

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। घर में सो रहे एक युवक पर कुछ लोगों ने जानलेवा हमला कर दिया। उससे वह बुरी तरह से घायल हो गया। गंभीर हालत में युवक को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं परिजनों ने मामले की तहरीर पुलिस को सौंप दी। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी। जानकारी के अनुसार राजपुरा वार्ड-13 निवासी वीरू ने पुलिस को सौंपी तहरीर में बताया कि बीती 7 मई की रात करीब 10 बजे वह अपने घर में आराम कर रहा था। आरोप है कि तभी सगे भाई शुभम और सूरज उसके घर में घुस गए। वह कुछ समझ पाते इससे पहले ही आरोपी भाइयों ने ईंट और धारदार हथियार से हमला कर दिया। जिससे वीरू के चेहरे और सिर में गंभीर चोट आई। शोर सुन कर लोगों का जुटना शुरू हुआ तो आरोपी जान की धमकी देते हुए मौके से फरार हो गए। वीरू को लहूलुहान हालत में अस्पताल ले जाया गया, जहां उसके सिर और चेहरे पर चिकित्सकों को टांके लगाने पड़े। कोतवाल राजेश यादव ने बताया कि सगे भाइयों पर मारपीट का मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी गई है।

एक स्मैक तस्कर गिरफ्तार

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत बनभूलपुरा पुलिस ने बीते रविवार की रात चोरगलिया रेलवे फाटक के पास एक स्मैक तस्कर को गिरफ्तार किया है। जानकारी के अनुसार बीते रविवार की रात क्षेत्र में बनभूलपुरा थाने में तैनात एसआई जगवीर सिंह मय टीम के साथ गश्त कर रहे थे तभी एक युवक संदिग्ध परिस्थितियों के घूम रहा था। शक होने पर टीम ने घेराबंदी करते हुए उसे दबोच लिया और जब उसकी तलाशी ली तो उसके पास से 10.81 ग्राम स्मैक बरामद हुई। पकड़े गए तस्कर ने अपना नाम जुवैद पुत्र पुत्तन खाँ निवासी गफूर बस्ती वार्ड नंबर 24 बनभूलपुरा बताया।

एसटीएच में उपनल कर्मियों का कार्यबहिष्कार

तीन दिन का अल्टीमेटम, बेमियादी हड़ताल की चेतावनी

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। विभिन्न मांगों को लेकर मेडिकल कॉलेज में कार्यरत उपनल कर्मचारियों ने मोर्चा खोलते हुए अस्पताल प्रबंधन और राज्य सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते कार्य बहिष्कार कर दिया है। कर्मचारियों ने चेताया कि अगर तीन दिन तक कर्मचारियों की समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो कर्मचारी अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले जाएंगे। सोमवार को कुमाऊं के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल डा. सुशीला तिवारी हॉस्पिटल एवं मेडिकल कॉलेज में कार्यरत उपनल कर्मचारियों ने लंबित पड़ी मांगों को पूरा ना होने पर कार्य बहिष्कार कर दिया। सोमवार को उपनल कर्मचारी एकत्र हुए और सुशीला तिवारी अस्पताल के गेट में धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया। उपनल कर्मचारियों के कार्यबहिष्कार के चले जाने से अस्पताल में मरीजों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा। धरनास्थल हुई सभा में कर्मचारियों ने आरोप लगाया कि है कि वें पिछले 20 वर्षों से अधिक समय से अस्पताल में अपनी सेवाएं दे रहे हैं, लेकिन उन्हें चार महीनों से वेतन नहीं मिला। कर्मचारियों का कहना है कि उन्होंने कोविड-19 महामारी के दौरान भी अपनी जान की परवाह किए बिना मरीजों की सेवा की, फिर भी उन्हें स्थायी कर्मचारी नहीं बनाया गया है। कर्मचारियों ने आरोप लगाते हुए कहा कि बहुत से कर्मचारी अब रिटायरमेंट की उम्र तक पहुंच चुके हैं, लेकिन फिर भी उन्हें स्थायी कर्मचारियों का दर्जा नहीं दिया गया है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगें पूरी नहीं हुईं तो वें बड़ा आंदोलन करने के लिए बाध्य होगे। कर्मचारियों ने अस्पताल प्रशासन को तीन दिन का समय दिया और कहा कि अगर उनकी मांगें पूरी नहीं होतीं तो सभी कर्मचारी अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले जाएंगे, जिसकी पूरी जिम्मेदारी अस्पताल प्रशासन की होगी। राजकीय मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डा. अरुण जोशी ने कर्मचारियों की वेतन संबंधी समस्या को स्वीकार करते हुए कहा कि कर्मचारियों को चार महीने से वेतन नहीं मिला है। उन्होंने बताया कि इस मामले में शासन स्तर पर कार्रवाई की जा रही है। डा. जोशी के अनुसार कर्मचारियों के पद सृजित नहीं होने के कारण बजट रिलीज नहीं हो सका था, लेकिन जैसे ही शासन से बजट प्राप्त होगा, कर्मचारियों को उनका वेतन जल्द ही मिल जाएगा। इस दौरान 700 से अधिक उपनल कर्मचारी मौजूद रहे।

सुरक्षा दीवार न बनने पर प्रदर्शन

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। गौलापुल ऐप्रोच पर सुरक्षा दीवार न बन पाने पर कांग्रेस कार्याकर्ताओं ने सोमवार को भाजपा सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने कहा आठ माह बीते जाने के बाद भी सरकार अभी तक सुरक्षा दीवार नहीं बना पाई। उन्होंने कहा अगर शीघ्र ही सुरक्षा दीवार नहीं बनाई गई तो कांग्रेस क्षेत्र की जनता के साथ आंदोलन को बाध्य होगी। इस दौरान कांग्रेस जिला प्रवक्ता हरेन्द्र क्वीरा ने कहा कि लगभग आठ महीने पहले गोला नदी के तेज बहाव में चोरगलिया रोड पर स्थित गौलापुल की आधी सड़क नदी में समा गई थी, लेकिन तब से अब तक सुरक्षा दीवार का निर्माण नहीं हो पाया है। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या भाजपा सरकार फिर से गौला नदी के और भीषण बहाव का इंतजार कर रही है। ग्रामीणों का कहना है कि भाजपा सरकार ने गौला नदी के सुरक्षा दीवार के कार्य को बहुत धीमी गति से चलाया है। यदि जल्द ही दीवार का निर्माण नहीं हुआ तो शेष बची हुई सड़क भी नदी में समा जाएगी और आने वाली बारिश में क्षेत्रवासियों को और भी बड़ी समस्या का सामना करना पड़ेगा। इसके साथ ही जाम की समस्या भी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, जिससे जनता को भारी कठिनाई हो रही है। प्रदर्शन करने वालों में जिला उपाध्यक्ष नीरज रैक्वाल, हरीश रैक्वाल, क्षेत्र पंचायत सदस्य धर्मेंद्र रैक्वाल, नंदा बल्लभ पांडे, सुरेंद्र चन्द पोडियाल, त्रिलोक सिंह बोरा, मदन सिंह बोरा, दीवान सिंह संभल, राजेश सिंह रैक्वाल, पंकज बोरा, राजेंद्र सिंह बोरा, दीवान सिंह, ललित रैक्वाल, महिपाल रैक्वाल आदि मौजूद रहे।

लो वोल्टेज व पेयजल समस्या का शीघ्र हो निस्तारण: भगत

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। कालाढूंगी विधानसभा क्षेत्र के विधायक बंशीधर भगत ने सोमवार को अपने ऊंचापुल स्थित आवास पर क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं को लेकर अधिकारियों के साथ बैठक की। इस बैठक में विधायक ने क्षेत्र की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान तुरंत करने और योजना संबंधित मुद्दों के लिए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक के दौरान विधायक भगत ने विशेष रूप से लो वोल्टेज की समस्या पर चर्चा की और विद्युत विभाग के अधिकारियों को कुरिया गांव, रतनपुर लामचौड, हिम्मतपुर तल्ला, और हिम्मतपुर बैजनाथ क्षेत्र में ट्रांसफार्मर लगाने और झूलते बिजली के तारों को तुरंत ठीक करने का आदेश दिया। इसके साथ ही विधायक ने जल संस्थान के अधिकारियों को भगवानपुर पेयजल लाइन को जोड़ने के कार्य की 72 लाख रुपये की स्वीकृत धनराशि के आधार पर तत्काल टेंडर प्रक्रिया शुरू करने का आदेश दिया। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि गर्मी के मौसम में किसी भी क्षेत्र में पानी की समस्या नहीं होनी चाहिए और पीने के पानी की कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए। बैठक में मंडल अध्यक्ष संदीप सनवाल, अधिशासी अभियंता विद्युत बेगराज सिंह, सहायक अभियंता विद्या भूषण जोशी, अधिशासी अभियंता पेयजल रवि शंकर लोश्याली, सहायक अभियंता प्रमोद पांडेय, नलकूप अभियंता कवीन्द्र पंत, सहायक अभियंता सुनील कांडपाल समेत कई विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

सफाई कर्मियों ने उग्र कर लिए तेवर

तीन दिन से चला आ रहा सांकेतिक धरना अनिश्चितकाल में तब्दील

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। लंबित मांगों को लेकर पिछले तीन दिनों से नगर निगम परिसर में चल रहा तीन दिवसीय सांकेतिक धरने को देवभूमि उत्तराखंड सफाई कर्मचारी संघ ने अनिश्चतकालीन धरने में तब्दील कर दिया है। कर्मचारियों ने चेताया कि अगर इसके बाद भी कर्मचारियों की मांगों को अनदेखा किया गया तो कर्मचारी उग्र आंदोलन के लिए बाध्य होगे। सोमवार को नगर निगम परिसर में विभिन्न मांगों को लेकर सभी कर्मचारी संघ के प्रदेश संगठन मंत्री अमित कुमार के नेतृत्व एकत्र हुए और विभिन्न मांगों को लेकर अनिश्चितकालीन धरना शुरू कर दिया है। धरना स्थल पर हुई सभा को संबोधित करते हुए संघ के प्रदेश संगठन मंत्री अमित कुमार ने कहा कि देवभूमि उत्तराखंड सफाई कर्मचारी संघ पिछले लंबे समय से अपनी मांगो को लेकर आवाज उठाता रहा है। लेकिन कर्मचारियों की मांगों को अनदेखा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कर्मचारियों ने अपनी मांगों को लेकर तीन दिन तक सांकेतिक धरना दिया लेकिन उसके बाद भी कर्मचारियों की मांगों को अनदेखा किया जा रहा है। जिससे कर्मचारियों को मजबूरन होकर अनिश्चितकालीन धरना शुरू करना पड़ रहा है। उन्होंने मांग करते हुए कहा कि सभी अस्थायी सफाई कर्मचारियों को एक माह के एरियर का भुगतान, द्वितीय प्रोन्नति वेतनमान (एसीपी) का भुगतान, पर्यावरण पर्यवेक्षक की भर्ती में वरिष्ठ एवं योग्य कर्मियों को प्राथमिकता। मोहल्ला स्वच्छता समिति में स्थायी, पात्र व जरूरतमंद व्यक्तियों को प्राथमिकता देकर भर्ती किए जाने जैसे मांगे पूरी नहीं होगी उनका धरना जारी रहेगा। धरना प्रदर्शन में प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य विजय पाल, राजेश, जय प्रकाश, विरेन्द्र, लक्की, विजय कुमार, संजू सहित कई कर्मचारी शामिल रहे।

भार्गवी ने तैराकी में जीते पांच स्वर्ण पदक

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। हिम्मतपुर तल्ला वुडलैंड्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल की कक्षा 9 की छात्रा भार्गवी रावत ने तैराकी में शानदार प्रदर्शन करते हुए पाँच स्वर्ण पदक अपने नाम किए और भारतीय राष्ट्रीय तैराकी टीम में अपना स्थान पक्का किया। भार्गवी ने यह सफलता स्विमिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित नेशनल टीम चयन तैराकी प्रतियोगिता में प्राप्त की। उन्होंने 50 मीटर फ्रीस्टाइल, 50 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक, 100 मीटर फ्रीस्टाइल, 200 मीटर फ्रीस्टाइल और 100 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक में स्वर्ण पदक जीतकर अपनी तैराकी क्षमता का लोहा मनवाया। अब भार्गवी आगामी राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी। विद्यालय प्रशासन और समस्त स्टाफ ने भार्गवी की इस असाधारण उपलब्धि पर गर्व व्यक्त करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। स्कूल प्रबंधन ने कहा कि भार्गवी की सफलता आने वाले विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी।

जूडो-कराटे से सीखी आत्मरक्षा

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्दूचौड़। पंखुड़ियाँ सांस्कृतिक पर्यावरण एवं दिव्यांग कल्याण समिति द्वारा आयोजित तीन दिवसीय नि:शुल्क जूडो-कराटे प्रशिक्षण शिविर के अंतिम दिन लड़कियों ने आत्मरक्षा की महत्वपूर्ण विधियों को सीखा। यह शिविर नारायणपुरम कॉलोनी, बमेटाबंगर, केशव में आयोजित किया गया, जिसमें युवाओं को नशे से दूर रखने के उद्देश्य से आत्मरक्षा के साथ-साथ अनुशासन, एकाग्रता और जीवन के अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी ध्यान दिया गया। अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षक उदयवीर सिंह ने कहा कि जूडो-कराटे केवल आत्मरक्षा की विधा नहीं है, बल्कि यह शरीर और मस्तिष्क की एक सशक्त प्रणाली है। उन्होंने यह भी बताया कि जूडो-कराटे सीखकर न केवल आत्मरक्षा की जा सकती है, बल्कि इसे एक करियर के रूप में भी अपनाया जा सकता है। इस क्षेत्र में प्रशिक्षित व्यक्तियों को सेना, अर्धसैनिक बलों, पुलिस बल और सुरक्षा एजेंसियों में प्राथमिकता से रोजगार मिल सकता है। कार्यक्रम के दौरान पंखुड़ियाँ संस्था की अध्यक्ष रिम्पी बिष्ट ने बताया कि संस्था हर साल इस तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को सही दिशा प्रदान करने की कोशिश करती है ताकि उनका भविष्य उज्जवल हो। इस मौके पर ग्राम प्रधान हरेंद्र असगोला, मेघा त्रिपाठी, डॉली अग्रवाल, पूजा असगोला, प्रशिक्षक सिद्धार्थ सिंह आदि मौजूद रहे।

'अंख्यों में बसायु' में उत्तराखंड की प्रतिभाओं को मिलेगा मंच

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। रिथम एंड मेलोडी सिंडिकेट प्रोडक्शन हाउस के बैनर तले बनी एल्बम अंख्यों में बसायु को लेकर मीडिया हाउस के कोऑर्डिनेटर अजय सिंह और देव सारेश्वर ने पत्रकारों से मुलाकात करते हुए बताया कि इस दौरान उन्होंने बताया कि इस एल्बम का उद्देश्य उत्तराखंड की गुमनाम प्रतिभाओं को एक बेहतरीन मंच उपलब्ध कराना है। सोमवार को नैनीताल रोड स्थित तिकोनिया स्थित एक होटल में पत्रकारों से वार्ता करते हुए अजय सिंह और देव सारेश्वर ने बताया कि एल्बम में शामिल एक प्रेम भरा गीत पहाड़ों की पंग डंडी का उद्देश्य सिर्फ प्रतिभाओं को उजागर करना नहीं, बल्कि उत्तराखंड में पर्यटन को बढ़ावा देना भी है। उन्होंने कहा कि इस गीत में कुमाऊनी, गढ़वाली और हिंदी की सुंदर मिश्रण है, जो न केवल उत्तराखंड की संस्कृति और परंपराओं का प्रचार-प्रसार करेगा, बल्कि देशभर में राज्य की विशेषताओं को पहचान दिलाएगा। एल्बम के सिंगर देव सारेश्वर और शिवानी नेगी हैं, जबकि अभिनव देव सारेश्वर, रेणू कंवर पिथौरागढ़ द्वारा अभिनय किया गया है। एल्बम का निर्देशन विजय भारती ने किया है, और कैमरामैन महेश पाल ने शूटिंग की है। एल्बम की शूटिंग मसूरी, भीमताल, नैनीताल, रानीखोत, टिहरी, और देहरादून जैसे प्रमुख उत्तराखंडी स्थलों पर हुई है, और आगे की शूटिंग भी जारी रहेगी। पत्रकार वार्ता में अजय सिंह, निर्माता आशीष भारद्वाज, अभिषेक, और कल्यानी मौजूद रहे।

सूचना: सम्बंध विच्छेद

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैंने अपने पुत्र सरफराज व पुत्रवधु नाजिया (पत्नी सरफराज) को उनके गलत चल-चलन व परिवार के साथ अनुचित व्यवहार के चलते अपनी चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर सम्बंध विच्छेद कर लिया है। भविष्य में इनके किसी भी कृत्य के लिए यह खुद जिम्मेदार होंगे। मेरा व मेरे परिवार का कोई सरोकार नहीं होगा।

नसीम अहमद पुत्र श्री अब्दुल करीम निवासी' वार्ड नं. 03, कालाढूंगी (नैनीताल)।

शाह टाइम्स

स्वामी शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **एस.एन. राना** द्वारा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. सुजड़ू चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं कृष्णा लोहा भण्डार, प्रथम तल काला ढुंगी रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड) से प्रकाशित।

सम्पादक:
एस.एन. राना
*कार्यकारी सम्पादक
आनन्द बत्रा 'सुमन'
☎05946-250286
मुख्यालय:
मोबाइल-9720007290
R.N.I. No. UTTHIN/2003/10264
www.shahtimesnews.com
email:shahtimes2015@gmail.com

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

हादसे में दो युवकों की मौत, एक गंभीर

■ सिरौली के पास खड़े वाहन से भिड़ी बाइक

शाह टाइम्स संवाददाता

किच्छा। सिरौली के पास सड़क दुर्घटना में दो युवकों की मौत हो गई, जबकि एक गंभीर रूप से घायल हो गया। बताया जा रहा है कि हादसा उस समय हुआ जब मोटर साइकिल सवार युवक सड़क पर ओवरटेक करने का प्रयास कर रहे थे, जिससे सामने खड़े भारी वाहन को नहीं देख पाए और तीव्र गति से सड़क किनारे खड़े भारी वाहन पर टकरा गए। मोटर साइकिल चला रहे युवक की मौके पर ही मौत हो गई जबकि दूसरे युवक की अस्पताल ले जाते समय मौत हो गयी। सड़क हादसे में दो नवयुवकों की मौत से गांव में सन्नाटा पसरा हुआ है। मृतकों के घरों में कोहराम मचा हुआ।

प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार देर रात ग्राम भंगा निवासी 18 वर्षीय अर्जुन पुत्र बंटी ,19 वर्षीय प्रज्वल सक्सेना पुत्र राजकुमार सक्सेना एवं 17 वर्षीय जतिन पुत्र मेवाराम रविवार की देर रात्रि गांव से किच्छा की ओर आ रहे थे। पुल को क्रॉस करने की बाद सिरौली कला के नजदीक स्थित एक ढाबे के पास वाहन को ओवरटेक करने के लिए जैसे ही उन्होंने पास की लिया इसी दौरान सड़क किनारे खड़े एक बड़े वहां से बाईक टकरा गयी। प्रत्यक्ष दर्शियों के अनुसार टक्कर इतनी जबरदस्त थी मोटरसाइकिल सवार तीनों मोटर साइकिल सहित भारी वाहन में घुस गए। हादसे में मोटरसाइकिल चालक अर्जुन पुत्र बंटी की मौके पर ही मौत हो गई जबकि जबकि दो युवक गंभीर घायल हो गए। जिनमें से घायल प्रज्वल उर्फ कृष्णा सक्सेना पुत्र राजकुमार सक्सेना की इलाज के दौरान मौत हो गई जबकि जतिन पुत्र मेवाराम का निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है। सड़क दुर्घटना की सूचना पर तमाम सामाजिक राजनीतिक लोगों ने भी मौके पर पहुंच कर राहत कार्य करवाया तथा घायलों को अस्पताल लाने में सहयोग किया।

भाजपा नेता राजीव सक्सेना ने सामुदायिक स्वास्थ्य में पहुंचकर घायलों का हाल-चाल जाना तथा इलाज के लिए व्यवस्था का जायजा। पुलिस ने दोनों मृतकों के शवों को कब्जे में लेकर के कार्यवाही करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना से मृतकों के परिजनों में कोहराम मचा है।

एनआई एक्ट का वारंटी पुलिस ने गिरफ्तार किया

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। पुलिस ने एनआई एक्ट में वांछित चल रहे वारंटी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर वारंटियों की धरपकड़ के लिए चलाए गए अभियान के तहत वारंटी आरोपी कल्लू सिंह निवासी ओम कॉलोनी को घर से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार आरोपी को मेडिकल परीक्षण के बाद न्यायालय के समक्ष पेश किया गया।

कोतवाल मनोहर सिंह दसौनी ने बताया कि वारंटी कल्लू सिंह के विरुद्ध सिविल जज जूनियर डिवीजन से एनआई एक्ट के तहत गिरफ्तारी का वारंट जारी किया गया था। जो बार-बार सम्मन जारी होने के बाद भी न्यायालय में उपस्थित नहीं हो रहा था।

अवैध खनन व ओवर लोड के खिलाफ गरजे कांग्रेसी

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। विधायक तथा उप नेता प्रतिपक्ष भुवन चंद्र कापड़ी के नेतृत्व में सैकड़ों कांग्रेसियों ने तहसील परिसर पहुंचकर खटीमा क्षेत्र में दिन रात चल रहे अवैध खनन तथा काल बनकर सड़कों पर दौड़ रहे ओवर लोड वाहनों के खिलाफ हल्ला बोलते हुए एसडीएम कार्यालय के समक्ष धरना प्रदर्शन किया तथा एसडीएम को एक ज्ञापन सौंपा।

इस दौरान आक्रोशित कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि प्रशासन की मिली भगत से क्षेत्र में लगातार अवैध मिट्टी खनन चल रहा है तथा तेज रफ्तार से चलनेवाले ओवरलोड वाहनों से लगातार दुर्घटनाएं और मौतें भी हो रही है। उन्होंनेध कहा कि ओवरलोड वाहनों से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की सड़कें भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो रही हैं। इस दौरान आक्रोशित कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने खनन माफियाओं व सरकार के खिलाफ जमकर नारे लगाए। वहीं कांग्रेस विधायक भुवन चंद्र कापड़ी ने आरोप लगाया कि अनुमति की समय सीमा समाप्त होने के बाद भी क्षेत्र में लगातार अवैध खनन का खेल जारी है।

वहीं सड़कों पर तीव्र गति से दौड़ रहे ओवरलोड वाहनों से क्षेत्र में लगातार दुर्घटनाएं और मौतें हो रही है। उन्होंने शासन प्रशासन से मांग किया कि अवैध खनन तथा ओवरलोड वाहनों को तत्काल बंद किया जाए।

इस दौरान कांग्रेस प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य उमेश सिंह राठौर, युवा कांग्रेस जिला अध्यक्ष नरेंद्र आर्या, प्रदेश महामंत्री रमेश रौतेला, विनोद चंद, देवेंद्र कन्याल, कुंदन चड्ढ़ा, पंकज टम्टा, नवीन सिंह राणा, शमीम अहमद, मोहम्मद ताहिर, नासिर खान, विक्रम सिंह, नवीन जोशी, भूपेंद्र गंगवार, कमान सिंह अन्ना, सतपाल राणा, वीरू राणा रेहान अंसारी, प्रशांत कोहली, दिलीप सिंह राणा तथा इमरान खान सहित सैनिक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

एक नजर

एनडीपीएस एक्ट में दो लोग नामजद

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। पुलिस ने स्मैक के साथ दो युवकों को गिरफ्तार किया। आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट में मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया। रविवार को देर शाम सत्रहमील पुलिस ने गश्त के दौरान दो युवकों को संदिग्ध हालत में खड़े देखा जो पुलिस को देख सकपका कर तेज गति से भागने लगे। पुलिस ने घेराबंदी कर दोनों युवकों को पकड़ लिया। तलाशी लेने पर ग्राम रघुलिया निवासी सोनू सिंह के पास से 1.73 ग्राम व राजू सिंह के पास से 1.43 ग्राम स्मैक बरामद होने पर गिरफ्तार कर लिया। कोतवाल मनोहर सिंह दसौनी ने बताया कि दोनों आरोपियों के एनडीपीएस एक्ट मुकदमा दर्ज कर न्यायालय में पेश किया गया। जहां से आरोपियों को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

मारपीट के मामले में दंपति के खिलाफ मुकदमा दर्ज

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। हल्दी निवासी एक व्यक्ति ने पुलिस को तहरीर सौंपकर दंपति के खिलाफ मारीपट का आरोप लगाया था। पुलिस ने इस मामले में आरोपी दंपति के खिलाफ मुकदर्मा दर्ज कर लिया है।

ग्राम हल्दी दिवासी प्रमोद मौर्य ने बताया कि उसकी एक बीघा जमीन में मकान के निर्माण का काम चल रहा है। रविवार की सुबह साढ़े नौ बजे निर्माणाधीन मकान के पास निवास करने वाले दंपति ने उसके साथ गाली गलौच की और विरोध करने पर जान से मारने की धमकी देकर मरपीट करने लगे। मारपीट के चलते उसका हाथ में गंभीर चोट आई है। पीड़ित ने बताया कि आरोपी दंपति उससे रंजिश रखता है। पीडित ने बताया कि दंपति से उसे लगातार खतरा बना हुआ है। पुलिस ने इस मामले में आरोपी जोगा सिंह, सोनी कौर निवासी हल्दी के खिलाफ धारा 115(2), 351(2),352 आईपीसी के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया है। कोतवाल मनोहर सिंह दसौनी ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

हाइकोर्ट के आदेश पर जल्द खुलेगा मदरसा

शाह टाइम्स संवाददाता

जसपुर। लगभग दो माह पूर्व प्रशासन द्वारा सील किए गए जसपुर के एक मदरसे को हाईकोर्ट के आदेश पर एसडीएम एवं तहसीलदार ने खोलने के आदेश जारी कर दिए हैं।

मोहल्ला भूप सिंह स्थित मदरसा अरबिया अहले सुन्नत रियाजुल उलूम (सक्कों वाली मस्जिद) को प्रशासन टीम ने बिना पंजीकरण के संचालित होने और अन्य खामियों मिलने पर सील कर दिया था। मदरसे के प्रबंधक मुबारक हुसैन ने मदरसा सील करने के विरुद्ध हाई कोर्ट में याचिका दायर की थी। हाईकोर्ट ने सुनवाई के बाद प्रशासनिक टीम को मदरसा खोलने के आदेश जारी कर दिए हैं। आदेश जारी होने की कॉपी लेकर समाजसेवी अखलाक एडवोकेट सुल्तान भारती व मदरसे के प्रबंधक मुबारक हुसैन ने एसडीएम चतर सिंह चौहान से इस बाबत मुलाकात की। हाईकोर्ट के आदेश की स्टडी करने के पश्चात एसडीएम चतर सिंह चौहान ने तहसीलदार शुभांगिनी को हाईकोर्ट के आदेश के अनुपालनार्थ मदरसा खोलने के आदेश जारी किए हैं। मीडिया से वार्ता करते हुए एसडीएम चतर सिंह चौहान ने बताया कि जल्द ही मदरसे को खोल दिया जाएगा इसके लिए हाईकोर्ट ने आदेश कर दिए हैं, जिसकी विधिक जानकारी ली जा रही है। कोर्ट के आदेश का पालन किया जाना है। इस मौके पर समाजसेवी अखलाक एडवोकेट ,मदरसे के प्रबंधक मुबारक हुसैन, सुल्तान भारती,वसीम अहमद व अन्य नागरिक मौजूद रहे।

आंदोलनकारियों की जल्द दूर की जाएं समस्याएं: जोशी

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। वरिष्ठ राज्य अधिकारी भगवान जोशी ने सरकार से 10% क्षैतिज आरक्षण, चिंहीकरण एवं पेंशन वृद्धि पर अभिलंब कार्यों की मांग की है। उन्हें मुख्यमंत्री के कार्यकाल में लिए गए प्रत्येक फैसले का स्वागत करते हुए कहा है कि निरंकुश अफसर शाही के चलते 25 वर्ष गुजरने के बाद भी 10% क्षैतिज आरक्षण का मामला लंबी चल रहा है तथा चिंहीकरण से वंचित वास्तविक राज्य अधिकारी उम्र दराज होकर दर दर ठोकर खाने को मजबूर हो रहे हैं। वहीं पेंशन के नाम पर राज्य के आंदोलनकारियों को सरकार टोकनमनी दे रही है। उन्होंने रविंद्र जुकरान के इस बयान पर निंदा की है जिस पर वह नौकर कर रहे लोगों को पेंशन व उनके बच्चों को आरक्षण का लाभ दिलाने की वकालत कर रहे हैं। वरिष्ठ राज्य आंदोलनकारी भगवान जोशी ने कहा कि राज्य के 12000 से अधिक राज्य आंदोलनकारी आज भी गुमनामी की जिंदगी जी रहे हैं। ऐसे लोगों के आश्रितों को सम्मान के नाम पर केवल घोषणाएं ही सुनने को मिलती हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री को पत्र भेज कर 12000 चिन्हित परिवारों को हांसिए पर न डालने, चिन्हित आंदोलनकारियों को प्रमाण पत्र एवं आंदोलनकारियों को सम्मानजनक पेंशन देने की मांग की है।

युवक पर किया जानलेवा हमला

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। रामनगर के मोहल्ला खताड़ी क्षेत्र में एक व्यक्ति के साथ कुछ लोगों द्वारा मारपीट करते हुए जानलेवा हमला कर दिया। घायल को उपचार के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

मोहल्ला खताड़ी कोटद्वार रोड निवासी सोनी नाम की एक महिला ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि वह कोटद्वार रोड में किसी के यहां पर अपने पति के साथ किराए पर रहती हैं। उसी मकान में कुछ अन्य लोग भी किराए पर रहते हैं।बताया कि वह अपने मायके गई हुई थी।रविवार देर रात उसी मकान में रहने वाले तीन चार लोगों ने उसके पति फिरोज के साथ गाली गलौज करते हुए धारदार हथियारों से हमला कर दिया और जान से मारने की धमकी देते हुए फरार हो गए। गंभीर रूप से घायल फिरोज को सरकारी अस्पताल ले जाया गया।जहां चिकित्सको ने प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर रेफर कर दिया।घायल का रामनगर के निजी अस्पताल में उपचार चल रहा है।

अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक डॉक्टर अभिषेक अग्रवाल ने बताया कि फिरोज की हालत गंभीर है। उसको आईसीयू में भर्ती किया गया है और उसका उपचार चल रहा है।वही कोतवाली के वरिष्ठ उप निरीक्षक मोहम्मद यूनुस ने बताया कि तहरीर के आधार पर मामले की जांच कर आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया जा रहा है।

नगर पालिका ने सड़कों का जाल बिछना शुरू की

शाह टाइम्स संवाददाता

जसपुर। नवनियुक्त युवा अध्यक्ष नौशाद सम्राट के प्रयासों से अगले एक माह में नगर की लगभग 48 जर्जर सड़कों का पुन: निर्माण पूरा हो जाएगा जिसमें नगर पालिका के मुख्य बाजार समेत शहर की कई मुख्य सड़क वह गली मोहल्ले की सड़कों का निर्माण सीमेंट में सीसी व टाइल्स से पूरा किया जाएगा। इस बाबत पालिका ठेकेदारों ने सड़के बनाने का काम शुरू कर दिया है।

जसपुर में नगर पालिका का बोर्ड भंग हो जाने के बाद प्रशासक नियुक्त हो गए थे उसके पश्चात भी प्रशासक काल में जसपुर में कई सड़कों का निर्माण हुआ था ।लेकिन अभी भी नगर में कई ऐसी सड़के हैं जिन पर चलने में नागरिकों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है इन सबके इतर कुछ नई तो कुछ पुरानी सड़कों को बनाए जाना जरूरी हो गया था।

निकाय चुनाव में नियुक्त युवां अध्यक्ष नौशाद सम्राट एवं ईओ शाहिद अली ने नागरिकों/सभासदों व जन प्रतिनिधियों की मांग पर नगर की सड़कों का अपनी टीम के साथ स्वयं निरीक्षण किया था साथ ही दूसरी बोर्ड बैठक में सदस्यों से सड़कों के वावत प्रस्ताव लेकर उनको पास भी कर दिया था पालिका ने मार्च माह में लगभग 5:45 करोड़ से 48 सड़कों के टेंडर निकाले थे जिन्हें पूरा करने को संबंधित ठेकेदारों को 06 माह का समय दिया था । ठेकेदारों ने ईदगाह रोड मुख्य बाजार में गोपाल पकोड़े वाली रोड, अस्पताल के पीछे रोड, समेत गली मोहल्ले की सड़कों को सीसी एवं टाईल्स से बनाना शुरू कर दिया है सड़कों के निर्माण होने से से नागरिकों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। जिसको लेकर जसपुर व क्षेत्रीय नागरिक नवनियुक्त युवा अध्यक्ष की प्रशंसा करते नजर आ रहे हैं ।

पर्यटन स्थलों पर गंभीर समस्या बना ट्रैफिक जाम: आर्य

■ भाजपा राज में विकास-विहीन उत्तराखंड शासनिक-प्रशासनिक जाम में फंस गया है

■ वाहनों का दबाव बढ़ने से कैंची में जाम से जूझ रहे लोग

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि उत्तराखंड के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों पर ट्रैफिक जाम अब एक गंभीर समस्या बन चुका है। नियमित जाम की समस्या एक गंभीर विषय है। इसे दूर करने का सरकार के पास कोई रोड मैप नजर नहीं आ रहा है।

कांग्रेस नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि नैनीताल कैंची धाम पर गाड़ियों का लंबा जाम रोज देखने को मिल रहा है सुबह हो या रात हर दिन जाम की समस्या से लोग और पर्यटक परेशान हो रहे हैं। वाहनों का दबाव बढ़ने से कैंची में जाम से लोग जूझ रहे हैं। रानीबाग- भीमताल, भीमताल- भवाली, भवाली- कैंची, ज्योलीकोट- भवाली, नैनीताल- भवाली और अल्मोड़ा- कैंची समेत भवाली और कैंची को रामगढ़ से जोड़ने वाली सड़कों पर यातायात का दबाव बढ़ने से कदम कदम पर जाम रहता है। कैंची धाम में बढ़ते श्रद्धालुओं की भीड़ के कारण नैनीताल ही नहीं अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ और बागेश्वर के रास्ते भी प्रभावित हो रहे हैं। यह जाम इन जिलों के लोगों के लिए एक बड़ी समस्या बन गया है।

नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि कैंची धाम में लंबा जाम, क्वारब और अन्य क्षेत्रों में सड़के खराब होने से हल्द्वानी से कुमाऊँ के इन पर्यटन स्थलों के सफर का समय दोगुने से भी अधिक हो गया है। जिससे लंबी दूरी तय कर पहुंचने वाले पर्यटक कुमाऊँ की ओर रुख करने से भी कतराने लगे है। हल्द्वानी राष्ट्रीय राजमार्ग में कैंची के पास जाम लगने से अल्मोड़ा, व बागेश्वर व पिथौरागढ़ जिलों का व्यापार सहित आमजन और यात्रियों पर इसका प्रभाव पड़ रहा है। राष्ट्रीय राजमार्ग होने के बाद भी सड़क पर समुचित तरीके से यातायात व्यवस्था संचालित कराने की व्यवस्था नही होने, घंटों लग रहे जाम से आम यात्रियो और पहाड़ को आने वाले मालवाहको को जाम का सामना करना पड़ता है, जिससे समय से व्यापारियों को सामान नही मिल पाता है। जाम के कारण अल्मोड़ा बागेश्वर ,रानीखेत और हल्द्वानी जैसी बड़ी बाजारों की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया है।

जाम से सबसे ज्यादा परेशान हो रहे बच्चे और मरीज

नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य कहा कि जाम से सबसे ज्यादा परेशान हो रहे हैं बच्चे और बीमार मरीज। सर्वविदित है पहाड़ों के सभी हॉस्पिटल अब हॉस्पिटल कम और रेफर सेंटर ज्यादा हैं। अल्मोड़ा बागेश्वर, रानीखेत पिथौरागढ़ से अधिकतम मरीज हल्द्वानी या मैदानी हॉस्पिटलों को रेफर किये जाते हैं और वहीं मरीज कैंची धाम के जाम में फंसकर जिंदगी मृत्यु के बीच जूझते रहते हैं। ये केवल आवागमन का ही संकट नहीं है बल्कि धुएँ-धूल के कारण इसका सीधा संबंध पर्यावरण प्रदूषण, जन-स्वास्थ्य से भी है। साथ ही इसका आर्थिक संबंध जाम में खड़े-खड़े, पैसों से खरीदे गये बिना बात के फुँकते तेल से जनता की जेब से भी है और फालतू की उलझन की वजह से पैदा होने वाली झुंझलाहट से भी है जिसका सीधा दुष्प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि हालात खराब होने के बावजूद शासन प्रशासन अभी तक वाहनों की आवाजाही को नियंत्रित करने का कोई और तरीका ढूंढ पाने में असफल है। भाजपा राज में विकास-विहीन उत्तराखंड शास.निक-प्रशासनिक जाम में फँस गया है। भाजपा सरकार को सिर्फ अस्थायी इंतजाम नहीं, बल्कि दीर्घकालिक योजना बनाने की जरूरत है। अगर जल्द से जल्द सरकार ने इस विकराल होती समस्या को गंभीरता से नहीं लिया तो भविष्य में होने वाले भयंकर जाम से पहाड़ के निवासियों की हालत बद से बदत्तर न हो जाय।

टीडीएस बचाने को भाकियू ने खोला मोर्चा

शाह टाइम्स संवाददाता

जसपुर। सरकार द्वारा किये जा रहे हल्दी, पंतनगर एयरपोर्ट के विस्तारीकरण की जद में आये टीडीसी कार्यालय व भंडारण के अस्तित्व को समाप्त किए जाने के विरोध में भारतीय किसान यूनियन, जसपुर के कार्यकर्ताओं ने भारतीय किसान यूनियन के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष प्रेम सिंह सहोता के नेतृत्व में मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन उप जिला अधिकारी, जसपुर चतर सिंह चौहान को सौंपा।

भारतीय किसान यूनियन ने ज्ञापन में कहा गया है कि अस्तित्व समाप्त किए जाने से पहले टीडीसी कार्यालय दूसरी जगह बनाया जाए। ज्ञापन में चेतावनी दी गई कि किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए सुनवाई न की गई तो भारतीय किसान यूनियन व संयुक्त मोर्चा आंदोलन करने के लिए बाध्य हो जाएंगे । जिसकी जिम्मेदारी शासन प्रशासन की होगी । एसडीएम को ज्ञापन सौंपने से पहले भाकियू

कार्यकर्ता कृषि उत्पादन मंडी समिति, जसपुर के सभा कक्ष में एकत्र हुए ।

जहां उन्होंने सरकार द्वारा सरकार टीडीसी कार्यालय का अस्तित्व समाप्त किए जाने पर रोष व्यक्त किया व सर्वसम्मति से संबंधित ज्ञापन तैयार किया। इसके अलावा कार्यकर्ताओं ने दिनांक 16, 17, 18 जून को हरिद्वार में आयोजित होने वाले भारतीय किसान यूनियन के किसान महाकुंभ को सफल बनाने की रणनीति पर भी विचार किया गया और कार्यकर्ताओं व किसान भाइयों से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर किसान महाकुंभ को सफल बनाने की अपील की गई। इस मौके पर भारतीय किसान यूनियन जसपुर के ब्लॉक अध्यक्ष जागीर सिंह, युवा भारतीय किसान यूनियन के ब्लॉक अध्यक्ष अमनप्रीत सिंह, कृषक सलाहकार समिति के ब्लॉक अध्यक्ष मुख्तियार सिंह घुम्मन, बलदेव सिंह, शीतल सिंह , दीदार सिंह, चौधरी किशन सिंह, जसवीर सिंह, धर्मेंद्र सिंह, नौशाद मलिक, अभि जोत, देवेंद्र सिंह, इरफान, कमर अली, मारूफ, रहमान मलिक, महाराज सिंह चौहान, सुरेश, लखविंदर सिंह, पूरन सिंह, अदनान, शोहराब, अनस, आमिल आदि मौजूद रहे।

जिला चिकित्सालय में मिलेगी ब्रेस्ट कैंसर स्क्रीनिंग की सुविधा

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। प्रमुख अधीक्षक जवाहर लाल नेहरू जिला चिकित्सालय डा. आरके सिन्हा ने बताया कि सरकार द्वारा महिलाओं के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए, जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय में अब ब्रेस्ट कैंसर स्क्रीनिंग की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। यह स्क्रीनिंग अत्याधुनिक तकनीकों के माध्यम से की जा रही है, जिससे शुरुआती अवस्था में कैंसर की पहचान संभव हो सके।

प्रमुख अधीक्षक ने बताया कि भारत में महिलाओं को होने वाले ब्रेस्ट कैसर दूसरा सबसे ज्यादा देखे जाने वाला कैंसर है, जो सभी नए कैंसर मामलों में से लगभग 26.6 प्रतिशत है। सर्वाइकल कैंसर के लगभग 17.7 प्रतिशत नए मामले इसी से होते है। इसके साथ साथ ओवेरियाँ कैंसर लगभग 6.6 प्रतिशत मामले हर वर्ष आ रहे है। उन्होंने बताया राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम (ICMR-NCDIR) के अनुसार, भारत में हर साल लगभग 2.5 लाख महिलाएं ब्रेस्ट कैंसर की चपेट में आती हैं, और इन मामलों की संख्या लगातार बढ़ रही है। महिलाओं की समय पर जांच और जागरूकता से इस बीमारी को प्रारंभिक अवस्था में पकड़ा जा सकता है, जिससे उपचार अधिक प्रभावी हो जाता है। उन्होने बताया कि आयुष्मान भारत कार्ड, बीपीएल या अंत्योदय कार्ड धारक सभी महिलाएं यह सेवा नि:शुल्क प्राप्त कर सकती हैं। शासन द्वारा निर्धारित अन्य वर्गों भी यह निशुल्क सुविधा का लाभ उठा सकते है। उन्होने बताया कि जिनके पास यह कार्ड नहीं हैं, वे मात्र 1170 शुल्क देकर यह महत्वपूर्ण जांच करा सकती हैं। उन्होंने बताया कि जिला अस्पताल में प्रतिदिन मेमोग्राफी की सुविधा उपलब्ध है।

सभी महिलाएं इस सुविधा का लाभ उठाएं और अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनें। यह जांच महिला एक्सरे तकनीशियन द्वारा ही किए जा रहे है। प्रमुख अधीक्षक ने कहा यह पहल महिलाओं में कैंसर की जल्दी पहचान और उपचार के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। चिकित्सालय प्रबंधन सभी महिलाओं से अनुरोध करता है कि वे समय पर अपनी जांच कराकर स्वास्थ्य के प्रति सजगता दिखाएं।

बिना अनुमति के जंगल में घुसी स्कॉर्पियों, मचा हड़कंप

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। तराई पश्चिम वन प्रभाग फाटो जोन में जिप्सियों से पर्यटक जंगल सफारी करते हैं। इसके लिए परमिट बुकिंग के बाद जिप्सियों को भी बुक करना पड़ता है।तराई पश्चिम वन प्रभाग के फांटो रेंज में जिप्सियों के रूट पर एक स्कॉर्पिओं वाहन दौड़ाई गई। वहीं संदिग्ध गतिविधियों के खतरे को देखते हुए वन कर्मियों में हड़कंप मच गया।

उन्होंने वाहन पीछे लगाकर वाहन को पकड़ने का प्रयास किया, लेकिन आरोपी वाहन समेत फरार हो गया। तराई पश्चिम वन प्रभाग के उत्तरीय जसपुर रेंज के वन दरोगा किशोरी लाल ने सोमवार को मामले की तहरीर रामनगर पुलिस को दी। उन्होंने बताया कि वह बीट अधिकारी तारा चंद्र के साथ नियमित गश्त पर थे। इस दौरान आरक्षित वन क्षेत्र में वाहन यूके 18एन7509 स्कॉर्पियों को बिना अनुमति के देखा गया। बताया कि वाहन जिप्सियों के आगे चलाया गया।

वाहन को पकड़ने का प्रयास किया गया, लेकिन आरोपी वाहन को जसपुर की ओर ले गया। बताया कि आरोपी की पहचान कर ली गई है। आरोपी वन क्षेत्र में क्यों आया, उसका क्या मकसद था, इसका पता लगाया जा रहा है। एसडीओ संदीप गिरी ने बताया कि पुलिस को नामजद तहरीर दी गई है। जल्द ही उसको पकड़ लिया जाएगा। वहीं उन्होंने बताया कि वन विभाग ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया है।वहीं कोतवाली के वरिष्ठ उप निरीक्षक एसएसआई मो युनूस ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

संबन्ध विच्छेद

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र राहुल मल्लिक ने अपनी मर्जी से बिना परिवार की सहमति से विवाह कर लिया है। मेरा पुत्र राहुल मल्लिक और उसकी पत्नी पूजा मल्लिक आए दिन मुझे और मेरे अन्य परिजनों को परेशान करते हैं। उनके कृत्यों से तंग आकर राहुल मल्लिक और उसकी पत्नी पूजा मल्लिक से अपने समस्त सम्बन्धों को विच्छेदित कर उनको अपनी चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। भविष्य में शपथकर्ता व उसके परिवार वाले राहुल मल्लिक और उसकी पत्नी पूजा मल्लिक के किसी भी कृत्य के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। राहुल मल्लिक और उसकी पत्नी पूजा मल्लिक अपने कृत्य के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे।

विद्याधर मल्लिक पुत्र जूरन मल्लिक निवासी- शक्तिफार्म नं.-3 देवनगर सितारगंज, जिला उधमसिंह नगर,

किसान से खरीदी पांच सौ रुपये मिट्टी की ट्रॉली और बेच रहे पांच हजार रुपये तक

■ एक दिन मिट्टी खोदने की प्रमिशन के एवज में खर्च करने पड़ते हैं सवा लाख

■ रात भर मिट्टी खोदने वाले प्रमिशन के लिए खर्च करते हैं डेढ़ लाख

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। खनन के कारोबार में भी किसानों का आर्थिक शोषण होना इन दिनों आम बात है। किसान से 300 से 500 रुपए प्रति ट्रॉली मिट्टी खरीदने वाले खनन माफिया तीन से पांच हजार रुपए प्रति ट्रॉली मिट्टी बेचते हैं। मिट्टी के इस कारोबार में जहां खनन माफिया मानकों की अनदेखी कर मिट्टी का काम करते हैं वहीं सरकार को भी रॉयल्टी अदा नहीं करते हैं। मिट्टी के कारोबारी एक दिन मिट्टी खनन के एवज में लगभग सवा लाख रुपए प्रतिदिन की स्वीकृति स्थानीय प्रशासन से लेते हैं। जबकि रात भर मिट्टी खनन करने के एवज में लगभग डेढ़ लाख रुपए प्रमिशन स्वीकृति के लिए खर्च करते हैं।

खनन कार्य करने वाले नाम प्रका.शित न करने की शर्त पर बताया है कि उन्हें पुलिस एवं प्रशासन को लगभग एक लाख रुपए देने पड़ते हैं। स्वीकृति पत्र में खनन कार्य में इस्तेमाल होने वाले डंपर, ट्रैक्टर ट्राली के नंबर देने पड़ते हैं। उन्हें किसान का नाम व उसका खेत नंबर रकवा देना पड़ता है। इसी के आधार पर स्वीकृति प्राप्त करने वाला व्यक्ति जेसीबी अथवा पट रोलर से मिट्टी खोदकर ट्रैक्टर ट्राली अथवा डंपरों को लोड़ किया जाता है। राजस्व विभाग एवं पुलिस को दिए जाने वाली एक लाख की रकम में हल्का पटवारी, राजस्व विभाग की टीम तथा पुलिस महकमे के कर्मचारी सब माइनेज हो जाते हैं। गोपनीय जानकारी देने वाले ये भी बताया है कि पुलिस एवं प्रशासन से सेटिंग होने के बाद खनन सामग्री ढोने वाले वाहनों को कोई नहीं रोकता है। जानकारी देने वाले ने यह भी बताया कि खनन के इस कारोबार में अब आरटीओ की भी कुछ भागीदारी रहने लगी है। तथा कथित पत्रकार भी प्रतिदिन खनन के कार्य में चार से छह हजार तक वसूलने लगे हैं। पुलिस प्रशासन से सेटिंग होने के बाद खनन माफिया मानकों को ताक पर रखकर इस कार्य को अंजाम देते हैं।

खानापूर्ति के तहत पकड़े जाते हैं खनन सामग्री वाले वाहन

खटीमा । तहसील क्षेत्र में मानकों की अनदेखी कर दिन-रात खनन कार्य होता है। इसकी तुलना में पुलिस एवं स्थानीय प्रशासन द्वारा खानापूर्ति के लिए खनन सामग्री लदे एक दो बाहन ही यदा कदा पकड़े जाते हैं। जबकि खनन माफियाओं का सितारगंज रोड, टनकपुर रोड, पीलीभीत रोड, मेलाघाट रोड, लोहिया हेड रोड हर तरफ राज है।

दिन रात बेखौफ चलने वाले खनन कार्य से नगर एवं ग्रामीण क्षेत्र के मार्गों में खनन सामग्री गिरती रहती है। आंधी तूफान एवं तेज हवा के साथ यह सामग्री प्रदूषण को बढ़ावा देती है। आम जनता धूल के गुब्बार के बीच मार्गो से आते जाते हैं। खनन सामग्री ढोने की होड़ में ये वाहन ध्वनि एवं वायु प्रदूषण को बढ़ावा देते हैं।

जिला स्तर की स्वीकृति पर चालान जमा होता है

खटीमा। जिला स्तर पर खनन की परमिशन चाहने वालों को चालान जमा करना पड़ता है। जबकि स्थानीय स्तर पर एक दिन के लिए मंदिर, सार्वजनिक स्थलों पर मिट्टी डालने वालों का काम जनहित में बिना चालान के हो जाता है।

वीरेन्द्र सिंह सजवाण-तहसीलदार खटीमा

बिना स्वीकृति खनन करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई होगी

खटीमा। परमिशन के आधार पर खनन कार्य करने वालों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो सकती है। खुले वाहनों में खनन सामग्री ढोने व प्रात: काल तथा देर रात तक खनन कार्य करने वालों के विरुद्ध पुलिस कार्रवाई करेगी । खनन के एवरेज में तमाम बातें करने वालों के संबंध में कुछ नहीं कहा जा सकता है। क्षेत्र में दिन-रात होने वाले खनन कार्य पर पुलिस कार्रवाई करेगी।

विमल रावत-पुलिस क्षेत्राधिकार खटीमा

मांगों को लेकर करणी सेना ने सौंपा ज्ञापन

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। करणी सेना ने रामदत्त जोशी राजकीय संयुक्त चिकित्सालय रामनगर में सुविधाओं की मांग को लेकर प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री डा. धन सिंह रावत को उपजिलाधिकारी के माध्यम से एक ज्ञापन भेजा है।भेजे गए ज्ञापन में उन्होंने कहा कि कुमाऊं-गढ़वाल के मुख्य द्वार एवं विश्व प्रसिद्ध जिम कार्बेट नेशनल पार्क में स्थित रामदत्त जोशी संयुक्त चिकित्सालय रामनगर में चिकित्सा सेवाओं का बहुत अधिक अभाव है।

कहा कि वर्तमान में हास्टिल में डाक्टरों का अभाव है। रामनगर संयुक्त चिकित्सालय ने वेंटिलेटर की सुविधा नहीं है। हास्पिटल में वेंटिलेटर की सुविधा होनी चाहिये। हास्पिटल में डाक्टरों की कमी पूरी होनी चाहिये। रात में भी डाक्टरों की सुविधा होनी चाहिये।

हास्पिटल में दवाओं की हमेशा कमी रहती है. जो कि पूरी होनी चाहिये। मरीजों के लिए हास्पिटल में सभी जाँचे हास्पिटल के माध्यम से होनी चाहिए उक्त हॉस्पिटल में में टेक्निशियन की नियुक्ति होनी चाहिये। हॉस्पिटल में सभी बीमारियों का इलाज व अच्छे सर्जन होने चाहिये।

हास्पिटल में इलाज की सही व्यवस्था होनी चाहिए। हॉस्पिटल में नियम यह लागू होना चाहिये कोई भी डाक्टर अगर डिग्री लेता है तो कम से कम 5 वर्ष सरकारी हास्पिटल में सेवा देनी होगी, जिससे गरीब लोगों का सुचारू रूप से बीमारियों का इलाज हो सके यदि कोई डाक्टर 5 वर्ष से पहले अपना निजी अस्पताल खोलता है तो उसकी डिग्री रद्द होनी चाहियें।उन्होंने कहा कि महंगे इलाज की वजह से बहुत से गरीब जीवन यापन करने वाले व्यक्ति हॉस्पिटल में दम तोड़ देते हैं. क्योंकि उक्त हॉस्पिटल में स्वास्थ्य सेवायें ठीक से उपलब्ध नहीं हो पाती है। जिसकी चिन्ता सरकार को करनी चाहिए।कहा कि नवजात बच्चों की डिलीवरी को लेकर रामदत्त जोशी संयुक्त चिकित्सालय के लिये एक बड़ा प्रश्न चिन्ह है। इसमें तत्काल प्रभाव से सुधार हो एवं डिलीवरी सम्बन्धी केस में चिकित्सालय में ही होनी चाहिये क्योंकि कुमाऊँ एवं गढ़वाल एवं रामनगर क्षेत्र की जनता को रामदत्त जोशी संयुक्त चिकित्सालय से ही उम्मीद रहती है। उन्होंने कहा कि अस्पताल रेफर सेंटर बन गया है। छोटी-छोटी बीमारी में भी मरीज को यहां से रेफर कर दिया जाता है। करणी सेना ने कहा कि यदि 7 दिन के अंदर उनकी समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो करणी सेना आंदोलन करेंगी।

इस दौरान करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष सूरज चौधरी,अरुण पाल, कल्पना वर्मा, दीपू आर्य, लखन, शरद कुमार, बिरजू आदि मौजूद रहे।

बोले सो निहाल सतश्री अकाल के उद्घोष से गूंज उठी घाटी

- **तीन दिनी सालाना जोड़ मेले का किया गया आगाज, हजारों लोग बने साक्षी**

शाह टाइम्स संवाददाता

श्रीरीठासाहिब। लधिया व रतिया नदी के पावन संगम में स्थित दुनिया में मीठे रीठे के चमत्कार के लिए प्रसिद्ध गुरुद्वारा श्रीरीठासाहिब में 'जो बोले सो निहाल सतश्रीअकाल' के उद्घोष के साथ तीन दिनी सालाना जोड़ मेला शुरू हो गया है। जिसका उद्घाटन उप जिलाधिकारी नितेश डांगर द्वारा किया गया।

इससे पूर्व कार सेवा प्रमुख बाबा बच्चन सिंह एवं गुरुद्वारा प्रबंधन समिति के अध्यक्ष बाबा सुरेंद्र सिंह द्वारा यहां पांच दर्जन कमरों के रैन बसेरे का शुभारंभ किया गया। इस रैन बसेरे के कारण यहां आने वाले तीर्थ यात्रियों को काफी सुविधा मिलेगी। इस अवसर पर देश-विदेश से आए तीर्थ यात्रियों का स्वागत करते हुए एसडीएम ने कहा कि गुरुद्वारा श्रीरीठासाहिब में होने वाला यह मेला चंपावत जिले की दुनिया में पहचान बनाता है।इस मेले में तीर्थ यात्रियों को बेहतर सुविधाएं देने एवं उन्हें किसी प्रकार की दिक्कत ना हो इसके लिए पुलिस व प्रशासन द्वारा पूरा प्रयास किया गया है। इस अवसर पर बाबा सुरेंद्र सिंह ने कहा कि सिख धर्म की उत्पत्ति ही परमार्थ के लिए ही हुई है। यह ऐसा धर्म है जिसमें हम दूसरों की खुशी में अपनी खुशी तलाश कर प्रसन्न रहते हैं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एसडीएम का गुरुद्वारा प्रबंधक बाबा श्याम सिंह, नानक मत्ता गुरुद्वारे के प्रबंधक बाबा रविन्द्र सिंह, सचिव अजीत पाल सिंह, डॉ कुलविंदर सिंह, जिला सूचना अधिकारी धीरज कार्की, जल संस्थान के सहायक अभियंता पीएन पुनेठा, तहसीलदार ईश्वर सिंह भूमा ने उनका स्वागत किया।

मेले को लेकर पुलिस का तगड़ा बंदोबस्त किया गया है। जगह-जगह पुलिस के जवान तैनात किए गए हैं। मेला क्षेत्र को सीसीटीवी से कवर किया गया है। वही अमृतसर, दिल्ली, आदि स्थानों से सिखों की वीरता एवं शौर्य का प्रदर्शन करने वाले रागी;दाडी जत्थों की यहां धूम शुरू हो गई है। मुख्य मेला 10 जून को होगा गुरु घर में मुख्य ग्रंथि निर्मल सिंह एवं अन्य लोगों द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ की लड़ी शुरू की गई है। दीवान हॉल में गुरु महाराज के जीवन एवं श्रीरीठासाहिब के इतिहास की जानक. ारी भी दी जा रही है।

मेले में पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान राज्यों के अलावा उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड के कई जिलों से तीर्थ यात्री यहां आ रहे हैं। मेले में स्वच्छता, चिकित्सा, पेयजल की पुख्ता व्यवस्था की गई है। रोडवेज द्वारा अतिरिक्त बसों का संचालन किया जा रहा है। इस दफा टनकपुर मार्ग से आने वाले छोटे वाहनों के लिए सुखीढांग से रीठासाहिब मार्ग खोल दिया गया है जिससे तीर्थ यात्रियों की यात्रा की दूरी कम हो गई है। जिलाधिकारी नवनीत पांडे एवं पुलिस अधीक्षक अजय गणपति द्वारा तीर्थ यात्रियों का मेहमान की तरह स्वागत कर उन्हें बेहतर सुविधाएं देने के पहले ही निर्देश दिए जा चुके हैं। तीर्थ यात्रियों के लंगर के लिए यहां 400 से अधिक सेवादार अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

गुरुद्वारा प्रबंधन समिति के अध्यक्ष बाबा सुरेंद्र सिंह एवं बाबा श्याम सिंह द्वारा यहां स्थाई पार्किंग की व्यवस्था करने के लिए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के प्रति आभार व्यक्त किया गया तथा उनके लिए गुरु घर में विशेष अरदास भी की गई। रीठासाहिब को जोड़ने वाले मार्ग में कई स्थानों में सिख संगत द्वारा यात्रियों के लिए लंगर सेवा की जा रही है जिसका तीर्थ यात्री पूरा लाभ उठा रहे हैं। कई स्थानों में जलेबी सेवा, शरबत सेवा, जलजीरा सेवा आदि की जा रही है।

एक नजर

श्री साईं कॉलेज के डी फार्मा छात्रों का रिजल्ट रहा शत- प्रतिशत

शाह टाइम्स संवाददाता

जसपुर। साईं इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज जसपुर के डी फार्मा कोर्स का रिजल्ट शत प्रतिशत रहा डी- फार्मा में अध्ययन छात्रों में डी फार्मा के छात्र अरमान अहमद ने 83.70 % अंक लाकर कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया राज चौहान ने 82.50% प्रतिशत अंक लाकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया अमन सैयद ने 78.19% अंक लाकर तृतीय स्थान प्राप्त किया इसके अतिरिक्त डी फार्मा द्वितीय वर्ष में संजय सिंह रावत 83.54 प्रतिशत अंक लाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया रूपाली जोशी ने 83.36 प्रतिशत अंक लाकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा फौजियां फारूक ने 82.72 प्रतिशत अंक लाकर तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इस अवसर पर कॉलेज के प्रबंधक राजकुमार सिंह डायरेक्टर अवनीश कुमार ने सभी छात्र-छात्राओं को अच्छे अंक लाने की बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की इस मौके पर संस्था के एचओडी मोहम्मद सलमान, शिक्षक मोहित कुमार ,अकरम ,फहीम, लोकेश आदि मौजूद रहे।

राउमावि खूनाबोरा को मिले दो स्मार्ट पैनल

शाह टाइम्स संवाददाता

लोहाघाट। राउमावि खूनाबोरा में दो कक्षाओं के छात्र-छात्राओं हेतु आई क्यूब टेक्नोलॉजी द्वारा स्मार्ट पैनल उपलब्ध कराए गए। प्रधानाचार्य प्रकाश चन्द्र उपाध्याय द्वारा उक्त स्मार्ट पैनलों को रिसीव करने के साथ ही अन्य कक्षाओं हेतु स्मार्ट पैनल उपलब्ध कराने हेतु मांग प्रेषित की गई। इससे पूर्व उपाध्याय द्वारा लगातार स्मार्ट पैनल की आपूर्ति हेतु लगातार संस्था से संपर्क किया जा रहा था। उपाध्याय ने टेक्नीशियन विवेक डबराल सहित उपलब्ध कराने वाली संस्था का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि निश्चित ही आज के बदलते युग में स्मार्ट कक्षाएं छात्र-छात्राओं के लिए अत्यधिक लाभदायक सिद्ध होंगी।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नानकमत्ता में मरीजों की फजीहत

- **पर्ची काउंटर पर कर्मचारी के गायव रहने से मरीजों को करना पडता हैं, लम्बा इंतजार**
- **सीएम पोर्टल पर भी कई बार दर्ज कराई जा चुकी हैं अस्पताल स्टाफ की लापरवाही की शिकायतें**

शाह टाइम्स संवाददाता

नानकमत्ता । नगर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में तैनात कर्मचारियों की घोर लापरवाही के चलते इसका खामियाजा मरीजों को भुगतना पड़ रहा है। यहां पर्चा काउंटर पर तैनात कर्मचारी के काउंटर से गायब रहने के चलते मरीज को पर्चा बनवाने में असुविधाओं का सामना करते हुए देर तक काउंटर पर खड़ा होना पड़ता है, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में पनप रही इस घोर लापरवाही पर संबंधित स्वास्थ्य विभाग के किसी भी अधिकारी द्वारा सुध नहीं ली जा रही है। यहां तैनात कर्मचारियों द्वारा लोगों की नजरों में प्रदेश सरकार की छवि को खराब करने का भी प्रयास किया जा रहा है जबकि प्रदेश की सरकार प्रदेश के लोगों को सरकारी स्तर पर बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने का निरन्तर प्रयास कर रही है।

बता दें की बीते दिवस नानकमत्ता निवासी अमित कुमार द्वारा अस्पताल में कर्मचारियों द्वारा उनके साथ की गई बदसलूकी की शिकायत सीएम पोर्टल पर दर्ज कराई गई थी परंतु शिकायत का निस्तारण न होने के कारण यहां तैनात कर्मचारियों के हौसले और भी बुलंद है। अस्पताल विभाग द्वारा बरती जा रही घोर लापरवाही से यहां इलाज करने वाले मरीजों की भारी फजियत हो रही है। मरीज का कहना है कि यहां इलाज करने पर चिकित्सक द्वार बाहर के मेडिकलों की दवाई पर्चे पर लिखी जाती है, जबकि सरकार द्वारा अस्पताल में मरीजों के लिए सरकारी दवाई मुहैया कराई गई है बावजूद इसके भी चिकित्सकों के द्वारा अच्छे कमीशन के

लालच में बाहर के मेडिकलों की दवाई पर्चे पर लिखी जा रही है। यदि चिकित्सक अस्पताल से दवाइ लिख भी दे तो यहां दवा वितरण काउण्टर पर बैठे कर्मचारी द्वारा मरीजों को दवाइ का स्टोक ना होने दवाइयां कम मिलने का गाना गाया जाता है।

जिले में तैनात मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा इस और अपना ध्यान न देने से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नानकमत्ता में मरीज को सुविधा झेलनी पड़ रही है।

ड्रेनेज मास्टर प्लान का मूल्यांकन करेगी तकनीकी समिति: डीएम

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। जिलाधिकारी नितिन सिंह भदौरिया ने सोमवार को कैंप कार्यालय में जीआईएस आधारित ड्रेनेज मास्टर प्लान की समीक्षा की। बैठक में डीएम ने कंसलटेंट वीकेएस इन्फ्राटेक मैनेजमेंट को वर्ष 2047 की अनुमानित जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए ड्रेनेज मास्टर प्लान की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के निर्देश दिए। डीएम ने बताया कि रुद्रपुर, काशीपुर, खटीमा और सितारगंज शहरों के लिए जीआईएस बेस्ड ड्रेनेज मास्टर प्लान तैयार किया जा रहा है। डीएम ने चारों नगरों के लिए मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में एक तकनीकी समिति गठित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इस समिति में नगर निकायों के अधिकारी, आपदा प्रबंधन अधिकारी (ओसी आपदा) तथा तकनीकी विशेषज्ञों को शामिल किया जाए।

तकनीकी समिति सभी चारों शहरों के ड्रेनेज मास्टर प्लान का गहन मूल्यांकन करेगी और अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी, जिससे आगामी कार्य योजना को प्रभावी रूप से अमल में लाया जा सके। बैठक में सीडीओ मनीष कुमार, एडीएम पंकज उपाध्याय, नगर आयुक्त नरेश चन्द्र दुर्गापाल, ओसी आपदा प्रबंधन गौरव पांडेय, सिंचाई विभाग के अधीक्षण अभियंता पीके दीक्षित, अधिशासी अभियंता एके जौन, बीएस डांगी, आनंद सिंह नेगी, पेयजल निगम के सुनील जोशी सहित कन्सलटेंट कंपनी के विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

स्ट्रीट फूड विक्रेताओं को दिया गया खाद्य सुरक्षा प्रशिक्षण

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। नगर निगम सभागार में सोमवार को स्ट्रीट फूड विक्रेताओं के लिए खाद्य सुरक्षा प्रशिक्षण हुआ। खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा चलाए जा रहे इस निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर में विक्रेताओं को सुरक्षित खाद्य निर्माण और स्वच्छता से जुड़ी अहम जानकारियां दी गईं। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड अथॉरिटी ऑफ इंडिया द्वारा खाद्य सुरक्षा प्रशिक्षण और प्रमाणन प्रमाण पत्र बांटे गए। अब तक तीन दिनों में कुल 180 विक्रेताओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है। अधिकारियों ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य सड़क किनारे खाद्य पदार्थ बेचने वाले विक्रेताओं को स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा के प्रति जागरूक करना है, ताकि उपभोक्ताओं को सुरक्षित और गुणवत्ता युक्त खाद्य सामग्री मिल सके।

ट्रांसपोर्टर से मारपीट करने का आरोप, मुकदमा दर्ज

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। रंजिश के चलते एक ट्रांसपोर्टर पर अपने साथियों के साथ मिलकर दूसरे ट्रांसपोर्ट कारोबारी से मारपीट कर गंभीर रूप से घायल करने का आरोप लगा है। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर रविवार को पुलिस ने एक नामजद और अज्ञात आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। रॉयल इंकलेव बागवाड़ा निवासी त्रिलोक सिंह पुत्र जगदीश प्रसाद ने पुलिस को दी तहरीर में कहा कि वह ट्रांसपोर्ट का कारोबार करता है। बीते सात जून रात साढ़े नौ बजे वह सिडकुल से कार्य कर वापस बाइक से अपने घर लौट रहा था। रास्ते में अटरिया पुल के पास मेट्रोपोलिस सिटी निवासी ट्रांसपोर्टर मनोज कुमार शर्मा ने अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर लोहे की रॉड से उनके सिर पर वार कर दिया।

इससे वह लहूलुहान होकर सड़क पर गिर गए। लोगों के आने पर हमलावर को गले में पहनी आठ तोले की चांदी की चेन छीनकर जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए। आरोप है कि मनोज उनसे ट्रांसपोर्ट के कार्य को लेकर रंजिश रखता है। वहीं थाना ट्रांजिट कैंप प्रभारी मोहन चंद्र पांडे ने बताया कि आरोपी मनोज और अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जुआ खेलने का विरोध करने पर मारा चाकू

शाह टाइम्स संवाददाता

किच्छा। जुआं खेलने का विरोध करने पर आरोपी ने एक व्यक्ति को चाकू मारकर घायल कर दिया। पुलभट्टा पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया है। फईम खान पुत्र इब्राहीम खान निवासी इन्द्रानगर सिरौली ने पुलभट्टा पुलिस को तहरीर देकर बताया कि बीती 7 जून को कुछ लोग मैदान में जुआ खेल रहे थे। उसके भाई नईम के विरोध करने पर सलीम पुत्र मुन्ने ने उनके साथ अभद्र व्यवहार शुरू कर दिया। लोगों के बीचबचाव करने पर मामला शांत हो गया। भाई दोपहर को अपने काम पर जा रहे थे। इस दौरान घात लगाए सलीम ने चाकू से उनके पेट पर वार कर दिया।

मुकदमा दर्ज होने से भड़की आजाद समाज पार्टी और भीम आर्मी

- **विधायक के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज करने को डीएम को सौंपा ज्ञापन**

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। विधायक शिव अरोरा के समर्थक द्वारा आजाद समाज पार्टी के जिलाध्यक्ष सतेंद्र कुमार के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाए जाने से भीम आर्मी और आजाद समाज पार्टी के कार्यकर्ताओं में आक्रोश फैल गया। कार्यकर्ताओं ने जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर सांकेतिक प्रदर्शन किया और डीएम को ज्ञापन सौंपते हुए विधायक के खिलाफ भी कार्रवाई की मांग की।

भारत एकता मिशन एवं भीम आर्मी के जिला अध्यक्ष अधिवक्ता सौरभ कुमार ने आरोप लगाया कि ईद से दो दिन पहले विधायक शिव अरोरा ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट कर विशेष समुदाय को निशाना बनाते हुए अमर्यादित और भड़काऊ भाषा का प्रयोग किया। उन्होंने कहा कि विधायक के इस बयान से सांप्रदायिक तनाव फैल सकता था। जब आजाद समाज पार्टी के जिलाध्यक्ष सतेंद्र कुमार ने इसका जवाब देते हुए सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया दी, तो पुलिस ने एकतरफा कार्रवाई करते हुए केवल सतेंद्र कुमार के खिलाफ ही मुकदमा दर्ज कर लिया।

ज्ञापन के माध्यम से कार्यकर्ताओं ने मांग की कि विधायक पर भी सां. प्रदायिक उकसावे और भड़काऊ बयानबाजी के आरोप में मुकदमा दर्ज किया जाए। सौरभ कुमार ने चेतावनी दी कि यदि विधायक के खिलाफ जल्द कार्रवाई नहीं की गई, तो सभी धर्मों के लोगों को साथ लेकर उग्र आंदोलन छेड़ा जाएगा। विरोध प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने प्रशासन की निष्पक्षता पर भी सवाल उठाए और कहा कि कानून सभी के लिए बराबर होना चाहिए। यदि किसी नेता की बयानबाजी से समाज में तनाव फैलता है, तो उसकी पार्टी या पद नहीं, बल्कि उसके बयान की संवेदनशीलता देखी जानी चाहिए। प्रदर्शन में राजपाल, राकेश राठौर, सुरेश चंद्र गौतम, सुरेश कुमार, विवेक कुमार जाटव, ताहिर हुसैन, अमित कुमार, लेखराज गौतम सहित बड़ी संख्या में भीम आर्मी और आजाद समाज पार्टी के कार्यकर्ता शामिल रहे।

भाजपा से निष्कासित सतीश चुघ बन रहे भाजपा के हमदर्द

- **क्षेत्रीय विधायक पर लगाया कांग्रेस का एजेंट बनकर काम करने का आरोप**

शाह टाइम्स संवाददाता

गदरपुर। क्षेत्रीय विधायक पर जुबानी हमला करते हुए गूलरभोज नगर पंचायत अध्यक्ष सतीश चुघ ने कई गंभीर आरोप लगाएं उन्होंने क्षेत्रीय विधायक पर कांग्रेस का एजेंट बनकर काम करने का आरोप लगाते हुए जमकर भड़ास निकाली आपको बता दें कि भाजपा के खिलाफ निकाय चुनाव में सतीश चुघ ने चुनाव लड़ा था, जिसको संज्ञान में लेते हुए भाजपा हाई कमान ने सतीश चुग को भाजपा से 6 साल के लिए निष्कासित कर दिया था। हालांकि सतीश चुग चुनाव जीतने में कामयाब रहे थे अब फिर से पार्टी में शामिल होने के लिए सूबे के मुख्यमंत्री की जमकर तारीफ भी कर रहे हैं और उधर बीजेपी से गदरपुर विधायक अरविंद पांडे के ऊपर कई गंभीर आरोप भी लगा रहे हैं।

आखिर कौन है जिसकी शह पर सतीश चुघ एक तरफ भाजपा विधायक पर आरोप लगा रहे हैं तो दूसरी तरफ भाजपा के कई नेताओं की तारीफ करते नजर आ रहे हैं।

आपको बता दें कि सोमवार को गूलरभोज नगर पंचायत अध्यक्ष सतीश चुघ ने अपने कार्यालय पर एक पत्रकार वार्ता का आयोजन करते हुए एक तरफ भाजपा के विधायक पर कई गंभीर आरोप लगाए तो वहीं दूसरी ओर भाजपा के कई पदाधिकारी की जमकर तारीफ की राजनीतिक जानकारों का कहना है कि आखिर किसने इन्हें इतना हक दे दिया कि एक नगर पंचायत अध्यक्ष होने के बाद दोहरा मापदंड अपना रहे हैं। एक तरफ भाजपा के विधायक को गलत बता रहे हैं तो दूसरी ओर भाजपा की तारीफ कर रहे हैं जो खुद बीजेपी से 6 साल के लिए निष्कासित हैं। आखिर इन सब बातों से क्या फायदा लेना चाहते हैं कहीं दोबारा से पार्टी जॉइनिंग करने के लिए यह इनकी सोची समझी साजिश तो नहीं यह तो आने वाला समय ही बताएगा।

नगर पंचायत अध्यक्ष ने बताएं विकास कार्य

गदरपुर। गूलरभोज के नगर पंचायत अध्यक्ष सतीश चुग ने नगर पंचायत में हो रहे विकास कार्यों से अवगत कराते हुए कहा कि जल्द ही क्षेत्र में करीब 6 फीट की मूर्ति के साथ भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई चौक व सुभाष चंद्र बोस के नाम से चौक बनने जा रहा है। क्षेत्र में राजा जगत देव, जनरल बिपिन रावत, शहीद भगत सिंह की मूर्ति व अन्य महापुरुषों की मूर्ति की स्थापना की जाएगी और महाराजा सुहेल देव राजभर के नाम से स्मृति द्वारा भी बनाया जाएगा। उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की जमकर तारीफ करते हुए बताया कि प्रदेश में भाजपा सरकार विकास की गंगा बहा रही है। उन्होंने बताया कि नगर पंचायत गूलरभोज क्षेत्र में विकास कार्यों में कमी नहीं आने दी जाएगी।

बीजेपी अरविंद पांडे को टिकट देगी, तो फिर उन्हें चुनाव लड़ाएंगे: सतीश चुघ

गदरपुर। गूलरभोज नगर पंचायत अध्यक्ष सतीश चुघ के एक वायरल बयान ने लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया है। जिस बयान को देखने पर लग रहा है कि गुस्सा भी तुम्हीं से हैं और चुनाव भी तुम्हीं को लड़ाएंगे जी हां। उन्होंने गदरपुर विधायक अरविंद पांडे पर कई गंभीर आरोप भी लगाए और पत्रकारों के पूछे जाने पर की भारतीय जनता पार्टी अगर फिर 2027 में अरविंद पांडे को फिर टिकट देती है तो आप की क्या रूपरेखा रहेगी। इस पर सतीश चुघ ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी अगर अरविंद पार्टी को फिर 2027 में विधानसभा चुनाव में टिकट देती है तो हम अरविंद पांडे को विधानसभा का चुनाव लड़ाएंगे और हम पार्टी के साथ हैं जी हां यह बयान सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है और काफी लोग उसे देख भी रहे हैं। आपको बता दें कि बाजपुर/गदरपुर से भारतीय जनता पार्टी से विधायक अरविंद पांडे पांच बार के विधायक रह चुके हैं और विधानसभा में उन्होंने अपनी अच्छी पैठ भी बना रखी है। भाजपा के एक कार्यकर्ता ने बताया कि गदरपुर को विशेष पहचान दिलाने में अरविंद पांडे का अहम योगदान रहा है और विधानसभा के लोग उन्हें पसंद भी करते हैं, जिससे यह माना जा रहा है कि आने वाले चुनाव में फिर भारतीय जनता पार्टी उन्हें एक बार मौका देगी और यह सीट भारतीय जनता पार्टी के खाते में आएगा।

नेचर गाइड एसोसिएशन ने उठाई समस्याओं को दूर करने की मांग

- **कार्बेट टाइगर रिजर्व के डिप्टी डायरेक्टर को दिया ज्ञापन**

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। जिम कॉर्बेट नेचर गाइड एसोसिएशन ने गर्जिया पर्यटन जोन की समस्याओं को दूर करने के सम्बन्ध में एक ज्ञापन कार्बेट टाइगर रिजर्व के डिप्टी डायरेक्टर राहुल मिश्रा को एक ज्ञापन दिया।दिए गए ज्ञापन में उन्होंने कहा कि कॉर्बेट का गर्जिया पर्यटन जोन को खुले हुए काफी समय हो गया है।

उन्होंने बताया कि पूर्व में भी कई बार पत्रों, मीटिंग व सूचना के अधिकार के माध्यम से गर्जिया पर्यटन जोन की समस्याएं दूर करने के लिए कई बार अवगत कराया गया है।लेकिन हमेशा से ही पार्क प्रशासन पाखरों जांच, कोर्ट कार्य में व्यस्तता, सरकार द्वारा बिजरानी रेंज के बजट पर पूर्ण प्रतिबंध का बहाना देकर कार्य अभी तक नहीं किए गए है।बताया कि कई बार गर्जिया पर्यटन जोन के नेचर गाइडों ने श्रमदान कर गर्जिया जोन के रास्तों का निर्माण किया है और कई बार लाखों रूपए जमा कर, अपनी जमापूंजी इकठ्ठा कर रास्तों को सही किया गया है, जिससे सफारी सुचारू रूप से चल सके।नेचर गाइडों के द्वारा जब विभाग से गर्जिया जोन के रास्तों को सही करने के लिए बोला तो विभाग के द्वारा कहा गया कि गर्जिया जोन के रास्ते सही करने के लिए बजट नहीं आ रहा है तो विभाग द्वारा पैसे नहीं होने के कारण गर्जिया जोन के गाइडों द्वारा लाखों रुपए जमा करके अपने जमापूंजी से काम कराया गया, जिसकी फोटो पूर्व व वर्तमान बिजरानी रेंजर, पार्क वार्डों एवं उच्च अधिकारियों के द्वारा अपने स्टाफ को भेजकर ली गई थी।इस बार लगातार काम नहीं होने से नेचर गाइड फिर से पैसे जमा करने में असमर्थ हैं।गर्जिया पर्यटन जोन में काफी समस्याएं हैं।

रिंगोरा गेट के शौचालय पर पानी, हैंडवाश, डस्टबिन, रूम फ्रेशनर व साफ सफाई नियमित समय से करवाई जाए।रिंगोरा गेट पर साफ पीने के पानी की व्यवस्था की जाए।रिंगोरा गेट पर, गेट के अंदर नेचर गाइडों के टू व्हीलर एवं फोर व्हीलर के कवर्ड पार्किंग की व्यवस्था की जाए।रिंगोरा गेट पर नेचर गाइडों के लिए गाइड हट की व्यवस्था की जाए और जब तक गाइड हट बनती है तब तक वैकल्पिक व्यवस्था (टीन शेड) तत्काल प्रभाव से की जाए।रिंगोरा जोन में रास्तों में खोचर या बजरी आवश्यकतानुसार बिछाई जाए जिससे पर्यटन जोन बरसात में भी कार्य करते रहे। यदि किसी तरह की घटना होती है तो उसके जिम्मेदार संबंधित अधिकारी और पार्क प्रशासन होगा।रिंगोरा जोन में, गेट इंचार्ज डिप्टी रेंजर पद वाले व्यक्ति को ही बनाया जाए। जो विभाग द्वारा निर्धारित वर्दी, समय से गेट पर पहुंचे व सफारी पूरी होने तक गेट पर रहे।जिम कॉर्बेट नेचर गाइड एसोसिएशन को भी पत्राचार के माध्यम से अन्य गाइड एसोसिएशन, जिप्सी एसोसिएशन, होटल एसोसिएशन की तरह पत्राचार के माध्यम से सूचना दी जाएं। पूर्व की तरह सौतेला व्यवहार या किसी तरह का भेदभाव पार्क प्रशासन को शोभा नहीं देता।एसोसिएशन के सदस्यों के लिए अन्य एसोसिएशन की तरह, गेट पर मेडिकल चेकअप की व्यवस्था की जाए।पूर्व के मेडिकल चेकअप में कार्बेट प्रशासन के द्वारा किए गए सौतेले व्यवहार से नेचर गाइड दुखी हैं। कहा कि हर दिन ऑनलाइन परमिट,

पर्यटक के पहचान पता व गाइड ऑनलाइन फीस की रिंगोरा गेट पर मोबाइल नेटवर्क की व्यवस्था ना होने के कारण सभी को अव्यवस्था का सामना करना पड़ता है इसलिए रिंगोरा गेट पर वैकल्पिक मोबाइल नेटवर्क की व्यवस्था की जाये।गर्जिया पर्यटन जोन में नए प्रस्तावित रास्तों को बनाया जाए पूर्व में इस बारे में जब तीन रेंजरों से बात करी गई तो उनके द्वारा बताया गया की अभी काम चल रहा है। पता नहीं ये काम कब तक चलते रहेगा। उन्होंने कहा कि किसी डिप्टी रेंजर पद के व्यक्ति को ही रिंगोरा गेट की जिम्मेदारी दी जाए जो निर्धारित वर्दी में, समय से गेट पर पहुंचे व सफारी पूरी होने तक गेट पर रहे। यदि इस घटना के बाद भी रिंगोरा गेट पर किसी तरह की समस्या या सफारी के दौरान कोई घटना होती है तो उसके जिम्मेदार पार्क प्रशासन होगा। वहीं डिप्टी डायरेक्टर राहुल मिश्रा ने जल्द कार्य करने का आश्वासन दिया है।इस दौरान जिम कार्बेट नेचर गाइड एसोसिएशन कॉर्बेट के अध्यक्ष विनोद बुधानी, विजय सिंह रावत ,राजेश नेगी,नंदन रौतेला ,चंदशेखर सती ,हरि शंकर देव आदि मौजूद रहे।

पेड़ पर फंदे से लटका मिला वृद्ध का शव

शाह टाइम्स संवाददाता

किच्छा। पंतनगर विवि के औषधीय एवं सुगंध पौध अनुसंधान केंद्र (एमआरडीसी) के सामने सड़क किनारे एक वृद्ध का शव पेड़ पर फंदे से लटका मिला। उसकी पहचान तीन दिन पूर्व लापता हुए टीडीसी कॉलोनी निवासी 62 वर्षीय रामआसरे पुत्र स्व. छट्टू प्रसाद के रूप में हुई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

सोमवार सुबह सड़क से गुजर रहे कुछ राहगीरों ने एमआरडीसी के सामने सड़क किनारे एक व्यक्ति को पेड़ पर फंदे से लटका देखा। उन्होंने इसकी सूचना सुरक्षा कर्मियों सहित पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर शिनाख्त के प्रयास शुरू किए।

कुछ देर में व्यक्ति की शिनाख्त टीडीसी कॉलोनी हल्दी निवासी रामआसरे पुत्र छट्टू प्रसाद के रूप में हुई। रामआसरे दो वर्ष पूर्व टीडीसी से सेवानिवृत्त हुए थे। वह बीते शुक्रवार रात 10 बजे घर वालों से टहलने के लिए कहकर घर से निकले थे। उन्हें काफी जगह खोजा गया, लेकिन कुछ पता नहीं चला। पुलिस के अनुसार, प्रथमदृष्ट्या वृद्ध का आत्महत्या करना प्रतीत होता है। शव तीन दिन पुराना बताया जा रहा है। वृद्ध के परिवार में दो पुत्र हैं, जिनका रो-रोकर बुरा हाल है।

कांग्रेस की अहम बैठक, पर्यवेक्षक का किया स्वागत

थत्यूड़ (टिहरी)। आगामी पंचायत चुनावों की रणनीति तय करने के उद्देश्य से ब्लॉक कांग्रेस कमेटी की एक महत्वपूर्ण बैठक थत्यूड़ में आयोजित की गई। इस अवसर पर धनोल्टी विधानसभा के पर्यवेक्षक विजय सिंह गुसाईं का कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। कार्यकर्ताओं ने पुष्पगुच्छ और माला पहनाकर गुसाईं का अभिनंदन किया।

बैठक में वक्ताओं ने कहा कि संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने के लिए की गई नई नियुक्तियां पार्टी के हित में अहम साबित होंगी। उन्होंने विश्वास जताया कि इससे विधानसभा स्तर पर कांग्रेस को नई ऊर्जा और मजबूती मिलेगी।

बैठक में पंचायत चुनावों की रणनीति पर गहन मंथन हुआ। इस दौरान तय किया गया कि पार्टी कार्यकर्ता बूथ स्तर तक सक्रियता दिखाते हुए अभी से चुनावी तैयारियों में जुट जाएं। इस मौके पर पर्यवेक्षक विजय सिंह गुसाईं ने राज्य सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा, "भाजपा सरकार भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी हुई है। राज्य में कानून-व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं रह गई है। आए दिन हत्या जैसे गंभीर अपराध हो रहे हैं और प्रशासन मूकदर्शक बना हुआ है।"ब्लॉक अध्यक्ष सुरेंद्र सिंह रावत ने सरकार पर पंचायत चुनाव न कराने के आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि, "प्रदेश सरकार पंचायत चुनाव टालकर लोकतांत्रिक पंचायतीराज व्यवस्था की हत्या कर रही है, जो बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है।"

श्रद्धालुओं के लिए दो अतिरिक्त शटल सेवाएं होंगी

कैंचीधाम का स्थापना दिवस 15 जून को, व्यवस्थाओं को लेकर डीएम ने की बैठक

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। जिलाधिकारी वंदना सिंह ने सोमवार को कैंची धाम मंदिर परिसर में 15 जून रविवार को होने वाले कैंची धाम स्थापना दिवस मेले के आयोजन के सम्बन्ध में अधिकारियों एवं मंदिर समिति के सदस्यों के साथ बैठक की। बैठक में उन्होंने मेले को सुव्यवस्थित व सफलतापूर्वक संपन्न कराए जाने हेतु विभिन्न व्यवस्थाओं पर चर्चा करते हुए किए जा रहे कार्यों की जानकारी लेते अधिकारियों को मेले को संपन्न कराए जाने हेतु दिए गए दायित्वों के बारे में आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कैंची धाम का यह आयोजन हमारे जिले व राज्य के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है, इसमें लाखों की संख्या में भक्त श्रद्धालु बाबा जी के दर्शन को आते हैं इसलिए किसी भी श्रद्धालु को कोई परेशानी न हो। उन्होंने श्रद्धालुओं के वाहनों हेतु विभिन्न स्थानों में बनाई गई पार्किंग स्थलों में

आवश्यक व्यवस्था, पेयजल, विद्युत आपूर्ति तथा शौचालय व सफाई व्यवस्था आदि व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में जानकारी लेते इस हेतु तैनात सम्बंधित अधिकारियों को 12 जून वीरवार तक सभी व्यवस्था पूर्ण करने के निर्देश दिए।

बैठक में मेले के दौरान सफाई व्यवस्था के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने मेला परिसर में नियमित साफ सफाई करने हेतु अतिरिक्त कर्मचारियों की तैनाती, शिप्रा नदी में नियमित साफ सफाई करने, सुरक्षा हेतु नदी किनारे तारबाड करने, सड़कों की साफ सफाई आदि की उचित व्यवस्था करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। जिलाधिकारी ने लोनिवि के अधिकारियों को नैनीबैंड- सेनिटोरियम बाई पास और भीमताल बाईपास स्थित निर्माणाधीन नहर कवरिंग को जल्द पूरा करने तथा सभी पार्किंग स्थानों सहित मंदिर के समीप बनाए गए पाथवे की समय पर बैरिकेडिंग करने के साथ ही जरुरी स्थानों में साइनेज लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने लोनिवि के अधिशासी अभियंता को कैंची धाम में निर्माणाधीन पाथवे को तीन दिन के भीतर कार्य पूरा करने को कहा। उन्होंने कहा कि सभी पार्किंग स्थलों में साफ सफाई तथा शौचालय पानी बिजली आदि की व्यवस्था सुचारु हो इस हेतु प्रत्येक स्थान पर कार्मिक तैनात कर उनकी सूची उपलब्ध कराई जाय। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि नैनीताल व भवाली तथा भीमताल और कैंची धाम तक सड़क मार्ग में कहीं भी फूड वैन तथा ठेले पूर्ण रूप से बंद रहेंगे। बताया कि कोई सेवादार सेवा देना चाहता है तो वह अपनी भूमि या पार्किंग स्थलों में सेवा दे सकता है इसके लिए पूर्व में उपजिलाधिकारी कैंची धाम से अनुमति लेनी होगी। इस दौरान जिलाधिकारी ने आरटीओ से मेले के दौरान शटल सेवा में प्रयुक्त होने वाले वाहनों के विस्तृत जानकारी ली। इसके अतिरिक्त जिलाधिकारी ने बुजुर्ग दिव्यांग और बीमार व्यक्तियों को शटल सेवा के माध्यम से मंदिर गेट तक पहुंचाने के लिए 2 अतिरिक्त शटल वाहनों की व्यवस्था कराने के भी निर्देश परिवहन विभाग को दिए। उन्होंने ईओ भवाली व जिला पंचायत को जगह जगह पर मोबाइल शौचालय लगाने के भी निर्देश देते हुए उनमें एक एक कर्मचारी तैनात करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि भवाली नगर पालिका के कूड़ा वाहन द्वारा नियमित रूप से सुबह शाम मंदिर क्षेत्र एवं मार्ग से कूडे उठान कर उसका निस्तारण किया जाएगा। विद्युत व्यवस्था सुचारु हेतु विद्युत विभाग के अधिकारियों को मेला क्षेत्र सहित सभी पार्किंग स्थलों में विद्युत व्यवस्था विशेष रूप से रात्रि में सुचारु रखने के निर्देश दिए। बैठक में एसएसपी पीएन मीणा, एडीएम विवेक राय व पी आर चौहान, सचिव प्राधिकरण विजय नाथ शुक्ल समेत सभी उपजिलाधिकारी समेत विभागों के अधिकारी, मंदिर ट्रस्ट के मंजुल कुमार जोशी, आलोक चौपड़ा, शैलेश शाह, पवन रघुवंशी तथा प्रबंधक प्रदीप शाह आदि मौजूद रहे।

शार्ट कट मार्ग रहेंगे बंद

नैनीताल। जिलाधिकारी वंदना सिंह ने बताया कि कैंची धाम के समीप शार्ट कट मार्ग (छोटा रास्ता) से आवाजाही पूर्ण रूप से बंद रहेगी जिसमें कैंची धाम बैंड से ऊपर से कैंची धाम तक गेट तक शार्ट मार्ग में भक्तों की आवाजाही पूर्ण रूप से बंद रहेगी जिससे भक्तों की लाइन सुचारू रूप से चलते रहे।

दो पहिया वाहन बंद रहेंगे

नैनीताल। डीएम वंदना सिंह ने कहा कि पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी टैक्सी या निजी वाहन भवाली तक ही आएंगे, साथ ही उक्त दो पहिया वाहनों के लिए पार्किंग व्यवस्था नगर पालिका मैदान भवाली में की जाएगी। यहां से भक्त शटल सेवा के माध्यम कैंची धाम को जा सकेंगे।

पालिका-कंटोनमेंट में तनातनी

चिड़ियाघर में गाड़ियों से टैक्स वसूली पर टकरा

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। नैनीताल में नगर पालिका परिषद और कैंटोनमेंट बोर्ड के बीच चिड़ियाघर क्षेत्र में गाड़ियों से टैक्स लिए जाने को लेकर चल रहा विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है।

बताते चले कि नगर पालिका परिषद ने अलका होटल क्षेत्र से चिड़ियाघर तक पर्यटकों को लाने और ले जाने के लिए शटल वाहनों का टेंडर जारी किया मगर कैंटोनमेंट बोर्ड के अधिकारी नगर पालिका द्वारा किए गए टेंडर को नियम विरुद्ध और आपराधिक बता रहे हैं। मामले में कैंटोनमेंट बोर्ड के सीईओ वरुण कुमार का कहना है नगर पालिका ने जिस स्थान पर गाड़ियों को रोका जा रहा है वह भूमि कैंटोनमेंट बोर्ड की है लिहाजा उस क्षेत्र के लिए टेंडर नगर पालिका द्वारा नहीं किया जा सकता अगर नगर पालिका कैंटोनमेंट बोर्ड की भूमि पर कोई टेंडर करती है तो उसके लिए पालिका को टेंडर की राशि का 30 फीसदी देना होगा, जिसके बाद ही नगर पालिका कैंटोनमेंट बोर्ड की संपत्ति पर कोई कार्य कर सकती है जबकि नगर पालिका परिषद के अधिकारियों का कहना है कई वर्षों से नगर पालिका इसी तरह से टैंडर करती आ रही है और इस बार भी उनके द्वारा शटल सेवा का टेंडर जारी किया है। फिलहाल दोनों विभागों के बीच लंबे समय से चली आ रही खींचतान के बाद सोमवार को नगर पलिका और कैंटोनमेंट बोर्ड के अधिकारियों की बैठक का आयोजन किया गया ताकि दोनों विभागों के बीच चल रहे विवाद को समाप्त किया जाए लेकिन घंटों चली बैठक के बाद भी कोई नतीजा नहीं निकाला। मामले में पालिकाध्यक्ष डा. सरस्वती खेतवाल ने कैंटोनमेंट बोर्ड के अधिकारियों से कहा नगर पालिका द्वारा लिए जा रहे टैक्स को लेकर अपने अधिवक्ता से विधिक सलाह लेगी जिसके बाद फैसला किया जाएगा कि नगर पालिका द्वारा कैंटोनमेंट बोर्ड को हिस्सेदारी देनी है या और कोई कार्य किया जाना है। बैठक के दौरान अधिशासी अधिकारी (द्वितीय) विनोद जीना समेत अपेक्षा बिष्ट, अजीत कुमार, बहादुर सिंह बिष्ट,पालिका सभासद मनोज शाह जगाती, मुकेश जोशी, पूरन सिंह बिष्ट, काजल आर्य, राकेश कुमार, रमेश प्रसाद, सपना बिष्ट, गजाला कमाल, गीता उप्रेती, लता दुटी तथा जितेंद्र पांडे समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

पर्यटकों से लेकसिटी पैक, जाम से लोग हलकान

नैनीताल। सरोवर नगरी नैनीताल में जहां इन दिनों ग्रीष्मकालीन पर्यटन सीजन के चलते पर्यटकों की वजह से खूब रौनक देखने को मिल रही है वहीं दूसरी ओर पर्यटक वाहनों से जाम लगने की वजह से आफत खड़ी हो जा रही है। हालांकि पुलिस प्रशासन की ओर से यातायात व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए पूरी कोशिश की जा रही है अलबत्ता वाहनों की अधिकता से जाम लगना अब आम बात हो चली है। देश के विभिन्न शहरों से नैनीताल पहुंचे पर्यटकों ने सोमवार को नैनी झील में नौका विहार करने के साथ ही नगर तथा आसपास के दर्शनीय स्थलों में खूब मौज मस्ती की। पर्यटकों की बढ़ती संख्या की वजह से इन दिनों विभिन्न पर्यटन कारोबार से जुड़े कारोबारियों को भी काफी राहत मिल रही है। संभावना जताई जा रही है कि आने वाले दिनों में पर्यटकों की संख्या में और अधिक इजाफा होगा। नगर के साथ ही समीपवर्ती भवाली, भीमताल, नौकुचियाताल, सातताल, पंगोट, किलबरी, घोड़ाखाल, कैंची समेत अन्य दर्शनीय स्थलों में पर्यटकों की भीड़ भाड़ से इन दिनों मेले जैसा माहौल नजर आ रहा है।

महिला अपराधों में लिप्त हैं भाजपा नेता: खष्टी बिष्ट

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। उत्तराखंड महिला कांग्रेस की नैनीताल जिलाध्यक्ष और वरिष्ठ नेत्री खष्टी बिष्ट ने राज्य में बढ़ते महिला अपराधों को लेकर भाजपा सरकार पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि देवभूमि में बलात्कार और हत्या जैसी घटनाएं आम हो गई हैं और भाजपा के नेता व नेत्रियां खुद ऐसे मामलों में लिप्त पाई जा रही हैं। बिष्ट ने हरिद्वार में भाजपा महिला कार्यकर्ता द्वारा नाबालिग बेटी के साथ सामूहिक दुष्कर्म कराए जाने के मामले को शर्मनाक बताया और कठोर सजा की मांग की। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का नारा देती है, लेकिन बेटियों को सुरक्षित रखने में किल रही है। उन्होंने दावा किया कि उत्तराखंड बलात्कार और हत्या जैसे अपराधों में देश में अग्रणी होता जा रहा है, और अंकिता भंडारी हत्या केस में भी अब तक न्याय अधूरा है। बिष्ट ने कहा कि महिला कांग्रेस पीड़ित बेटियों के लिए न्याय की लड़ाई लड़ेगी और महिला अपराधों पर सरकार की चुप्पी और किलता का विरोध जारी रहेगा।

जाम की समस्या से निजात दिलाई जाए: मनोज शर्मा

शाह टाइम्स संवाद्दाता

भीमताल। भीमताल विधानसभा से वरिष्ठ कांग्रेस नेता मनोज शर्मा ने काठगोदाम से लेकर भवाली तक भीषण जाम की समस्या पर गहरी नाराज़गी जताते हुए सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि वर्षों से जारी जाम से आम लोगों का जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। मनोज शर्मा ने बयान जारी कर कहा कि किसानों के फल-सब्जी समय पर मंडियों तक नहीं पहुंच पा रहे, जिससे उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। स्कूल-कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों की पढ़ाई, मरीजों का इलाज और आम जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त है। उन्होंने कल एक

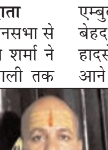

एम्बुलेंस में फंसे मरीज की मौत को बेहद दुखद बताते हुए कहा कि ऐसे हादसे अब आम हो चुके हैं। बाहर से आने वाले पर्यटक भी परेशान होकर उत्तराखंड की खराब छवि लेकर लौट रहे हैं। कांग्रेस नेता ने कहा कि डबल इंजन सरकार, केंद्रीय मंत्री, 5 सांसद होने के बावजूद इस हाईवे की दशा जस की तस है। वीआईपी मूवमेंट के लिए जीरो ज़ोन बनाया जाता है, लेकिन आम जनता को राहत नहीं मिलती। उन्होंने मांग की कि सरकार तत्काल बायपास निर्माण और ट्रैफिक की ठोस योजना बनाए। साथ ही चेतावनी दी कि यदि सरकार समाधान नहीं निकालती, तो क्षेत्रवासी स्वयं बायपास बनाकर आंदोलन छेड़ेंगे।

दो दिन से धधक रहा है बिनकोट का जंगल

बागेश्वर। धरमघर रेंज स्थित जोगाबाड़ी गुफा के ठीक ऊपर वाला बिनकोट का जंगल दो दिन से धधक रहा है। उधर वन विभाग पूरी तरह बेखबर है। गुफा देखने आ रहे पर्यटकों के साथ ही स्थानीय लोग परेशान हैं। ग्रामीणों का कहना है कि आग लगने के कारण जंगली जानवर सुरक्षित स्थान ढूंढने के चक्कर में गांव की ओर पहुंच रहे हैं। इससे ग्रामीण दहशत में हैं। उन्होंने वन विभाग से जंगल की आग बुझाने की मांग की है। कालिका मंदिर के पुजारी अर्जुन माजिला ने बताया कि रविवार अपराह्न एक बजे से बिनकोट के जंगल में आग लगी हुई है। आग डेढ़ किमी की रेंज में फैली हुई है। चीड़ का जंगल होने तथा हवा चलने के कारण आग पर काबू पाना मुश्किल हो रहा है। उन्होंने अकेले ही आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन असफल रहे। माजिला ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधरोपण के नाम पर लोग एकत्रित होते हैं, लेकिन हरा-भरा जंगल जब सुलगता है तो कोई भी आग बुझाने नहीं आता है। आग से वन संपदा को खासा नुकससान हो रहा है। उन्होंने बताया कि जोगाबागड़ी गुफा के ठीक ऊपर का जंगल आग लगने से गुफा देखने आने वाले पर्यटक भी परेशान हैं। जंगली जानवर अपनी जान बचाने के लिए रिहायशी इलके की ओर दौड़ रहे हैं। इससे ग्रामीणों का जीवन भी खतरे में आ गया है। उन्होंने वन विभाग से जल्द आग पर काबू पाने की मांग की है। लगातार जल रहे जंगल से वातावण में भी धुंध छाने लगी है। लोगों को आंखों में जलन महसूस होने लगी है। इधर वन क्षेत्राधिकारी प्रदीप कांडपाल ने बताया के सूचना के बाद वन कर्मी आग बुझाने के लिए रवाना हो गए हैं।

एक नजर

विधायक ने राज्यपाल से की मुलाकात

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेनि.) से सोमवार को राजभवन में नैनीताल विधान सभा की विधायक सरिता आर्या ने शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान राज्यपाल ने उनसे नैनीताल विधान सभा में हो रहे विकास कार्यो के बारे में जानकारी हासिल की। विधायक ने नैनीताल शहर समेत पूरी विधान सभा में वर्तमान में चल रहे विकासात्मक कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। इसके अलावा विधायक सरिता आर्या ने नैनीताल शहर में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे कार्यो के बारे में बताया। इससे पूर्व विधायक सरिता आर्या ने पुष्प गुच्छ भेंट कर राज्यपाल का स्वागत किया।

अनूठा पौधारोपण आंदोलन जारी

नैनीताल। संयुक्त कर्मचारी महासंघ कुमाऊं गढ़वाल मंडल विकास निगम के प्रांतीय आवाहन पर नियमितीकरण नियमावली कट ऑफ डेट 2025 को शीघ्र जारी करने को लेकर राज्य में किया जा रहा अनूठा पौधारोपण आंदोलन सोमवा को 339वें दिन भी जारी रहा। महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष दिनेश गुरुरानी के नेतृत्व में पर्यटकों को पौधरोपण कार्यक्रम से जोड़ने के तहत स्लोगन देवभूमि में पर्यटक बनकर आईए पौधारोपण कर पर्यावरण मित्र बनकर जाइए के तहत सोमवार को पर्यटकों ने पौधरोपण किया, वहीं इस आंदोलन से विवाह समारोह को जोड़ते हुए दिनेश गुरुरानी की पहल पर एक पौधा धरती मां के नाम के तहत रई पिथौरागढ़ निवासी त्रिलोकी नाथ चौसाली व पुष्पा चौसाली के पुत्र मोहित व गणकोट पिथौरागढ़ निवासी स्वर्गीय षष्ठी बल्लभ उपाध्याय व शांति उपाध्याय की पुत्री मोनिका ने परिणय सूत्र में बंधने पर परिणय पौध लगाया। दिनेश गुरुरानी ने उन्हें शपथ दिलाई। मोहित व मोनिका ने कहा कि वह अपनी हर सालगिरह पर पौधारोपण करेंगे। विवाह समारोह में शामिल सभी ने इस अनूठे कार्यक्रम की सराहना की। इस अवसर पर सेवानिवृत अध्यापक भुवन चंद्र भट्ट समेत केएस धामी तथा हर सिंह सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

कार्यपरिषद के सदस्यों की जीत पर हर्ष जताया

नैनीताल। कुमाऊं विवि शिक्षक संघ (कूटा) ने कुविवि के कार्य परिषद के चुनाव में डा. सुरेश डालाकोटी, अरविंद सिंह पडियार तथा एडवोकेट बहादुर पाल और एडवोकेट केवल सती की जीत पर खुशी जताते हुए उन्हें बधाई दी है। कूटा ने इन चारों सदस्यों की जीत को कुमाऊं विश्वविद्यालय के लिए एक सकारात्मक कदम बताया है और कहा है कि इनकी भागीदारी से विश्वविद्यालय के विकास में नई दिशा मिलेगी। कूटा ने विजयी सदस्यों को उनके आगामी तीन वर्ष के कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं दी हैं और विश्वास व्यक्त किया है कि वे विश्वविद्यालय के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। कूटा की तरफ से अध्यक्ष प्रो. ललित तिवारी तथा महासचिव डस. विजय कुमार समेत कूटा परिवार ने बधाई दी है।

वैज्ञानिकों ने किसानों को जागरूक किया

धारी। विकसित कृषि संकल्प अभियान के अंतर्गत इंडियन वेटरनरी रिसर्च इंस्टिट्यूट, मुक्तेश्वर के आइवीआआई वैज्ञानिकों की टीमों ने जिला नैनीताल के दो ब्लॉक रामगढ़ एवं धारी के कई ग्राम सभाओं का दौरा किया। इस दौरे में वैज्ञानिक लगभग तीन सौ किसानों से मिले और उनसे वार्तालाब किया। इस दौरान डा चंदशेखर डा विशाल चंद्र, डा. सीएल पटेल, डा. करम चंद, डा. अमित कुमार, डा. सिद्धार्थ गौतम, डा. मधुसूदन एपी, डा नितीश सिंह खड़ायत, डा. दीपिका बिष्ट एवं मुकुल तिरुवा। इसअवसर पर वैज्ञानिको ने पशुपालन से संभावित कई विषयों पर बात जैसे की विकसित कृषि संकल्प अभियान और उसके उद्देश्य, पशुओं में टीकाकरण के लाभ, लुम्पी स्किन बीमारी और उसकी रोकथाम पशुओं में बांझपन की रोकथाम, जानवरों में वायरल बीमारियों की जैवसुरक्षा की नीतिया आदि. इस अवसर पर किसानों ने भी अपनी परेशानियां साझा कीं।

माता की चौक 12 जून को

नैनीताल। लेक सिटी वेलफेयर क्लब की बैठक सोमवार को क्लब की अध्यक्ष आभा शाह की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में 12 जून वीरवार को माल रोड स्थित सेंट्रल होटल में होने वाली माता की चौकी धार्मिक कार्यक्रम तैयारी पर विस्तार से गहन मंथन किया गया। बैठक में तय किया गया कि 12 जून वीरवार को क्लब द्वारा माता की चौकी का भव्य रूप से आयोजन किया जाएगा। बैठक में सर्वसम्मति से कार्यक्रम की कामयाबी के लिए उर्मिला चौहान को कार्यक्रम का संयोजक जबकि सीमा सेठ, अमिता शाह, रेखा पंत, संगीता श्रीवास्तव, कविता गंगोला, जीवंती भट्ट तथा रानी शाह को कार्यक्रम का सह संयोजक की जिम्मेदारी सौपी गई है। कार्यक्रम की संयोजक उर्मिला चौहान ने बताया कि माता कि माता की चौकी कार्यक्रम वीरवार 12 जून को शाम को तीन बजे से प्रारंभ किया जाएगा, शाम को 6 बजे से प्रसाद वितरण किया जाएगा। बताया कि अबकी बार कार्यक्रम में रुद्रपुर से गगन ग्रोवर भजन मंडली को आमंत्रित किया गया है। उन्होंने बताया कार्यक्रम की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। बैठक में क्लब की सचिव सरिता त्रिपाठी समेत विनीता पांडे, कविता त्रिपाठी, रमा भट्ट, रमा तिवारी, ज्योति ढौंडियाल, मीनू बुधलाकोठी, लीला राज, प्रेमा अधिकारी, दीपिका बिनवाल, नीलम गुप्ता, रेखा जोशी, कंचन जोशी, सरस्वती सिराला, तनु सिंह, अमिता शाह शेरवानी, मधुमिता, वंदना जोशी, भावना शाह, नीरू शाह, ज्योति वर्मा, दया कुंवर, सविता कुलौरा, दीपा पांडे, गीता साह व हेमा भट्ट आदि सदस्य उपस्थित थे। अंत में क्लब की सचिव सरिता त्रिपाठी ने सभी का आभार जताया।

श्री कृष्ण भगवान की बाल लीलाओं का वर्णन

गोल्ज्यू देवता मंदिर में भागवत कथा

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। नगर के ठंडी सड़क स्थित श्री गोलू देवता मंदिर में चल रहे सात दिवसीय श्रीमद् देवी भागवत कथा के पांचवें दिवस यानी सोमवार को व्यास आचार्य कैलाश चंद्र सुयाल ने भक्तजनों को श्रीकृष्ण भगवान के जन्म व बाल लीलाओं की कथा सुनायी। इससे पूर्व श्रीमद् भागवत कथा का कलश यात्रा के साथ प्रारंभ हुई।

पंचम दिवस पर विद्वान पंडितों व पूर्व प्रधानाचार्य चंपावत के द्वारा अन्य आचार्यो की सहायता से श्री गणेश पूजा, श्री कलश स्थापना, पुण्याहवाचन, नांदी श्राद्ध, ग्रह पूजन तथा श्री राधा कृष्ण पूजन के कार्यक्रम संपन्न कराये गये। अन्य आचार्यो के द्वारा विभिन्न आध्यात्मिक स्तोत्र जप तथा पाठ आदि का आयोजन किया गया । उसके पश्चात उप व्यास कांति बल्लभ पांडे द्वारा श्रीमद् भागवत की मूल पाठ का कार्य किया गया। कथा में अपराह्न दो बजे से व्यास आचार्य कैलाश चंद्र सुयाल द्वारा श्रीमद् भागवत कथा अंतर्गत भगवान श्री कृष्ण जन्म तथा उनकी बाल लीलाओं का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया। बाल लीला वर्णन में भगवान श्री कृष्ण के जन्म एवं उनके लालन पालन तथा उनके बाल लीलाओं के विषय में विशेष प्रकाश डाला गया। व्यास सुयाल ने कहा कि वर्तमान समय में किस प्रकार हमें अपने बालकों को संस्कारी बनाया जाए ताकि वे भविष्य में प्रबुद्ध नागरिक बन सके। कथा में गोपाल सिंह रावत (सांसद प्रतिनिधि) समेत पूरन सिंह मेहरा, मोहन चंद्र पांडे तथा जगदीश चन्द्र जोशी इत्यादि लोगों के द्वारा नगर में आध्यात्मिक कार्यक्रमों के आयोजन के संदर्भ में श्री सूरदास जी महाराज रामायणी को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया तथा शाल ओढ़ाकर कर उनका सम्मान किया गया। शाम को पांच बजे आरती, प्रसाद वितरण तथा सुंदरकांड पाठ संपन्न हुआ तथा भजन कीर्तनों का आयोजन किया गया कार्यक्रम को सफल बनाने में राकेश तिवारी, मंजू रौतेला, सरला जोशी, श्रीमती पंत तथा अन्य कार्यकर्ताओं का सहयोग प्राप्त हुआ। इस आयोजन में गोलज्यू मंदिर नैनीताल के संस्थापक सदस्य भीम सिंह कार्की तथा विमल चौधरी, के द्वारा भी विशेष सहयोग दिया जा रहा है। कार्यक्रम में नैनीताल समेत आसपास के ग्रामों से श्रद्धालुओं की भी भारी भीड़ कथा श्रवण हेतु उमड़ रही है जिसकी वजह से वातावरण भक्तिमय बना हुआ है।

राज्य सरकार की रिपोर्ट को सही माना

हाईकोर्ट ने रामनगर के मालधन गोपाल नगर में मदिरा दुकानें खोलने के लिए कहा

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। उत्तराखण्ड हाईकोर्ट ने नैनीताल जिले के रामनगर तहसील के मालधन गोपाल नगर में आबकारी नीति के विरुद्ध जाकर शराब कारोबारी के द्वारा अवैध रूप से चलाई जा रही मदिरा की दुकानों के मामले पर सुनवाई की। मामले की सुनवाई करते हुए मुख्य न्यायधीश जी. नरेंद्र व न्यायमूर्ति आलोक मेहरा की खंडपीठ ने राज्य सरकार की रिपोर्ट को सही पाते हुए मदिरा की दुकानें खोलने के आदेश दिए हैं, साथ में कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं को सुरक्षा देने के आदेश देकर रिपोर्ट पेश करने को कहा है। मामले के अनुसार कारोबारी गणेश दत्त जोशी व अशोक साह ने उच्च न्यायलय में अपनी व दुकान की सुरक्षा को लेकर याचिका दायर की है जिसमें कहा गया कि वे आबकारी नियमों के तहत मदिरा की दुकान चला रहे हैं लेकिन कुछ संगठन

इसका विरोध कर रहे हैं।

उन्हें इसे बंद करने की धमकी दे रहे हैं जबकि याचिका में वनाए गए विपक्षियों का कहना है कि दुकान चलाने का लाइसेंस आबकारी विभाग ने उन्हें मालधन हाथी डांगर के लिए दिया था लेकिन इन्होंने इसका अनुपालन नहीं करते हुए मालधन गोपाल नगर में इसे खोल दिया गया है। दुकान के बोर्ड पर मालधन हाथी डांगर ही लिखा है इसलिए इसको यहां से हटाया जाए। इस सम्बंध में शराब विरोधी संगठनों ने जिलाधिकारी नैनीताल तथा आबकारी आयुक्त नैनीताल व मुख्यमंत्री को भी ज्ञापन दिया है जिस पर अब तक कोई कार्यवाही नहीं हुई, जब कार्यकवाही नही हुई तो संगठनों ने इसे बंद कराने के लिए धरना प्रदर्शन करना शुरू किया।

विपक्षियों का यह भी कहना है कि जब तक यह दुकान निर्धारित क्षेत्र में स्थापित नहीं हो जाती तब तक उनका धरना प्रदर्शन जारी रहेगा। पूर्व में कोर्ट ने मामले की वास्तविकता जानने के लिए राज्य सरकार से जांच करके रिपोर्ट पेश करने को कहा था जो राज्य सरकार के द्वारा पेश की गई।

पर्यावरण को लेकर सुनवाई चार सप्ताह बाद

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने देहरादून में जल धाराओं तथा जल स्रोत्रों व पर्यावरण संरक्षण सहित नदियों में मंडरा रहे खतरे व पर्यावरण संरक्षण को लेकर दायर तीन अलग अलग जनहित याचिकाओं पर एक साथ सुनवाई की। सभी मामलों की एक साथ सुनवाई करते मुख्य न्यायधीश जी. नरेंद्र व न्यायमूर्ति आलोक मेहरा की खंडपीठ ने सुनवाई करते हुए अगली सुनवाई के लिए चार सप्ताह बाद की तिथि नियत की है। बता दें कि सोमवार को सुनवाई के दौरान मामले में राज्य सरकार की तरफ से कहा गया कि जो दो अतिक्रमण चिन्हित किए गए थे उन्हें हटाने का कार्य प्रशासन ने प्रारम्भ कर दिया वहीं प्रसाशन बिंदाल नदी से अतिक्रमण 30 जून सोमवार से पहले हटा लेगा जिस पर कोर्ट ने अगली सुनवाई के लिए चार सप्ताह बाद की तिथि नियत की है। पूर्व में कोर्ट ने सरकार से कहा था कि नदी, नालों व गधेरों में जहां जहाँ अतिक्रमण हुआ है उसे हटाया जाए और उस जगह पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं। इनको भी उसी तरह से सीसीटीवी कैमरे लगाकर मैनेज किया जाय जैसे सडकों के दुर्घटनाग्रस्त क्षेत्रों को किया जाता है। कोर्ट ने डीजीपी से भी कहा था कि वे सम्बंधित एसएचओ को आदेश जारी करें कि जहां-जहां ऐसी घटनाएं होती हैं उन अतिक्रमणकारियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर रिपोर्ट पेश करें साथ में कोर्ट ने सचिव शहरी विकास से भी कहा था कि वे प्रदेश के नागरिकों में एक संदेश प्रकाशित करें कि नदी नालों व गधेरों में अतिक्रमण ए मलुआ व अवैध खनन ना करें जिसकी वजह से मानसून सीजन में किसी तरह की दुर्घटना न हो। मामले के अनुसार देहरादून निवासी अजय नारायण शर्मा तथा रेनू पाल व उर्मिला थापर ने उच्च न्यायालय में अलग अलग जनहित याचिका दायर कर कहा है कि देहरादून में सहस्त्रधारा में जलमग्न भूमि में भारी निर्माण कार्य किए जा रहे हैं जिससे जल स्रोतों के सूखने के साथ ही पर्यावरण को खतरा पैदा हो रहा है जबकि दूसरी याचिका में कहा गया है कि ; षिकेश में नालों तथा खालों और ढांग पर बेइंतहां अतिक्रमण और अवैध निर्माण किया गया। खासकर बिंदाल व रिष्पना नदी पर इसलिए इनपर हुए अतिक्रमण को हटाया जाए।

राजीव पंवार में परीक्षा में बैठने की अनुमति

नैनीताल। हाईकोर्ट ने देश के प्रसिद्ध गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर से पशु चिकित्सा में फार्मेसी डिप्लोमा करने वाले पुरोला के राजीव पंवार को परीक्षा में प्रतिभाग करने की अनुमति दे दी है। दूसरी ओर अब हाईकोर्ट के इस निर्णय से सैकड़ों युवाओं को लाभ मिल सकता है। याचिकाकर्ता पंवार की याचिका पर मुख्य न्यायाधीश जी नरेंदर और न्यायमूर्ति आलोक महरा की खंडपीठ में सुनवाई हुई। याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि सरकार की ओर से पशु चिकित्सा फार्मेसिस्ट (पशु चिकित्सा फार्मेसी अधिकारी के 16 पदों को भरने के लिए मई 2025 में विज्ञप्ति जारी की गई लेकिन इसके लिए आवश्यक योग्यता मान्यता प्राप्त संस्थान से फार्मेसी (एलोपैथी) में डिप्लोमा मांगा गया है। याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि उपरोक्त पदों के लिए आवश्यक योग्यता फार्मेसी (पशु चिकित्सा) में डिप्लोमा होना चाहिए। याचिकाकर्ता की ओर से आगे कहा गया कि उसने पंतनगर विश्वविद्यालय से पशु चिकित्सा में फार्मेसी डिप्लोमा किया है और उसके जैसे कई उम्मीदवार इस परीक्षा से बाहर हो गए हैं। यह उनके साथ अन्याय है। सरकार की ओर से कहा गया कि इस पद पर एलोपैथी से जुड़ी दवाएं वितरित की जाती हैं। अंत में अदालत ने याचिकाकर्ता को भर्ती प्रक्रिया में शामिल करने के निर्देश दिए हैं। खंडपीठ के निर्देश से सैकड़ों युवाओं को लाभ मिल सकता है।

जांच कर 13 जून तक रिपोर्ट पेश करे जियोलॉजिकल विभाग

शाह टाइम्स संवाद्दाता

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने बागेश्वर जिले के कांडा तहसील सहित बागेश्वर जिले में हुए अवैध खड़िया खनन से जिले में आई दरारों के मामले में स्वत: संज्ञान को लेकर पंजीकृत की गई जनहित याचिका व खनन कारोबारियों के मामले पर एक साथ सुनवाई की। याचिकाओं की एक साथ सुनवाई करते हुए मुख्य न्यायधीश जी. नरेंद्र व न्यायमूर्ति आलोक मेहरा की खण्डपीठ ने केंद्रीय भूजल विभाग व जीओलॉजिकल विभाग से कहा है कि इसकी जांच कर 13 जून शुक्रवार तक अपनी जांच आख्या की रिपोर्ट कोर्ट में पेश करें। मामले की अगली सुनवाई 13 जून शुक्रवार की तिथि नियत की है। बता दें कि सोमवार को हुई सुनवाई पर राज्य के मुख्य स्थायी अधिवक्ता व खनन कारोबारियों के द्वारा कोर्ट के सम्मुख यह तथ्य लाया गया कि खनन पर रोक लगने के कारण खनन से बने गड्ढों में पानी भर गया है। पहाड़ियों में दरारें आने लगी है। उनकी मशीनें व वाहन शील्ड है। अभी मानसून की वर्षात होने में कम वक्त बचा हुआ है। प्री मानसून में ये हाल हो गया है। मानसून सत्र में बड़ा हादसा हो सकता है अगर समय पर इनकी सफाई नहीं की जाएगी तो जिले में आपदा आ सकती है। जिसपर कोर्ट ने केंद्रीय भूजल व जियोलॉजिकल विभाग से कहा है कि आप इसका निरीक्षण कर अपनी रिपोर्ट पेश करें। कोर्ट ने ओरली टिप्पणी करते हुए कहा कि हमें आम नागरिकों की चिंता है। मामले के अनुसार पूर्व में कांडा तहशील के ग्रामीणों ने मुख्य न्यायधीश को पत्र भेजकर कहा था कि अवैध खड़िया खनन से उनकी खेतीबाड़ी व घर तथा पानी की लाइनें चौपट हो चुकी हैं, जो धन से सपन्न थे उन्होंने अपना आशियाना हल्द्वानी व अन्य जगह पर बना दिया है। अब गावों में केवल निर्धन लोग ही बचे हुए हैं। उनके जो आय के साधन थे उनपर अब खड़िया खनन के लोगों की नजर टिकी हुई हैं। इस सम्बंध में कई बार उच्च अधिकारियो को प्रत्यावेदन भी दिए लेकिन उनकी समस्या का कुछ हल नहीं निकला इसलिए अब हम न्यायलय की शरण में आये हैं। उनकी समस्या का समाधान न्यायालय में ही किया जाए।

● फ्रेंच ओपन-2025

कार्लोस अल्काराज चैंपियन

● फाइनल में सिनर को पांच सेट में शिकस्त दी, 25 करोड़ रुपये की प्राइज मनी मिली

● यह कार्लोस अल्काराज का पांचवां ग्रैंड स्लैंड फाइनल था और वे पांचवी बार विजेता बने

पेरिस, वार्ता। स्पेन के 22 साल के टेनिस खिलाड़ी कार्लोस अल्काराज फ्रेंच ओपन चैंपियन बन गए हैं। रविवार को 5 घंटे से लंबे चले संघर्षपूर्ण खिताबी मुकाबले में अल्काराज ने इटली के जैनिक सिनर को पांच सेट में शिकस्त दी। अल्काराज ने मुकाबला 4-6, 6-7, 6-4, 7-6, 7-6 से जीता। उन्होंने यहां लगातार दूसरा खिताब जीता।

इसी के साथ अल्काराज ने ग्रैंड स्लैम में अपना रिकॉर्ड 5-0 कर लिया है। यानी यह उनका पांचवां ग्रैंड स्लैम फाइनल था और वे पांचवीं बार विजेता बने। विजेता को 25 करोड़ रुपये की प्राइज मनी मिली, जबकि रनरअप को 13 करोड़ रुपये मिले। वहीं, ओपन एरा में छठी बार ऐसा हुआ जब फाइनल में शुरुआती दो सेट हारने के बाद कोई चैंपियन बना। फ्रेंच ओपन के सिंगल्स कैटेगरी के दोनों टाइटल इस बार नंबर-2 खिलाड़ियों के खाते में गए। इससे पहले, शनिवार को वर्ल्ड नंबर-2 कोको गाफ नंबर-1 आर्यना सबालेंका को हराकर चैंपियन बनी थीं। अब रविवार को नंबर-2 अल्काराज ने नंबर-1 सिनर को हराकर ऐसा किया। फैसला पांचवें सेट के टाई ब्रेक से हुआ ओपन एरा में केवल तीसरी बार मेंस सिंगल्स ग्रैंड स्लैम फाइनल का फैसला पां. चवें सेट के टाई ब्रेक से हुआ। इससे पहले, साल 2020 के यूएस ओपन में डोमिनिक थिएम और एलेक्जेंडर ज्वेरेव के बीच फाइनल का नतीजा टाई ब्रेक से आया था, जिसमें थिएम विजेता बने थे। उससे पहले, विंबलडन 2019 में जोकोविच ने पांचवें सेट के टाईब्रेकर में फेडरर को हराकर खिताब जीता था। यह ग्रैंड स्लैम में पहली बार हुआ, जब साल 2000 के बाद जन्मे खिलाड़ी फाइनल में आमने-सामने हुए। वहीं, यह साल 2013 के बाद पहली बार हुआ, जब खिताबी मुकाबला वर्ल्ड रैंकिंग में टाप-2 खिलाड़ियों के बीच खेला गया। ओपन एरा में सबसे लंबा फ्रेंच ओपन फाइनल अल्काराज-सिनर का यह फाइनल मुकाबला फ्रेंच ओपन के ओपन एरा का सबसे लंबा फाइनल रहा। यह मैच 5 घंटे 29 तक चला। इसने 6 जून 1982 के गुइलेरमो विलास (अर्जेंटीना) और मेट्स विलेंडर (स्वीडन) के फाइनल का रिकॉर्ड तोड़ा। 4 घंटे 42 मिनट तक चले उस मुकाबले को विलेंडर ने 1-6, 7-6, 6-0, 6-4 से जीता था। अल्काराज से लगातार पांचवां मैच हारे सिनर यह अल्काराज की सिनर के खिलाफ लगातार पांचवीं जीत रही। उन्होंने पिछले महीने रोम मास्टर्स के फाइनल में भी सिनर को हराया था। दोनों के बीच अब तक 12 मैच खेले गए हैं, जिसमें से अल्काराज ने 8 जीते हैं।

बेंगलुरु भगदड़: आरसीबी की याचिका पर सुनवाई आज

■ आपराधिक मामला रद्द करने की अपील, फ्रेंचाइजी का दावा, हमें झूठा फंसाया गया

बेंगलुरु, वार्ता। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरस. ीबी) के खिलाफ चिन्नास्वामी स्टेडियम में भगदड़ को लेकर दर्ज आपराधिक मामला रद्द करने पर कल सुनवाई होगी। फ्रेंचाइजी ने सोमवार को कर्नाटक हाईकोर्ट में याचिका लगाई ते हुए कहा था कि उसे इस मामले में झूठा फंसाया गया है। आरसीबी ने तर्क दिया है कि उस पर गलत आरोप लगाए गए हैं। सोशल मीडिया पर साफ बताया गया था कि एंट्री पास लिमिटेड हैं। स्टेडियम के गेट दोपहर 1:45 बजे खुलने वाले थे लेकिन दोपहर 3 बजे खोले गए, जिससे स्टेडियम के बाहर भीड़ बढ़ती गई। दरअसल, बेंगलुरु में 4 जून को हुई भगदड़ में 11 लोगों की जान चली गई थी और 75 घायल हुए थे। एडवोकेट जनरल शशिकिरण शेट्टी ने अदालत से अपील करते हुए कहा कि भगदड़ मामले से जुड़ी सभी याचिकाओं पर 10 जून को एक साथ सुनवाई की जाए। इवेंट आयोजक डीएनए एंटरटेनमेंट नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड ने भी अपने खिलाफ एफआईआर को चुनौती देते हुए एक अलग याचिका दायर की है। कंपनी का कहना है कि पुलिस भीड़ संभाल नहीं पाई। इस वजह से भगदड़ हुई। अब इन दोनों ही मामलों पर 10 जून को सुनवाई होगी। आरसीबी और इवेंट मैनेजमेंट कंपनी के चार अधिकारियों को 6 जून को गिरफ्तार किया गया था। कोर्ट ने सभी को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा है। आरसीबी और इवेंट मैनेजमेंट कंपनी के चार अधिकारियों को 6 जून को गिरफ्तार किया गया था। कोर्ट ने सभी को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा है। आरसीबी के मार्केटिंग और रेवेन्यू हेड निखिल सोसले के वकील ने हाईकोर्ट में कहा कि निखिल को इसलिए गिरफ्तार किया क्योंकि सीएम सिद्धारमैया ने सेंट्रल क्राइम ब्रांच (सीसीबी) को उनकी गिरफ्तारी का आदेश दिया था। कोर्ट 6 जून को हुई निखिल सोसले की गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई कर रहा था। वकील ने कोर्ट में कहा कि निखिल सोसले अशोक नगर पुलिस थाना इलाके में रहते हैं।

आरपीसीए और आरसीएन ने अपने अपने मैच जीते

नई दिल्ली, वार्ता। डीडीसीए महिला टी-20 लीग के पहले दिन सोमवार को आरपीसीए ने एनके खन्ना सीसी को 44 रनों से और आरसीएन ने आनंद स्पोटर्स को 42 रनों से हराया। आज यहां सुश्री संगीता जेटली ने नई दिल्ली के बाराखंभा रोड स्थित मॉडर्न स्कूल ग्राउंड में डीडीसीए महिला टी-20 लीग का उद्घाटन किया। दिन के पहले मुकाबले में आरपीसीए ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में आठ विकेट पर 108 रनों का स्कोर खड़ा किया। जिसके जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी एनके खन्ना सीसी की टीम निर्धारित 20 ओवरों में आठ विकेट पर 64 रन ही बना सकी और 44 रनों से मुकाबला हार गई। वहीं दिन के दूसरे मैच में आरसीएन ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में पांच विकेट पर 135 रनों का स्कोर खड़ा किया।

इंग्लैंड ने वेस्टइंडीज को चार विकेट से हराया

ब्रिस्टल, वार्ता। जॉस बटलर (47), कप्तान हैरी ब्रूक (34) और टॉम बैंटन (नाबाद 30) रनों की शानदार पारियों की बदौलत इंग्लैंड ने रविवार को दूसरे टी-20 मुकाबले में वेस्टइंडीज को नौ गेंदे शेष रहते चार विकेट से हरा दिया। इस जीत के साथ इंग्लैंड ने तीन मैचों की श्रृंखला में 2-0 से अजेय बढ़त बना ली है। 197 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंग्लैंड की शुरुआत भी खबरा रही और उसने जेमी स्मिथ (चार) के रूप में अपना पहला विकेट गवां दिया। इसके बाद बेन डकेट और जॉस बटलर ने पारी को संभालने का प्रयास किया। बेन डकेट 18 गेंदों में (30) रन बनाकर आउट हुए। इंग्लैंड का तीसरा विकेट जॉस बटलर के रूप में गिरा। बटलर ने 36 गेंदों में चार चौके और दो छक्के लगाते हुए (47) रन बनाए। कप्तान हैरी ब्रूक ने 20 गेंदों में (34), जेकब बेथेल ने 10 गेंदों में (26), विल (11) रन बनाकर आउट हुए। टॉम बैंटन ने 11 गेंदों में तीन चौके , दो छक्के लगाए।

सिकंदर रजा ने लगाया नस्लीय दुर्व्यवहार का आरोप

हरारे, वार्ता। जिम्बाब्वे के आलराउंडर सिकंदर रजा ने स्थानीय कोच पर नस्लीय दुर्व्यवहार का आरोप लगाया है। यह घटना 1 जून को विग्ने कप मैच के दौरान की है। वह अपनी टीम ओल्ड हरारियंस की तरफ से रेनबो क्रिकेट क्लब के खिलाफ खेल रहे थे। हरारे मेट्रोपालिटन क्रिकेट एसोसिएशन में शिकायत दी उन्होंने इसकी शिकायत हरारे मेट्रोपालिटन क्रिकेट एसोसिएशन में दी है।

क्रिकेट की वेबसाइट ईएसपीएन क्रिक इन्फो के मुताबिक रजा ने आरोप लगाया है कि वह ओल्ड हरारियंस क्लब में ओल्ड हरारियंस और रेनबो क्रिकेट क्लब के बीच खेले गए मैच के दौरान जब ग्राउंड से बाहर जा रहे थे, तब कोच ने उनके खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियां की। रजा ने कहा कि मैं इस घटना की पूरी जांच की मांग करता हूं। अगर कोच दोषी पाया जाता है, तो उन्हें ऐसा सबक सिखाया जाना चाहिए कि भविष्य में किसी के साथ ऐसी घटना न हो। मैच के दौरान रजा ने 56 गेंदों में 78 रन बनाए, जिससे उनकी टीम ने 50 ओवर में 9 विकेट पर 402 रन बनाए। जवाब में रेनबो क्रिकेट क्लब ने 39 ओवर में 8 विकेट पर 225 रन बनाए और डीएलएस पद्धति से 142 रनों से मैच हार गई। पीएसएल में लाहौर कलंदर्स को खिताब जिताने में अहम रोल निभाया था रजा ने पीएसएल में लाहौर कलंदर्स को खिताब जिताने में अहम रोल निभाया था। उन्होंने लाहौर में खेले गए फाइनल में क्वेटा ग्लैडिएटर्स के खिलाफ विजई रन बनाए थे। उन्होंने 7 गेंदों पर नाबाद 22 रन बनाए थे। साथ ही एक विकेट भी लिया था। यह 2025 में रजा का दूसरा टी20 फ्रेंचाइजी ट्राफी रहा। इससे पहले उन्होंने प्स्ज20 भी जीता था। इंग्लैंड ने ब्रिस्टल में खेले गए दूसरे टी-20 मैच में विंडीज को 4 विकेट से हराया। इसके साथ ही इंग्लैंड तीन टी-20 मैचों की सीरीज में 2-0 की बढ़त बनाने के साथ ही सीरीज पर अपना कब्जा जमा लिया है। वेस्टइंडीज ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 6 विकेट पर 196 रन बनाए थे। जवाब में इंग्लैंड ने 6 विकेट खोकर ही लक्ष्य हासिल कर लिया।

पैराग्वे के पास ब्राजील के खिलाफ खोने के लिए कुछ नहीं है: अल्फारो

साओ पाउलो, वार्ता। पैराग्वे के मैनेजर गुस्तावो अल्फारो ने कहा है कि उनकी टीम ब्राजील के खिलाफ अपने महत्वपूर्ण विश्वकप क्वालीफायर मुकाबले में इस विश्वास के साथ उतरेगी कि खेल के सबसे बड़े मंच 'विश्व. कप' में जगह बनाना उसकी पहुंच में है और उसके पास खोने के लिए कुछ नहीं है। साओ पाउलो के कारिंथियंस एरिना में मंगलवार को होने वाले क्वालीफायर मुकाबले से पहले अल्फारो ने कहा कि यह ऐसा मैच हैं जिनमें हमारे पास जीतने के लिए सब कुछ है और हारने के लिए कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा कि ब्राजील हमेशा एक मुश्किल प्रतिद्वंद्वी रहा है, लेकिन साथ ही हम जानते हैं कि अगर हम जीतते हैं तो हम वह हासिल कर सकते हैं।

सौरभ कुमार नए घरेलू सत्र में आंध्र प्रदेश के लिए खेलेंगे

लखनऊ, वार्ता। उत्तर प्रदेश के बाएं हाथ के 32 वर्षीय स्पिन गेंदबाज सौरभ कुमार नए घरेलू सत्र में आंध्रा की ओर से खेलेंगे। सौरभ ने बताया कि उसे उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन (यूपीसीए) की ओर से अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) मिल चुका है और वह इस नई पारी को लेकर बहुत उत्साहित हैं। सौरभ ने कहा, ह्मैं कुछ नए मौके तलाश में था और पिछले कुछ दिनों से मेरी दो-तीन टीमों से बात हो थी। अंततः मैंने आंध्रप्रदेश का चयन किया, क्योंकि वह एक बेहतर टीम है और एलीट ग्रुप में खेलती है। फिलहाल मैं इस अवसर पाकर बहुत उत्साहित हूं। 32 वर्षीय सौरभ इससे पहले सर्विसेज (2014-15) और उत्तर प्रदेश (2015-16 से 2024-25 तक) के लिए घरेलू क्रिकेट खेल चुके हैं। उन्होंने 79 प्रथम श्रेणी मैचों में 26-45 की औसत से 324 विकेट लिए हैं, जिसमें 25 बार पांच और आठ बार मैच में 10 विकेट लेना शामिल है।

स्पेन को हराकर पुर्तगाल ने जीता यूईएफए नेशंस लीग का खिताब

● क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने टूर्नामेंट का अपना आठवां गोल किया और लीग फाइनल में गोल करनो वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बने

म्यूनिख, वार्ता। पुर्तगाल ने स्पेन को शूटआउट में हराकर यूईएफए नेशंस लीग का खिताब जीत लिया है। इस जीत के साथ वह दो बार यह कारनामा करने वाली पहली टीम बन गई है।

म्यूनिख फुटबॉल एरिना में रविवार रात खेले गए फाइनल में दोनों टीमों के बीच अतिरिक्त समय के बाद मुकाबला 2-2 से बराबरी रहने के बाद हुए शूटआउट में पुर्तगाल ने स्पेन पर 5-3 से जीत दर्ज कर दूसरी बार यह खिताब अपने नाम किया। 40 वर्षीय क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने टूर्नामेंट का अपना आठवां गोल किया और नेशंस लीग फाइनल में गोल करने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बन गए। स्पेन के लिए पहले हाफ में मार्टिन जुबिमेंडी ने 21वें मिनट में गोलकर अपनी टीम बढ़त दिलाई। इसके पांच मिनट बाद पुर्तगाल के नूनो मेंडेस अपने पहले अंतर्राष्ट्रीय गोल से स्कोर बराबर कर दिया। इसके बाद मिकेल ओयार्जाबल ने पेड्री के पास को गोल में बदलकर स्पेन को 2-1 की बढ़त दिला दी। दूसरे हाफ में रोनाल्डो मैच के 61वें मिनट मे गोलकर पुर्तगाल को 2-2 बराबरी पर ला दिया। यह रोनाल्डा का 938वां गोल था। अतिरिक्त समय में दोनों टीमें कोई गोल नहीं कर पाई। स्कोर बराबरी पर रहने के बाद हुए शूटआउट में पुर्तगाल ने पांच और स्पेन ने तीन गोल किए। पेनल्टी शूटआउट में गोंसालो रामोस ने पुर्तगाल की ओर से पहला, विटिना ने दूसरा गोल किया। ब्रूनो फर्नांडीस ने तीसरा गोल किया। चौथा गोल नूनो मेंडेस के हिस्से में आया। पुर्तगाल की ओर से रूबेन नेवेस ने पांचवां गोलकर अपनी टीम को 5-3 से जीत दिला दी। वहीं स्पेन के लिए मेरिनो, एलेक्स बेना और इस्को ने गोल किए।

अन्नू-रोहित ने जीते स्वर्ण पदक

■ चैंपियन अन्नू रानी ने अपने दूसरे थ्रो में 56.82 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथभाला फेंक स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता

ताइपे, वार्ता। दो बार की ओलंपियन अन्नू रानी और रोहित यादव ने चीनी ताइपे में ताइवान एथलेटिक्स ओपन 2025 के दूसरे दिन रविवार को अपनी-अपनी भाला फेंक स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीते। इसी के साथ भारत ने 10 पदक जीते, जिसमें छह स्वर्ण, तीन रजत और एक कांस्य पदक शामिल है। भारत ने ताइवान एथलेटिक्स ओपन के पहले दिन छह स्वर्ण भी जीते थे, जिससे उनके कुल पदकों की संख्या 16 हो गई। इन पदकों में 12 स्वर्ण, तीन रजत और एक कांस्य शामिल है। भारतीय दल ने प्रतियोगिता के दूसरे दिन दो स्वर्ण पदक जीते। एशियन गेम्स की चैंपियन अन्नू रानी ने अपने दूसरे थ्रो में 56-82 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ महिलाओं की भाला फेंक स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। श्रीलंका की हैटराबेज लेकामलागे ने 56-62 मीटर थ्रो के साथ रजत पदक जीता और चीनी ताइपे की पिन-सुन चू 53-03 मीटर के साथ तीसरे स्थान पर रहीं।

इससे पहले दिन में दो बार के पुरुष भाला फेंक नेशनल चैंपियन रोहित यादव ने चुनौतीपूर्ण मौसम का सामना करते हुए भारत को दिन का पहला पदक जिताया। तेज हवाओं के बीच कोई भी एथलीट 75 मीटर के मार्क को पार नहीं कर पाया, लेकिन रोहित यादव ने अपने पहले थ्रो में 71-46 मीटर के साथ प्रतियोगिता पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली। इसके बाद उन्होंने दूसरे थ्रो में अपनी बढ़त में सुधार किया और 74-25 मीटर का थ्रो किया। रोहित ने अपने आखिरी प्रयास में 74-42 मीटर का थ्रो करके शीर्ष पोडियम स्थान पर अपनी जगह बनाई। चीनी ताइपे के हुआंग शिह-फेंग ने 74-04 मीटर थ्रो के साथ रजत पदक जीता।

टीम इंडिया के होम सीरीज के वेन्यू शिफ्ट हुए

वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट कोलकाता से शिफ्ट हुआ, बीसीसीआई ने घोषणा की

फाइल फोटो

मुंबई, वार्ता। बीसीसीआई ने 2025 के इंटरनेशनल होम सीजन और साउथ अफ्रीका ए के भारत दौरे के लिए वेन्यू में बदलाव किए हैं। टीम इंडिया अक्टूबर से दिसम्बर के बीच वेस्टइंडीज और साउथ अफ्रीका से सीरीज खेलेगी। भारत और वेस्टइंडीज के बीच 2 टेस्ट की सीरीज अक्टूबर में होगी। जबकि साउथ अफ्रीका के खिलाफ टीम इंडिया 2 टेस्ट, 3 वनडे और 5 टी-20 की सीरीज नवम्बर-दिसम्बर में खेलेगी। वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट सीरीज 2 अक्टूबर से अहमदाबाद में शुरू होगी। दूसरा टेस्ट जो पहले कोलकाता में होना था, अब नई दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में खेला जाएगा। इस बीच, 14 नवम्बर से शुरू होने वाले साउथ अफ्रीका के खिलाफ पहला टेस्ट नई दिल्ली से कोलकाता के ईडन गार्डन्स में शिफ्ट कर दिया गया है। वेस्टइंडीज के खिलाफ अहमदाबाद और दिल्ली में 2 टेस्ट टीम इंडिया का होम सीजन वेस्टइंडीज के खिलाफ 2 टेस्ट की सीरीज से शुरू होगा। 2 अक्टूबर से दोनों टीमों के बीच अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में पहला टेस्ट खेला जाएगा। 10 अक्टूबर से दूसरा टेस्ट कोलकाता में खेला जाना था, लेकिन अब ए दिल्ली में खेला जाएगा। वेस्टइंडीज के खिलाफ 2 टेस्ट वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप का हिस्सा हैं। इसके बाद टीम इंडिया 19 से 25 अक्टूबर तक ऑस्ट्रेलिया में 3 वनडे की सीरीज खेलेगी। फिर 29 अक्टूबर से 8 नवम्बर तक ऑस्ट्रेलिया में 5 टी-20 की सीरीज भी होगी। साउथ अफ्रीका से पहला टेस्ट दिल्ली से कोलकाता शिफ्ट हुआ ऑस्ट्रेलिया से लौटने के बाद टीम इंडिया को साउथ अफ्रीका के खिलाफ तीनों फार्मेट की सीरीज खेलनी है। 18 नवम्बर से कोलकाता में पहला टेस्ट और 26 नवम्बर से गुवाहाटी में दूसरा टेस्ट शुरू होगा। पहला टेस्ट पहले दिल्ली में खेला जाना था। बरसापारा स्टेडियम में पहली बार रेड बाल से इंटरनेशनल मैच होगा। इससे पहले यहां वनडे और टी-20 के 12 इंटरनेशनल मैच खेले जा चुके हैं। 30 नवम्बर से 6 दिसम्बर तक दोनों टीमों के बीच 3 वनडे होंगे। इनकी मेजबानी रांची, रायपुर और वाइजैग को मिली है। 9 से 19 दिसम्बर तक दोनों टीमें 5 टी-20 खेलेंगी। इनकी मेजबानी कटक, मुल्लांपुर, धर्मशाला, लखनऊ और अहमदाबाद को मिली है भारत और साउथ अफ्रीका के बीच दिसम्बर 2023 में आखिरी टेस्ट सीरीज हुई थी। यह 1-1 से ड्रा रही थी। भारत और साउथ अफ्रीका के बीच दिसम्बर 2023 में आखिरी टेस्ट सीरीज हुई थी। यह 1-1 से ड्रा रही थी। इंडिया ए के मैच अब राजकोट में खेले जाएंगे इंडिया ए और साउथ अफ्रीका ए के बीच 30 अक्टूबर से दो मल्टी-डे और तीन वनडे मैच खेले जाएंगे। मल्टी-डे मैच बेंगलुरु के बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में होंगे।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान रुड़की में कार्यक्रम परामर्श समिति की बैठक संपन्न

छात्रों को शीर्षक के अनुसार कंटेंट निर्माण करें : सीडीओ

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। मुख्य विकास अधिकारी आकांक्षा कोंडे की अध्यक्षता में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान रुड़की, हरिद्वार में कार्यक्रम परामर्श समिति की बैठक संपन्न हुई।

बैठक में समग्र शिक्षा के एनुअल वर्क प्लान एवं बजट 2025-26 पर विस्तृत चर्चा हुई। बैठक में वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 72.40 लाख रुपये तथा सैंटर ऑफ एक्सिलेंस के 11.89 लाख रुपये के बजट का अनुमोदन किया गया। मुख्य विकास अधिकारी ने मार्गदर्शित करते हुए कहा कि कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों हेतु शीर्षक के अनुसार कंटेंट निर्माण करें जिससे वे भविष्य की तैयारी कर सके, दीक्षा एप, पीड्ढएमड्ढईड्ढ विद्या, स्वयंप्रभा आदि शैक्षिक एप का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए जिससे जनसामान्य को इसका लाभ प्राप्त हो सके। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि विद्यालय के बच्चों को आधुनिकतम तकनीकि आर्टिफिशल इंटेलिजेंस

एवं कोडिंग-डिकोडिंग के प्रयोग, लाभ एवं हानि के बारे में जागरूक करने के लिए शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण आयोजित किए जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि विद्यालय के छात्रों की राज्य से बाहर शैक्षिक संस्थानों की एक्सपोजर विजिट आयोजित की जाए जिससे विद्यार्थी उनसे ज्ञान प्राप्त कर सके, विद्यालय छात्रों में व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत बढई, कुकिंग, इलैक्ट्रशियन, तैराकी आदि जीवन कौशल सीखाने हेतु प्रशिक्षण आयोजित किए जाए जिसमें केड्ढजीड्ढबीड्ढपीड्ढ तथा सुभाष चन्द्र बोस विद्यालय के छात्रों को भी सम्मिलित किया जाए, राजकीय जूनियर हाई स्कूल विद्यालयों में विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति समझ विकसित करने हेतु विज्ञान लैब स्थापित करने तथा उनमें सामग्री उपलब्ध कराने हेतु जनपद स्तर से प्रयास किए जाए। बैठक में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान रुड़की, हरिद्वारके प्राचार्य कैलाश डंगवाल, जिला शिक्षा अधिकारी बेसिक आशुतोष भण्डारी, देहरादून से डॉ अजय कुमार चौरसिया, नरेश चन्द राजा, मौहम्मद वसीम, दीपक दीक्षित, जान आलम, डॉ अंजु मलिक, नरेन्द्र सिंह वालिया, डॉ अनिता नेगी, डॉ सरस्वती पुण्डीर, डॉ अशोक सैनी, भूपेन्द्र सिंह, वैष्णों कुमार, अनिल कुमार, शशि चौहान, जीपी सिलस्वाल, कविता, गरिमा, संदेश चौधरी आदि उपस्थित रहे।

नाबालिग युवती को भगाने वाला आरोपी गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

भगवानपुर। थाना पुलिस ने एक नाबालिक किशोरी को बहला फुसलाकर भगाने वाले युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

जानकारी के अनुसार वादी निवासी ग्राम बेहडा सादाता थाना ककरौली जनपद मु0नगर हाल मक्खनपुर थाना भगवानपुर द्वारा थाने पर आकर तहरीर दी कि मेरी नाबालिग पुत्री को अभि01. सुरज पुत्र धर्मवीर निवासी ग्राम बेहडा सादाता थाना ककरौली जनपद मु0नगर उ0प्र0 द्वारा बहसा फुसलकार अपहरण कर ले जाने के सम्बन्ध में दी। जिसके आधार पर थाना भगवानपुर पर मु0अ0सं0-185/2025 धारा 137(2),87 बीएनएस पंजीकृत किया गया। अभि0 की गिरफ्तारी हेतु श्रीमान वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद हरिद्वार महोदय के आदेश के क्रम में थाना भगवानपुर पुलिस की गठित टीम द्वारा मुकदमा उपरोक्त वांछित अपराधी गिरफ्तारी के भरसक प्रयास किये जा रहे थे। दिनांक-08/06/25 को अभि0 सुरज को उसके मसकन से गिरफ्तार कर अपर्हता को सकुशल बरामद किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त के सम्बन्ध मे अन्य विधिक कार्रवाई जारी है। पुलिस टीम में उ0नि0 सन्तोष सेमवाल थाना भगवानपुर, कानि0 राहुल कुमार थाना भगवानपुर, म0हे0का0 मोहनी थाना भगवानपुर शामिल रहे।

कुत्ते ने बुजुर्ग महिला को बुरी तरह नोचा, गम्भीर, मालिक पर अभद्रता का आरोप

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। लक्सर क्षेत्र के मुंडाखेड़ा खुर्द गांव में एक पालतू कुत्ते ने 60 वर्षीय रिहाना नामक महिला को काटकर गंभीर रूप से घायल कर दिया। आरोप है कि कुत्ते के मालिक और उसके बेटे ने पीड़ित महिला और उसके परिवार वालों के साथ अभद्रता भी की।

मिली जानकारी के अनुसार, शमीम की पत्नी रिहाना अपने घर के आंगन में झाड़ू लगा रही थीं, तभी गांव के ऋषि पाल प्रजापति के पालतू कुत्ते ने उन पर हमला कर दिया। कुत्ते ने रिहाना को बुरी तरह नोच कर लहूलुहान कर दिया। चीख-पुकार सुनकर आस-पड़ोस के लोगों ने किसी तरह महिला को कुत्ते के चंगुल से छुड़ाया।बताया जा रहा है कि उक्त कुत्ता पहले भी गांव के कई लोगों को काटकर घायल कर चुका है। जब परिवार के लोगों ने इस बाबत ऋषि पाल को उलाहना दिया, तो आरोप है कि उसने और उसके बेटे ने उनसे अभद्रता की।घायल महिला को तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया। लक्सर अस्पताल से उन्हें हरिद्वार रेफर किया गया, जहां भी इलाज न मिलने पर उन्हें हायर सेंटर एम्स रेफर कर दिया गया है।मामले की सूचना मिलते ही पुलिस ने ऋषि पाल के पुत्र को हिरासत में ले लिया है और ऋषि पाल की तलाश जारी है।ग्राम प्रधान सहदेव चौधरी ने बताया कि इस कुत्ते ने गांव में आतंक मचा रखा है और इसने पहले भी कई लोगों को काटा है। उन्होंने कहा कि आज एक मुस्लिम महिला को इस कुत्ते ने बुरी तरह से जख्मी कर दिया। उन्होंने प्रशासन से कुत्ते को गांव से बाहर छोड़ने या उसका इलाज कराने की मांग की, ताकि गांव सुरक्षित रह सके।परिजनों ने यह भी बताया कि उनके घर के गेट के सामने आंगनबाड़ी केंद्र है और यह कुत्ता कभी भी बच्चों पर हमला कर सकता है। इस घटना के बाद से लोगों ने आंगनबाड़ी केंद्र पर अपने बच्चों को भेजना बंद कर दिया है।

वहीं दूसरी ओर इस मामले में कुत्ते का मालिक यह कहकर अपना बचाव कर रहा है कि लोग उसे छेड़ते हैं तभी वह काटता है, लेकिन ग्रामीणों का कहना है कि ऐसा कुछ नहीं है।

हरिद्वार विश्वविद्यालय में प्रबंधन, इंजीनियरिंग व जीवन विज्ञान में

सतत विकास पर अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन संपन्न

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। हरिद्वार विश्वविद्यालय, में प्रबंधन, इंजीनियरिंग और जीवन विज्ञान में सतत विकास, पर पहला अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। हरिद्वार विश्वविद्यालय, रूडकी ने विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में प्रबंधन इंजीनियरिंग और जीवन विज्ञान में सतत विकास, पर

❖देश भर के प्रख्यात वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और छात्रों ने लिया भाग

अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस कार्यक्रम में देश भर के प्रख्यात वैज्ञानिकों, शोध कर्ताओं, शिक्षाविदों और छात्रों ने भाग लिया।

सम्मेलन का उद्घाटन संजय कुमार गुप्ता अध्यक्ष प्रबंध निदेशक रेलटेल सीए एसके गुप्ता हरिद्वार विश्वविद्यालय के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष श्री नमन बंसल, डॉ डीबी सिंह वीसी हरिद्वार विश्वविद्यालय, प्रो वाइस चांसलर डॉ आदेश आर्य, डॉ रमा भार्गव प्रो वाइस चांसलर, डॉ विपिन सैनी निदेशक ने किया, जिन्होंने वैज्ञानिक प्रगति में नवाचार और अंत:विषय

सहयोग के महत्व पर जोर दिया और सतत लक्ष्य के बारे में बताया डॉ मंजू गुप्ता प्रो वाइस चांसलर ईएमआईटी स्विट्जरलैंड यूनिवर्सिटी, डॉ गरुव गुप्ता चीन से, डॉ विशेष फ्लोरिडा यूएसए से, श्रीमती सुगंधा दोहा कतर से वर्चुअली सम्मेलन में शामिल हुईं। डॉ सोनिया शर्मा प्रिंसिपल नर्सिंग विभाग सम्मेलन की मास्टर ऑफ सेरेमनी थीं। विभिन्न तकनीकी सत्रों में 150, से अधिक शोध पत्र और पोस्टर प्रस्तुत किए गए, जिसमें जैव प्रौद्योगिकी, पर्यावरण विज्ञान, एआई, आदि, में हालिया प्रगति शामिल थी। सम्मेलन ने ज्ञान के आदान-प्रदान, नेटवर्किंग और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में उभरती चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा के लिए एक जीवंत मंच प्रदान किया। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो दिनेश शास्त्री वीसी उत्तराखंड संस्कृति विश्वविद्यालय, ने की, जिन्होंने आयोजकों के प्रयासों की सराहना की और युवा शोधकर्ताओं को अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए प्रोत्साहित किया डॉ. हिमाद्री फुरकान, एचओडी, बिजनेस स्टडीज, असिस्टेंट प्रोफेसर सुश्री विनीता पांडे, मानसी मोर्य, श्री जावेद अली, मुस्केश, रश्मि सिंह, शेली ने एसडीएमईएल की सफलता पर खुशी और प्रसन्नता व्यक्त की। आयोजन सचिव रोहित कुमार और डॉ. हिमांशु वर्मा एचओडी कंप्यूटर एप्लीकेशन और कंप्यूटर साइंस, ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी प्रतिभागियों, अतिथियों और प्रायोजकों को हार्दिक धन्यवाद दिया।

तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने लील ली जिंदगी

लक्सर में दर्दनाक हादसा एक युवक की मौत, दो गंभीर

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। क्षेत्र केओसपुर-इस्माइलपुर मार्ग रविवार देर रात एक तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने सामने से आ रही मोटरसाइकिल को इतनी जोरदार टक्कर मारी कि बाइक सवार तीन युवक उसकी चपेट में आ गए। हादसे में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए है। मृतक की पहचान दरगाहपुर गांव निवासी फैयाज के रूप में हुई है, जो अपने दो रिश्तेदारोंख्रजो कि उसके बहनोई बताए जा रहे हैंख्रके साथ किसी कार्य से लौट रहा था। यह घटना रात करीब 2 बजे घटी, जब तीनों युवक मोटरसाइकिल से ओसपुर की ओर से इस्माइलपुर मार्ग पर बढ़ रहे थे।

जानकारी के अनुसार, इस्माइलपुर की ओर से आ रहा ट्रैक्टर इतनी तेज गति में था कि बाइक को सीधी टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि मोटरसाइकिल के परखच्चे उड़ गए और फैयाज की मौके पर ही मौत हो गई। उसके साथ मौजूद दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया है।ट्रैक्टर चालक मौके से फरार हो गया, जिसकी तलाश में पुलिस जुटी हुई है। वहीं, घटना की जानकारी मिलते ही गांव में शोक की लहर दौड़ गई। परिजनों में कोहराम मच गया और ग्रामीणों की भीड़ अस्पताल और घटनास्थल दोनों जगह जुट गई।पुलिस ने मौके पर पहुंच कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और घटना की जांच शुरू कर दी है। ग्रामीणों ने प्रशासन से ट्रैक्टर चालक की जल्द गिरफ्तारी और पीड़ित परिवार को मुआवजा देने की मांग की है।

विद्युत समस्याओं को लेकर अधीक्षण अभियंता को घेरा

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। विद्युत समस्याओं को लेकर मंगलौर विधायक काजी निजामुद्दीन, कलियर विधायक फुरकान अहमद एवं झबरेड़ा विधायक वीरेंद्र जाति ने सोमवार को समर्थकों के साथ अधीक्षण अभियंता का घेराव किया। उन्होंने समस्याओं का निदान न होने पर जनता के साथ सड़कों पर उतरकर आंदोलन की चेतावनी दी। वहीं अधिकारी ने उचित कारवाई का आश्वासन दिया।

रुड़की बोट क्लब स्थित अधीक्षण अभियंता अमित कुमार के कार्यालय में पहुंचे विधायकों ने क्षेत्र के विभिन्न गांवों में बिजली की कई समस्याएं बताई। उन्होंने कहा कि कई स्थानों पर चौबीस घंटों में कुछ ही घंटों तक लाइट आ रही है वहीं कई स्थानों पर लो वोल्टेज की समस्या बनी हुई है। वहीं विधायकों ने बताया कि क्षेत्र में बिजली न आने के कारण किसानों को सिंचाई करने में दिक्कत हो रही है सिंचाई के लिए ट्यूबवेल नहीं चल पा रहे। मंगलौर विधायक काजी निजामुद्दीन ने कहा कि तीन प्रकार की समस्या अधीक्षण अभियंता के सामने रखी है,जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में लोग परेशान हैं उन्हें निरंतर बिजली दी जाए, जो प्रोजेक्ट पास हो चुके हैं उन पर कार्य शुरू किया जाए। इसके साथ ही लो वोल्टेज आदि की समस्या से मुक्ति मिले। विधायक ने कहा समाधान न हुआ तो रात को वह जनता के साथ सड़कों पर ही रहेंगे। झबरेड़ा विधायक वीरेंद्र जाति ने कहा कि भीषण गर्मी में बिजली की लगातार कटौती से जनता हलकान है,किसान खेतों में सिंचाई नहीं कर पा रहे हैं और कई क्षेत्रों में वोल्टेज इतनी कम है कि बिजली उपकरण काम नहीं कर रहे। उन्होंने कहा कि या तो विभाग जनता की समस्या के समाधान के बारे में सोचे अन्यथा जनता के साथ हमें आंदोलन के लिए सड़कों पर उतरना होगा। कलियर विधायक फुरकान अहमद ने कहा कि क्षेत्र में एक बिजली घर की आवश्यकता है जिसके लिए भूमि भी उपलब्ध करवा दी है। इसके साथ ही रामपुर में बिजली की समस्या है जिसको लेकर भी बात की है। भीषण गर्मी में लोगों के बीच हाहाकार मचा हुआ है। उन्होंने कहा कि समाधान नहीं हुआ तो आंदोलन होगा। इस अवसर पर मंगलौर नगर पालिका अध्यक्ष मोयूदीन अंसारी, इस्लाम चौधरी,राजु प्रधान,कुलदीप चौधरी,डॉ अताउर रहमान, शुभम प्रधान, शाहवाकार चिस्ती, बाबू, डॉ सराफत अंसारी, मरगूब कुरैशी, आशिफ, अली हसन, ताजूदिन, तौहीद, मुशरत, गुलफाम आदि मौजूद रहे।

7 रजिस्ट्रार कानूनगो व 39 लेखपालों के तबादले

शाह टाइम्स संवाददाता

रूडकी/हरिद्वार। जिलाधिकारी ने बताया कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा दी गए निर्देशों के क्रम में कार्यों में और अधिक पारदर्शिता व निष्पक्षता प्रदान करने, कर्मचारियों की दक्षता और संतुलन बनाए रखने, अनुभव और विकास के समान अवसर उपलब्ध कराने के साथ ही प्रशासनिक प्रबन्धन को बेहतर बनाने के उद्देश्य से जनपद में बंपर स्थानांतरण किए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा दी गए निर्देशों के क्रम में तथा उत्तराखंड ट्रांसफर एक्ट के अनुपालन में जिलाधिकारी मयूर दीक्षित द्वारा 5 साल से एक ही तहसील में जमे 7 रजिस्टार कानूनगो का स्थानांतरण

❖जिलाधिकारी ने जनपद की सभी तहसीलों में किया भारी फेरबदल

एक तहसील से दूसरी तहसील में किया गया है। इसके साथ ही 36 राजस्व उपनिरीक्षकों एवं लेखपालों का स्थानांतरण एक तहसील से दूसरी तहसील में किया गया है जबकि 3 लेखपालों का स्थानांतरण अनुरोध के आधार पर अन्य तहसीलों में किया गया है। उन्होंने सभी स्थानांतरित कार्मिकों को तत्काल नव तैनाती स्थान पर योगदान आख्या प्रस्तुत करने के आदेश दिए। जिलाधिकारी ने आदेश दिए कि जनपद में अन्य विभागों के जनपदीय कार्मिकों के भी स्थानांतरण की प्रक्रिया भी अतिशीघ्र पूरी करते हुए 4 साल से अधिक समय से एक ही विकास खंड में तैनात वीडीओ, वीपीडीयो आदि के स्थानांतरण भी अन्यत्र विकास खण्डों में करना सुनिश्चित किया जाए।

दिनदहाड़े हुई हत्या में चार के खिलाफ केस दर्ज

शाह टाइम्स संवाददाता

मंगलौर ईद की नमाज के बाद शनिवार को हुई युवक की हत्या के मामले में पुलिस ने चार आरोपियों को नामजद करते हुए मुकदमा दर्ज कर लिया है। केस दर्ज करने के बाद पुलिस ने हत्या के मुख्य आरोपी को चाकू सहित गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश कर दिया है। मंगलौर कस्बे के मोहल्ला पठानपुरा निवासी शमीम के पुत्र साहिल की शनिवार सुबह ईद की नमाज के बाद उस समय हत्या कर दी थी जब वह घर की तरफ लौट रहा था। पुलिस के अनुसार मृतक के पिता शमीम की तहरीर के आधार पर चार लोगों को नामजद करते हुए हत्या का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई थी। कोतवाल शांति कुमार गंगवार ने बताया कि हत्या के मुख्य आरोपी रियासत को गिरफ्तार कर हत्या में प्रयुक्त चाकू भी बरामद कर लिया गया है। आरोपी रियासत का चालान कर न्यायालय में पेश किया।

किशोरी ने फांसी लगाकर की आत्महत्या, पुलिस जांच में जुटी

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। थाना क्षेत्र के मोहम्मदपुर कुन्हारी गांव में एक 13 वर्षीय किशोरी ने संदिग्ध परिस्थितियों में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। किशोरी का शव घर के अंदर फंदे से लटका मिला, जिसे देखकर परिजनों में कोहराम मच गया। फॉरेंसिक टीम की मदद से हुई जांच मिली जानकारी के अनुसार, मृतका की पहचान मोहम्मदपुर कुन्हारी की किशोरी के रूप में हुई है। मामले की सूचना पुलिस को दी और मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने फॉरेंसिक टीम को बुलाकर घटना स्थल की जांच पड़ताल की। घटना के कारणों का अभी पता नहीं चल सका, हालांकि पुलिस पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्यवाही की बात कर रही है।परिजनों के उड़े होशबता दें कि दोपहर जब परिजनों ने मृतका को फांसी पर लटका देखा, तो उनके होश उड़ गए, घर में चीख पुकार मच गई, किशोरी के फांसी पर लटके होने की सूचना तत्काल स्थानीय पुलिस को दी गई। जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची शव को फांसी के फंदे से उतार कर अपने कब्जे में ले लिया और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।घटना को लेकर परिजनों का कहना है कि किशोरी काफी दिनों से पड़ोस में रहने वाला लड़का परेशान कर रहा था।जिसके चलते उसने यह आत्महत्या जैसा कदम उठाया है। किशोरी की मौत से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद शुरू होगी कार्रवाई सुल्तानपुर चौकी प्रभारी ने बताया कि प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है, वहीं घटना स्थल पर पहुंची फॉरेंसिक टीम द्वारा जांच की गई है।

किशोर के लापता होने पर मुकदमा दर्ज

कलियर। नगर पंचायत इमलीखेड़ा के माजरी निवासी एक किशोर संदिग्ध परिस्थिति में लापता हो गया है। पुलिस ने पिता की तहरीर पर अपहरण का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इमलीखेड़ा नगर पंचायत के वार्ड तीन माजरी निवासी बबलू ने तहरीर देकर बताया कि उसका पुत्र विशांत (14) छह जून की दोपहर को घर से बिना बताए कहीं चला गया है। काफी तलाश किया लेकिन उसका कुछ अता-पता नहीं चल पाया है।

सास को घर से निकाला, ट्रेन से कटकर मरने की कही बात

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। एक बुजुर्ग महिला की उसकी पुत्रवधु ने पिटाई कर दी। इसके बाद उसे धक्का देकर घर से निकाल दिया। यहीं नहीं बुजुर्ग सास से ट्रेन के नीचे कटकर मर जाने की बात भी कह दी। इससे दुखी बुजुर्ग महिला कोतवाली पहुंची और कार्रवाई की मांग की। सिविल लाइंस कोतवाली क्षेत्र के टोडा गांव निवासी एक बुजुर्ग महिला ने कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसकी पुत्रवधु उसे आए दिन परेशान करती है। रविवार को महिला ने सास के साथ गाली-गलौज कर दी। जब सास ने इसका विरोध किया तो पुत्रवधु ने उसकी पिटाई कर दी। यहीं नहीं बुजुर्ग महिला को घर से निकाल दिया। यही नहीं उसे ट्रेन के नीचे आकर कटकर मर जाने की बात भी कह दी। इससे आहत सास कोतवाली पहुंची और पुलिस से कार्रवाई की मांग की। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

पुल की सुरक्षा दीवार के पास खड़े युवक की नहर में गिरकर मौत

शाह टाइम्स संवाददाता

पिरान कलियर। पुरानी गंगनहर पुल की सुरक्षा दीवार के पास खड़े एक अज्ञात युवक की पुरानी गंगनहर में गिरने से मौत हो गई हैं।सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को गंगनहर से बाहर निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। जानकारी के अनुसार देर रविवार देर शाम को पुरानी गंगनहर के पुल की सुरक्षा दीवार का पास खड़ा एक अज्ञात युवक अचानक से गंगनहर में गिर गया।युवक को गंगनहर में गिरते हुए देख लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई।सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से युवक को बाहर निकाला।तब तक युवक की मौत हो चुकी थी। युवक की शिनाख्त नही हो पाई।थाना प्रभारी रविन्द्र कुमार ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर सिविल अस्पताल मोर्चरी में रखवा दिया गया है।शव के शिनाख्त का प्रयास किए जा रहे हैं।

भगवानपुर बीडीसी बैठक में हंगामा, बीडीओ का घेराव

कांग्रेस विधायक उतरी भाजपा ब्लॉक प्रमुख के समर्थन में

शाह टाइम्स संवाददाता

भगवानपुर। विकासखंड भगवानपुर बी डी सी की वार्षिक बैठक आज ब्लॉक सभागार में होनी थी। जिसमें बीडीसी सदस्य और ग्राम प्रधान पहुंचे थे मीटिंग शुरू भी नहीं हुई थी कि बीडीओ भगवानपुर रजिस्टर को उठाकर ले गए और मीटिंग के स्थगन की घोषणा कर दी। जिसके बाद भारी हंगामा हुआ और बीडीओ भगवानपुर आलोक गार्गी के कार्यालय में ही स्थानीय कांग्रेस विधायक ममता राकेश, भाजपा समर्थित ब्लॉक प्रमुख करुणा कर्नवाल और भारी संख्या में ग्राम प्रधान और क्षेत्र पंचायत सदस्यों ने जमकर नारेबाजी और हंगामा किया।

उन्होंने बीडीओ पर आरोप लगाते हुए कहा कि वो दबाव में काम कर रहे है। जिससे पूरे ब्लॉक का विकास बाधित हो रहा है। जब प्रस्ताव ही नहीं जाएंगे तो आखिर विकास कहां से होगा कांग्रेस विधायक ममता राकेश ने कहा कि भाजपा अपनी ही पार्टी की दलित की बेटी ब्लॉक प्रमुख के साथ गलत कर रही है । जबकि नारा बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ का दिया जाता है। उन्होंने भाजपा को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि भाजपा की कथनी और करनी में अंतर है। वहीं इस प्रकरण पर जब

भाजपा समर्थित महिला ब्लॉक प्रमुख भगवानपुर करुणा कर्नवाल से मीडिया ने बात की तो उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि उनके साथ ही इस तरह का बर्ताव क्यों किया जा रहा है अब वो सभी बीडीसी और प्रधानों को लेकर मुख्यमंत्री आवास पर जाएंगी और आत्मदाह करेंगी। जब बीडीओ भगवानपुर आलोक गार्गी से इस बारे में पूछा तो उन्होंने गोलमोल जवाब देकर अपना पल्ला झाड़ लिया।

रुड़की में सिंघाड़ा कुकीज बेकरी यूनिट स्थापना के लिए

मुख्य विकास अधिकारी ने किया निरीक्षण

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। मुख्य विकास अधिकारी श्रीमती आकांक्षा कोंडे के निर्देशों के क्रम में रुड़की विकासखंड में ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने हेतु आस्था सीएलएफ (क्लस्टर लेवल फेडरेशन) के अंतर्गत सिंघाड़ा आटे से निर्मित कुकीज, ब्रेड और बिस्कुट के उत्पादन हेतु बेकरी यूनिट की स्थापना की जा रही है।

सीडीओ साहिबा ने उक्त बेकरी यूनिट का भौतिक निरीक्षण किया। इस अवसर पर बेकरी यूनिट के सफल संचालन हेतु आस्था सीएलएफ से जुड़ी महिलाओं को इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट (आईएचएम), देहरादून के विशेषज्ञों द्वारा प्रदान किए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रगति की भी समीक्षा की गई। ग्रामोत्थान (रीप) परियोजना के जिला परियोजना प्रबंधक संजय सक्सेना द्वारा महोदया को प्रशिक्षण व यूनिट स्थापना कार्यों की अद्यतन जानकारी दी गई। निरीक्षण के दौरान महोदया ने यूनिट के निर्माण, बिजली-पानी की व्यवस्था और उत्पादन प्रारंभ की तैयारियों का गहन अवलोकन किया। महोदया ने सहायक खंड विकास अधिकारी कमलेश कांडपाल को

निर्देशित किया कि समस्त कार्य 12 जून 2025 तक पूर्ण कर लिए जाएं, ताकि कुकीज और ब्रेड का उत्पादन समय से शुरू किया जा सके। साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि इस कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही स्वीकार्य नहीं होगी। इस निरीक्षण के दौरान विकासखंड व जिला स्तरीय समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। यह पहल ग्रामीण उद्यमिता को नई दिशा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सम्पादकीय

मंगलवार, 10 जून 2025

पक्षपातपूर्ण नीति का नतीजा

मणिपुर में हुई ताजा हिंसक घटनाओं के बाद खाने-पीने की चीजें और दवाइयों की भारी कमी हो गई है, यहां तक कि जरूरी सामानों के दाम बेतहाशा बढ़ गए हैं। हिंसा प्रभावित कई इलाकों में दवाइयां तक नहीं मिल रही हैं। अब सारी चीजें मिजोरम के रास्ते आ रही हैं। इसलिए महंगी हो गई हैं। पहले जैसी स्थिति नहीं रही है। तीन मई 2023 को कुकी-मैतेई समुदाय के बीच संघर्ष शुरू हुआ था, जो अब तक जारी है। इस दौरान 300 से ज्यादा लोगों की मौत हुई है। एक-दूसरे के खिलाफ खड़े समुदायों की शिकायतों की प्रकृति एवं उसके स्तर के चलते अन्य किस्म के बखेड़ों के मुकाबले जातीय संघर्षों को खत्म करना कहीं ज्यादा मुश्किल होता है। उत्पीड़न के इस किस्म के अहसास को उन लोगों द्वारा खाद-पानी दिया जाता है, जो भावनाओं को इस हद तक बढ़ा देते हैं कि पारस्परिक समझौतों और शांति बहाली के जरिए मेल-मिलाप को लेकर कोई सार्थक रुख अपनाना मुश्किल हो जाता है, भले ही लोगों का बहुमत मूक रूप से इसके पक्ष में हो। हथियारों को लहराकर धमकियां देते हुए, कौमपरस्त वर्ग भय और प्रतिशोध की भावना पैदा करके तार्किक आवाजों को दबाने का प्रयास करते हैं। मणिपुर के मामले में भी कुछ ऐसी ही स्थिति जान पड़ती है, जहां हिंसा के संरक्षकों से निपटने में महीनों की टालमटोल के बाद, भाजपा की अगुवाई वाली केंद्र सरकार ने आखिरकार ऐसे तत्वों को अलग-थलग करने और उन्हें कानून के दायरे में लाने का फैसला लिया है। कट्टरपंथी पहचानवादी संगठन अरम्बाई तेंगोल के नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में इम्फाल घाटी में फिर से विरोध भड़क उठा है। यह घटनाक्रम एक जातीय संघर्ष के दौरान कानून प्रवर्तन के उपायों को लागू करने की जरूरत और उसमें पेश आने वाली दिक्कतों को उजागर करता है। यह चरमपंथी समूह बेखौफ होकर बेलगाम अराजकता की करतूतों में संलिप्त था तथा जो लोग इसके उग्रवादी एजेंडे से सहमत नहीं थे, उन्हें हिंसा और धमकियों के जरिए निशाना बनाता था। इसने विधायकों को भी अपने कौमपरस्त मकसदों से जुड़े संकल्पों पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया था। चौंकाने वाली बात यह है कि भाजपा की अगुवाई वाली तत्कालीन राज्य सरकार ने इस पर ध्यान नहीं दिया, यह मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह की अपनी पक्षपातपूर्ण नीति से ऊपर न उठ पाने का नतीजा था। इन हिंसक अपराधियों को जनता का संरक्षण मिलने के चलते सुरक्षा बल भी कार्रवाई करने में नाकाम थे। जल्द ही, ऐसे समूह शांति के लिए एक बड़ा खतरा बन गए और राष्ट्रपति शासन लागू करने के बाद ही सरकार इस समूह के साथ-साथ अन्य समूहों से पुलिस कर्मियों से लूटे गए अधिकांश हथियारों को वापस करवाने में सफल हो पाई। ये गिरफ्तारियां पहाड़ी इलाकों के उन उग्रवादी स्वयंसेवकों के खिलाफ इसी किस्म की कार्रवाई के साथ हुई हैं, जो कथित तौर पर कानून लागू कराने वाले अधिकारियों के खिलाफ हिंसा में शामिल थे। मणिपुर सरकार, जो फिलहाल राष्ट्रपति शासन के अधीन है, को अपराध में गिरफ्तार लोगों की संलिप्तता का स्पष्ट मामला बनाना चाहिए तथा उन्हें न्याय के कठघरे में लाना चाहिए।

राज्यों के हकों की अनदेखी हुई

मोदी सरकार के 11 साल के शासन काल के दौरान राज्यों की अनदेखी हुई तथा संघीय ढांचे को कमजोर किया गया है, पिछले 11 वर्ष में मोदी सरकार ने लोकतंत्र, अर्थव्यवस्था और सामाजिक ताने-बाने को गहरा आघात पहुंचाया है, भाजपा -आरएसएस ने हर संवैधानिक संस्था को कमजोर कर, उनकी स्वायत्तता पर कड़ा प्रहार किया है, चाहे वो जनमत चुराकर पिछले दरवाजे से सरकारें गिराना हो या एक-दलीय तानाशाही शासन जबरन लागू करना हो, इस दौरान, राज्यों के हकों की अनदेखी हुई है और संघीय ढांचे को कमजोर किया गया है, समाज में नफरत, धमकी और डर का वातावरण फैलाने की कोशिश जारी है। दलित, आदिवासी, पिछड़े, अल्पसंख्यक तथा कमज़ोर वर्गों का शोषण लगातार बढ़ा है।

-मल्लिकार्जुन खड़गे, अध्यक्ष, कांग्रेस

गरीबी के साथ आर्थिक असमानता दूर करने का लक्ष्य हो

ललित गर्ग

भारत एक ओर जहां लगातार तेज ग्रोथ करते हुए बीते दिनों जापान को पीछे छोड़ दुनिया की चौथी सबसे बड़ी इकोनॉमी बना, तो वहीं उपलब्धियों का सिलसिला जारी है और दुनिया इसका लोहा मान रही है। अब एक और खुश करने वाली रिपोर्ट आई है, जो विश्व बैंक ने जारी की है, जिसमें भारत में अत्यधिक गरीबी में आई उल्लेखनीय कमी की रोशनी है। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2022-23 में यह दर 5.3 प्रतिशत रह गई है, जो वर्ष 2011-12 में 27.1 फीसदी थी। रिपोर्ट के निष्कर्षों के अनुसार भारत ने लगभग एक दशक से कुछ कम समय में 27 करोड़ लोगों को अत्यधिक गरीबी से बाहर निकाला है, जो पैमाने और गति के मामले में उल्लेखनीय एवं ऐतिहासिक उपलब्धि कही जा सकती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने शासन के 11 स्वर्णिम वर्षों में गरीबी को कम करने के लिए सामूहिक कार्रवाई की जरूरत पर जोर दिया है, गरीबों के संघर्षों और उनकी चिंताओं को सुनकर, उन्हें गरीबी से बाहर आने में मदद करके और अत्यधिक गरीबी में रहने वाले लोगों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करके उन्होंने गरीब उन्मूलन की योजनाओं को जमीन पर उतारा है। मोदी सरकार ने गरीबी में रहने वाले लोगों और व्यापक समाज के बीच समझ और संवाद को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखा है। उनकी दृष्टि में गरीबी को खत्म करना सिर्फ गरीबों की मदद करना नहीं है-बल्कि हर महिला और पुरुष को सम्मान के साथ जीने का मौका देना है।

विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चलाई जा रही सरकारी पहलों, तेज आर्थिक सुधारों और जरूरी सेवाओं तक सबकी पहुंच का ही यह नतीजा है कि गरीबी दिन-ब-दिन तेजी से घट रही है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार रोजगार में वृद्धि हुई है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। भारत ने बहुआयामी गरीबी को कम करने में भी जबरदस्त प्रगति की है। बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआइ) 2005-06 में 53.8 प्रतिशत से घटकर 2019-21 में 16.4 प्रतिशत और 2022-23 में 15.5 प्रतिशत हो गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने लोगों को गरीबी से उबारने के लिए केंद्र सरकार द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण कदमों और सशक्तीकरण, बुनियादी ढांचे और समावेशन पर फोकस पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, जन-धन योजना और आयुष्मान भारत जैसी पहलों ने आवास, स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन, बैंकिंग और स्वास्थ्य सेवा तक उनकी पहुंच को बढ़ाया है। डायरेक्ट बेनेफिट ट्रांसफर (डीबीटी), डिजिटल समावेश और मजबूत ग्रामीण बुनियादी ढांचे ने अंतिम जन तक लाभों की पारदर्शिता और तेज वितरण सुनिश्चित किया है। इससे 25 करोड़ से अधिक लोगों को गरीबी पर पार पाने में मदद मिली है। मोदी सरकार ने आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को संबल और आत्मनिर्भर बनाने के लिए अनेक योजनाएं चलाई हैं और उनका बेहतर क्रियान्वयन किया है। अत्यधिक गरीबी में रहने वाले लोगों की संख्या 34.44 करोड़ से घटकर 7.52 करोड़ रह गई है। पूरे भारत में अत्यधिक गरीबी को कम करने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जिसमें प्रमुख राज्यों ने गरीबी में कमी लाने और समावेशी विकास को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पांच बड़े राज्यों उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार और बंगाल में 2011-12 में देश के 65 फीसदी अत्यंत गरीब लोग थे। इन पांच राज्यों ने ही 2022-23 तक गरीबी कम करने में दो-तिहाई का योगदान दिया है।

विश्व बैंक ने पाकिस्तान को आईना दिखाते हुए भारत से गरीबी उन्मूलन की योजनाओं एवं सोच से प्रेरणा लेने की बात कही है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान की 45 प्रतिशत आबादी गरीबी में है। भारत की गरीबी दर 5.3 प्रतिशत और पाकिस्तान की 42.4 प्रतिशत है। इसका सबसे बड़ा कारण पाक अपना सारा ध्यान आतंकवाद एवं आतंकवादियों के पोषण पर देता है, गरीबी दूर करना उसकी योजनाओं एवं नीतियों में दूर-दूर तक नहीं है। इसीलिए भारत ने वैश्विक मंचों पर पाक पर यह आरोप भी लगाया है कि वह अंतर्राष्ट्रीय सहायता का दुरुपयोग आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए कर रहा है। भारत ने विश्व बैंक और आईएमएफ जैसे संस्थानों से अनुरोध किया है कि वे पाक को दी जाने वाली सहायता की समीक्षा करें, क्योंकि इसका उपयोग आम लोगों के कल्याण के बजाय सैन्य खर्च और आतंकवादी गति. विधियों में हो रहा है। हाल के पाहलगाम हमले के बाद भारत ने इस मुद्दे को और जोरदार तरीके से उठाया, जिसमें उसने पाक के सैन्य बजट में 18 प्रतिशत वृद्धि और सामा. जिक कल्याण पर कम खर्च को उजागर किया। गरीबी किसी व्यक्ति के मानवाधिकारों का हनन है। यह न केवल अभाव, भूख और पीड़ा का जीवन जीने की ओर ले जाती है, बल्कि मौलिक अधिकारों और स्वतंत्रताओं के आनंद का भी बड़ा अवरोध है। पाक में यही स्थितियां देखने को मिल रही है। आजादी के अमृत काल में सशक्त भारत एवं विकसित भारत को निर्मित करते हुए गरीबमुक्त भारत के संकल्प को भी आकार दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उनकी सरकार ने वर्ष 2047 के आजादी के शताब्दी समारोह के लिए जो योजनाएं एवं लक्ष्य तय किए हैं, उनमें गरीबी उन्मूलन के लिए भी व्यापक योजनाएं बनाई गई है। विगत ग्यारह वर्ष एवं मोदी के तीसरे कार्यकाल में ऐसी गरीब कल्याण की योजनाओं को लागू किया गया है, जिससे भारत के भाल पर लगे गरीबी के शर्म के कलंक को धोने के सार्थक प्रयत्न हुए है एवं गरीबी की रेखा से नीचे जीने वालों को ऊपर उठाया गया है।

निश्चित रूप से इस उपलब्धि में विभिन्न कल्याण कार्यक्रमों मसलन आर्थिक विकास और ग्रामीण रोजगार योजनाओं की बड़ी भूमिका रही है। निस्संदेह, इसने सबसे गरीब तबके के लोगों की आय बढ़ाने में मदद की है। निश्चित रूप से सार्वजनिक वितरण प्रणाली में सुधार, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण, बिजली, शौचालयों और आवास तक इस तबके की पहुंच बढ़ाने जैसी पहल ने ग्रामीण और अर्ध-शहरी भारत में जीवन की गुणवत्ता बेहतर बनाने में योगदान दिया है। लेकिन जहां हम गरीबी उन्मूलन में मिली सफलता पर आत्ममुग्ध हैं तो वहीं समाज में बढ़ती आर्थिक असमानता हमारी चिंता का विषय होना चाहिए। गरीबी-अमीरी के बीच के बढ़ते फासले को कम करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। पिछले साल जारी की गई विश्व असमानता रिपोर्ट 2022 से पता चलता है कि भारत में शीर्ष एक प्रतिशत लोगों की संपत्ति में बड़ा उछाल आया है। वे लोग देश की चालीस फीसदी संपत्ति नियंत्रित करते हैं। भारत में गरीबी का मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या, कमजोर कृषि, भ्रष्टाचार, रूढ़िवादी सोच, जातिवाद, अमीर-गरीब में ऊंच-नीच, नौकरी की कमी, अशिक्षा, बीमारी आदि हैं। एक आजाद मुल्क में, एक शोषणविहीन समाज में, एक समतावादी दृष्टिकोण में और एक कल्याणकारी समाजवादी व्यवस्था में गरीबी रेखा नहीं होनी चाहिए। अब तक यह रेखा उन कर्णधारों के लिए शर्म की रेखा बनी रही है, जिसको देखकर उन्हें शर्म आनी चाहिए थी। एक बड़ा प्रश्न था कि जो रोटी नहीं दे सके वह सरकार कैसी? जो अभय नहीं बना सके, वह व्यवस्था कैसी? जो इज्जत व स्नेह नहीं दे सके, वह समाज कैसा? गांधी और विनोबा ने सबके उदय एवं गरीबी उन्मूलन के लिए सर्वोदय की बात की, लेकिन राजनीतिज्ञों ने उसे निज्योदय बना दिया था। गरीबी हटाओ में गरीब हट गए। अब तक जो गरीबी के नारे को जितना भुना सकते थे, वे सत्ता प्राप्त कर सकते थे, लेकिन अब मोदी सरकार गरीबी उन्मूलन के लिए सार्थक प्रयत्न कर रही है। मोदी सरकार की तकनीकी प्रेरित सेवाओं में उछाल के चलते, वर्ष 2000 के बाद विकास मॉडल ने गरीब वर्ग को लाभान्वित किया है। निर्विवाद रूप से सामाजिक न्याय के लिए गरीबी कम करने के साथ, कमजोर तबकों के लिए सम्मान, समानता और नीतियों में लचीलापन जरूरी है। वास्तव में गरीबी मुक्त भारत का लक्ष्य तभी पूरा हो सकता है जब सरकार की कल्याणकारी नीतियां न केवल उन्हें गरीबी के दलदल से बाहर निकालें, बल्कि उन्हें स्वावलंबी भी बनाएं। आर्थिक कल्याणकारी नीतियों का मकसद मुफ्त की रेवड़ियां बांटना न होकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करना होना चाहिए। तभी गरीबी का कुचक्र स्थाई रूप से कम किया जा सकता है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

वीकेंड में संगमेश्वर घूमने का बनाएं प्लान

महाराष्ट्र में जब भी बारिश होती है, तो लोनावला से लेकर माथेरान और महाबलेश्वर जैसी जगहों पर पर्यटकों की भीड़ लगने लगती है। वहीं महाराष्ट्र की फेमस जगहों से दूसर संगमेश्वर एक ऐसी जगह है, जिसके बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है।

महाराष्ट्र हमारे देश का एक खूबसूरत और प्रमुख राज्य है। महाराष्ट्र एक ओर से अरब सागर और दूसरी ओर से सतपुड़ा पर्वतमाला से घिरा हुआ है। यह एक ऐसा राज्य है, जो रिमझिम बारिश में पर्यटन हब का सबसे बड़ा केंद्र माना जाता है। महाराष्ट्र में जब भी बारिश होती है, तो लोनावला से लेकर माथेरान और महा. बलेश्वर जैसी जगहों पर पर्यटकों की भीड़ लगने लगती है। वहीं महाराष्ट्र की फेमस जगहों से दूसर संग. मेश्वर एक ऐसी जगह है, जिसके बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है। वहीं हल्की रिमझिम बारिश में संगमेश्वर की खूबसूरती किसी हसीन खजाने से कम नहीं लगती है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको संगमेश्वर की खासियत के बारे में बताने जा रहे हैं।

महाराष्ट्र में संगमेश्वर

संगमेश्वर की खासियत और खूबसूरती बेहद कमाल की है। यह रत्नागिरी में स्थित एक खूबसूरत और मनमोहक जगह है। संग. मेश्वर महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई से करीब 284 किमी, पुणे से 247 किमी और कोल्हापुर से करीब 120 किमी दूर है।

क्यों फेमस है संगमेश्वर

महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में स्थित संगमेश्वर भले ही एक छोटा सा शहर है, लेकिन यह जगह अपने धार्मिक, ऐतिहासिक महत्व और खूबसूरत पर्यटन स्थलों के लिए पूरे राज्य में फेमस है। खासकर यह जगह संगमेश्वर मंदिर और संगमेश्वर शहर के लिए फेमस है। जोकि भगवान शिव को समर्पित है। संगमेश्वर महाराष्ट्र का एक ऐसा शहर है, जो शास्त्री नदी और सोनावी नदी के संगम पर स्थित है। इसके चलते यहां पर रिमझिम बारिश में राज्य के हर कोने से लोग घूमने के लिए आते हैं। इस स्थान को रत्नागिरी का छिपा हुआ खजाना भी माना जाता है। वहीं गमेश्वर वहीं स्थान है, जहां पर औरगंजेब ने छत्रपति शिवाजी महाराज के बेटे छत्रपति संभाजी महाराज को बंदी बनाया था।

पर्यटकों के लिए क्यों खास है ये जगह

संगमेश्वर का इतिहास प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग माना जाता है। रिमझिम बारिश में स्थित वॉटरफॉल से लेकर घास के मैदान और नदियों की खूबसूरती इस जगह को बेहद खूबसूरत बनाने का काम करती है। संगमेश्वर की हरियाली देखते ही बनती है। संग. मेश्वर अपने शांत और शुद्ध वातावरण के लिए जाना जाता है। शहर की भाग-दौड़ भरी जिंदगी से दूर संगमेश्वर में आप सुकून के कई पल बिताने के लिए पहुंचते हैं। संगमेश्वर अपनी खूबसूरती के साथ ही एडवेंचर एक्टिविटी के लिए भी जाना जाता है। कई लोग मानसून में यहां पर सिर्फ ट्रेकिंग का लुत्फ उठाने के लिए पहुंचते हैं।

संगमेश्वर मंदिर

संगमेश्वर के सबसे प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों में संगमेश्वर मंदिर काफी फेमस है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। पहाड़ी की चोटी पर स्थित होने के कारण पर्यटक यहां घूमने के लिए पहुंचते रहते हैं। मंदिर के आसपास से बेहद खूबसूरत नजारा देखने को मिलता है। कर्णेश्वर मंदिर को भी एक्सप्लोर कर सकते हैं और यह मंदिर भी भगवान शिव को समर्पित है।

मार्लेश्वर वॉटरफॉल

संगमेश्वर के पहाड़ों में स्थित मार्लेश्वर एक फेमस और खूबसूरत वॉटरफॉल है। मानसून में यहां सिर्फ स्थानीय पर्यटक नहीं बल्कि अन्य कई शहरों से पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं। यह वॉटरफॉल प्रकृति प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यहां के आसपास की हरियाली पर्यटकों को खूब आकर्षित करती है। इसके साथ ही आप छत्रपति संभाजी महाराज की समाधि को एक्सप्लोर करना न भूलें।

2018 से 2023 के बीच पशुओं से इंसानों में फैले थे 8% संक्रामक रोग

भारत में 2018 से 2023 के बीच इंटीग्रेटेड डिजीज सर्विलांस प्रोग्राम द्वारा दर्ज 8.3 फीसदी प्रकोप जानवरों से इंसानों में फैले थे। गौरतलब है कि जानवरों से इंसानों में फैलने वाली इन बीमारियों को जूनोटिक डिजीज के रूप में जाना जाता है। इनमें कोविड-19 जैसी महामारियां भी शामिल हैं। यह जानकारी इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एपिडेमियोलॉजी द्वारा किए एक नए विश्लेषण में सामने आई है। इस विश्लेषण के नतीजे अंतराष्ट्रीय जर्नल द लांसेट रीजनल हेल्थ साउथईस्ट एशिया में प्रकाशित हुए हैं। गौरतलब है कि अपने इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने 2018 से 2023 के बीच इंटीग्रेटेड डिजीज सर्विलांस प्रोग्राम (आईडीएसपी) के तहत रिपोर्ट हुए कुल 6,948 प्रकोपों का विश्लेषण किया है। इनमें से 583 यानी 8.3 फीसदी प्रकोप जूनोटिक थे। मतलब कि इस दौरान हर महीने औसतन सात जूनोटिक प्रकोप सामने आए। शोधकर्ताओं ने पाया है कि हर साल जून से अगस्त के बीच यह प्रकोप अपने चरम पर होते हैं। चिंता की बात यह है कि इन प्रकोपों में साल दर साल वृद्धि दर्ज की गई है।

पूर्वोत्तर भारत रहा सबसे ज्यादा प्रभावित

अध्ययन में यह भी सामने आया है कि इन जूनोटिक बीमारियों में जापानी इंसेफेलाइटिस सबसे आम था, जो कुल जूनोटिक प्रकोपों का 29.5 फीसदी था। इसके बाद लेप्टोस्पायरोसिस (18.7 फीसदी) स्क्रब टायफस (13.9 फीसदी) का स्थान रहा। वहीं भारत में क्षेत्रीय आधार पर देखें तो देश के पूर्वोत्तर हिस्से में सबसे ज्यादा 35.8 फीसदी प्रकोप सामने आए हैं। वहीं इसके बाद दक्षिण भारत (31.7 फीसदी) और पश्चिम भारत (15.4 फीसदी) में इनका सबसे ज्यादा प्रकोप देखा गया।

देरी अभी भी बनी हुई है समस्या

अध्ययन में यह भी सामने कुल प्रकोपों में से एक-तिहाई मामलों यानी करीब 34.6 फीसदी में रिपोर्टिंग देर से हुई थी। हालांकि, धीरे-धीरे रिपोर्ट में सुधार आया है। आंकड़ों पर नजर डालें तो 2019 में जहां 52.6 फीसदी मामले देर से रिपोर्ट हुए थे, जबकि 2023 में यह आंकड़ा घटकर 5.2 फीसदी रह गया। हालांकि चिंता की बात यह रही कि जूनोटिक प्रकोपों के 97.2 फीसदी मामलों में कोई फॉलो-अप रिपोर्ट उपलब्ध नहीं थी, यानी यह पता ही नहीं चला कि बाद में क्या कदम उठाए गए या रोग को कैसे नियंत्रित किया गया। अध्ययन में शोधकर्ताओं ने कहा है कि देश में खसरा, चिकनपॉक्स और डेंगू जैसी बीमारियों पर अलग-अलग विश्लेषण हुए हैं, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर जूनोटिक प्रकोपों पर अब तक कोई समग्र अध्ययन नहीं हुआ है। यही वजह है कि उन्होंने राष्ट्रीय निगरानी प्रणाली के तहत उन क्षेत्रों को चिन्हित किया जहां जानवरों से इंसानों में फैलने वाले रोगों के प्रकोप ज्यादा सामने आए हैं। हालांकि साप्ताहिक रिपोर्टों में कई गंभीर खामियां पाई गई, खासकर फॉलो-अप जानकारी की कमी सबसे ज्यादा चिंताजनक थी। ऐसे में शोधकर्ताओं ने इन खामियों को दूर करने के लिए उन क्षेत्रों में जहां जूनोटिक रोगों का प्रकोप सबसे ज्यादा है, वहां बीमारी को ध्यान में रखते हुए विशेष निगरानी तंत्र को मजबूत करने की आवश्यकता है। अध्ययन से पता चला है कि दुनियाभर में महामारी और प्रकोपों का बड़ा कारण नई या दोबारा से उभरती बीमारियां हैं, जिनमें से करीब दो-तिहाई रोग जानवरों से इंसानों में फैलते हैं। देखा जाए तो इसके लिए कहीं न कहीं हम इंसान ही जिम्मेवार हैं। मानव गतिविधियां और पर्यावरण में हो रहे बदलाव, जैसे कि जंगलों की कटाई और वन्यजीवों के रहने की जगह में बढ़ता दखल, इंसानों और

जानवरों के बीच संपर्क को बढ़ा रहा है। इससे जूनोटिक रोगों के फैलने का खतरा भी बढ़ रहा है।

कैसे इंसानों में फैलती हैं जूनोटिक बीमारियां

आमतौर पर यह बीमारियां तब फैलती हैं जब कोई वायरस अपने मेजबान (होस्ट) से अलग एक नया होस्ट खोजने में सक्षम हो जाता है। उदाहरण के लिए यदि कोई जानवर किसी खास वायरस से ग्रस्त है और वो किसी प्रकार इंसानों या दूसरे जानवरों के संपर्क में आता है तो वो उन्हें भी संक्रमित कर देता है। इस तरह यह बीमारियां एक से दूसरे के जरिए पूरे समाज में फैलना शुरू कर देती हैं। इस तरह का प्रसार तब ज्यादा होता है जब वायरस इंसान जैसे होस्ट के संपर्क में आता है या फिर उनमें म्यूटेशन होने लगते हैं। देखा जाए तो इंसान और जानवरों के बीच भौतिक नजदीकी इस वायरस को इंसानों में फैलने के लिए आदर्श परिस्थितियां बनाती है। पिछले 100 वर्षों से जुड़े आंकड़ों को देखें तो औसतन हर साल दो वायरस अपने प्राकृतिक वातावरण से निकलकर इंसानों में फैल रहे हैं, लेकिन प्रकृति के विनाश की बढ़ती दर इनके फैलने के खतरे को और बढ़ा रही है। ये बीमारियां पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय हैं, लेकिन कमजोर और निम्न-मध्यम आय वाले देशों में यह समस्या कहीं ज्यादा गंभीर है। इन देशों में तेजी से बढ़ती इंसानी गतिविधियों के कारण वन्यजीवों और इंसानों के बीच टकराव बढ़ रहा है, जिससे जानवरों से इंसानों में रोग फैलने की घटनाएं ज्यादा हो रही हैं। संयुक्त राष्ट्र ने भी अपनी रिपोर्ट में चेताया है कि नई उभरती जूनोटिक बीमारियां 2030 तक एक और महामारी को जन्म दे सकती हैं।

इंसान खुद लिख रहा अपने विनाश की पटकथा

रिपोर्ट के मुताबिक जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण में लगातार हो रहे बदलावों ने प्रजातियों के आवास क्षेत्रों को बुरी तरह प्रभावित किया है। इसकी वजह से प्रजातियों के बीच नए संपर्क पैदा हो रहे हैं, जिससे जानवरों से इंसानों में बीमारियों के फैलने यानी श्जूनोटिक स्पिलओवरश का खतरा बढ़ गया है। ऐसे में रिपोर्ट में आशंका जताई गई है कि यह जूनोटिक स्पिलओवर एक और महामारी को जन्म दे सकते हैं। रिपोर्ट में कोविड-19, इबोला, एच 5 एन 1, मर्स, निपाह, सार्स और इन्फ्लूएंजा ए/एच1एन1 जैसे पिछले प्रकोपों पर संज्ञान लिया गया है, जिनके कारण बड़े पैमाने पर इंसानी जीवन और आर्थिक नुकसान हुआ है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई) द्वारा 2022 में आयोजित अनिल अग्रवाल डायलॉग में सीएसई के सतत खाद्य प्रणाली के कार्यक्रम निदेशक अमित खुराना ने जानकारी देते हुए बताया था कि जूनोटिक बीमारियों का खतरा जलवायु परिवर्तन के कारण और अधिक बढ़ गया है। उनके मुताबिक मनुष्यों में 60 फीसदी से अधिक संक्रामक रोग जूनोटिक हैं। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि जूनोटिक की वजह से 260 करोड़ लोग प्रभावित हो रहे हैं और साथ ही हर साल इनकी वजह से 30 लाख लोगों की जान जा रही है। जर्नल बीएमजे ग्लोबल हेल्थ में प्रकाशित एक अन्य अध्ययन के मुता. बिक कुछ जूनोटिक बीमारियां 2050 तक 12 गुणा ज्यादा लोगों की जान ले सकती हैं। ऐसे में वैज्ञानिकों के अनुसार इन बीमारियों के लिए तैयार रहने की जरूरत है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया है कि सार्वजनिक स्वास्थ्य पर मंडराते इस खतरे को सीमित करने के लिए तत्काल कार्रवाई की दरकार है।

...साभार डीटीई

अमेरिकी एयरपोर्ट पर भारतीय छात्र को जमीन पर पटका, हथकड़ी लगाई

स्टूडेंट चिल्लाता रहा: पागल नहीं हूं, भारत डिपोर्ट किया

■ जैन ने भारतीय दूतावास, अमेरिका और विदेश मंत्री एस. जयशंकर से इस मामले में हस्तक्षेप करने की अपील की

■ यह घटना ऐसे वक्त पर हुई है, जब अमेरिकी सरकार अंतर्राष्ट्रीय छात्रों पर सख्ती बढ़ा रही है

वॉशिंगटन। अमेरिका के न्यूजर्सी में एक भारतीय छात्र को न्यूयार्क एयरपोर्ट पर अपराधियों की तरह जमीन पटका गया और फिर हथकड़ी लगाकर भारत डिपोर्ट किया गया। भारतीय मूल के अमेरिका बिजनेसमैन कुनाल जैन ने रविवार को इसका वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया।

जैन ने एक्स पर लिखा-मैंने न्यूअर्क एयरपोर्ट पर एक युवा भारतीय छात्र को हथकड़ी लगाकर, रोते हुए, अपराधी की तरह ट्रीट होते देखा। वो अपने सपनों को सच करने आया था, किसी को नुकसान पहुंचाने नहीं। एक एनआरआई होने के नाते, मैं खुद को कमजोर और टूटा हुआ महसूस कर रहा हूं। जैन के बताया कि छात्र हरियाणवी में कह रहा था कि मैं पागल नहीं हूं, ये लोग मुझे पागल साबित करने की कोशिश कर रहे हैं। अभी तक यह साफ नहीं है कि छात्र को किस वजह से डिपोर्ट किया गया। उन्होंने आगे कहा-ये बच्चे वीसा लेकर सुबह फ्लाइट से आते हैं। किसी कारण से इमिग्रेशन अथॉरिटीज को अपना आने का कारण समझा नहीं पाते और शाम की फ्लाइट से हाथ-पैर बांधकर, मुजरिमों की तरह भेज दिए जाते हैं। हर दिन 3-4 ऐसे मामले हो रहे हैं। पिछले कुछ दिनों में ऐसे केस ज्यादा बढ़ गए हैं। जैन ने भारतीय दूतावास, अमेरिका और विदेश मंत्री एस. जयशंकर से इस मामले में हस्तक्षेप करने की अपील की। उन्होंने लिखा-किसी को पता लगाना चाहिए कि इस छात्र का क्या हो रहा है। यह घटना ऐसे वक्त पर हुई है, जब अमेरिकी सरकार अंतर्राष्ट्रीय छात्रों पर सख्ती बढ़ा रही है और बिना नोटिस के वीज़ा रद्द कर रही है। फलस्तीन के समर्थन से लेकर ट्रैफिक उल्लंघन तक, अलग-अलग वजहों से छात्र कानूनी मुश्किलों में पड़ जाते हैं। अमेरिकी सरकार ने दो हफ्ते पहले विदेशी छात्रों के लिए नए वीजा इंटरव्यू पर रोक लगा दी है। विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने इसे लेकर एक आदेश जारी किया था। आदेश का मकसद देश की यूनिवर्सिटीज में यहूदी विरोध और वामपंथी विचारों को रोकना था। रुबियो ने दुनिया भर में अमेरिकी दूतावासों को आदेश जारी कर कहा-वे स्टूडेंट वीजा के लिए नए इंटरव्यू शेडयूल न करें, क्योंकि ट्रम्प सरकार अमेरिका आने वाले छात्रों के सोशल मीडिया प्रोफाइल की जांच को और सख्त करने जा रही है। उन्होंने आगे कहा: तत्काल प्रभाव से कांसुलर सेक्शन आगे के दिशानिर्देश जारी होने तक स्टूडेंट या एक्सचेंज विजिटर (एफ, एम और जे) वीजा के लिए नए अपॉइंटमेंट की इजाजत नहीं दे। ट्रम्प प्रशासन ने कहा है कि कोई विदेशी छात्र बिना जानकारी कोर्स छोड़ता है, क्लास नहीं जाता या पढ़ाई बीच में छोड़ता है, तो उसका स्टूडेंट वीसा रद्द किया जा सकता है। भारत में अमेरिकी दूतावास ने एक बयान में जारी कर इसकी जानकारी दी। दूतावास ने किसी भी समस्या से बचने के लिए हमेशा अपने वीजा शर्तों का पालन करने के लिए कहा। दूसरी तरफ ट्रम्प प्रशासन हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के साथ लगभग 850 करोड़ रुपये का कॉन्ट्रैक्ट रद्द करने की तैयारी कर रहा है सरकार पहले ही इस आइवी लीग स्कूल के लिए 22 हजार करोड़ रुपये से अधिक की मदद रोक चुकी है।

नई दिल्ली। चाणक्यपुरी स्थित संजय कैंप में गर्मी के दिनों में जल संकट के बीच टैंकर से पीने का पानी भरते और खेलते बच्चे।

रूस ने 1212 यूक्रेनी सैनिकों के शवों को अदला-बदली स्थल पर पहुंचाया

मॉस्को। रूस ने इस्तांबुल समझौते के अनुसार सीमा के अदला-बदली स्थल पर यूक्रेन के 1212 सैनिकों के शवों पहुंचाया है। लेफ्टिनेंट जनरल एलेक्जेंडर जोरिन ने रविवार को यह जानकारी दी। लेफ्टिनेट जनरल जोरिन, जो रूसी वार्ता समूह के प्रतिनिधि भी हैं। उन्होंने कहा कि यूक्रेन ने संपर्क नहीं किया है, इसलिए शवों का स्थानांतरण और कैदियों की अदला-बदली अभी तक नहीं हुई है। उन्होंने बताया कि दोनों पक्षों की ओर से आदान-प्रदान की प्रक्रिया के लिए स्थल पर प्रतीक्षा कर रहे कुछ विदेशी मीडिया प्रतिनिधियों ने शवों को ले जा रहे कुछ रेफ्जिरेटेड ट्रकों की जांच की है। लेफ्टिनेंट जनरल जोरिन ने कहा कि यूक्रेनी सैनिकों के अधिक शवों वाली ट्रेनें जल्द सीमा की ओर बढ़ना शुरू करेगी। उन्होंने कहा कि रूस अगले सप्ताह यूक्रेनी सैनिकों के शवों को स्थानांतरित करने के लिए यूक्रेन की आधिकारिक पुष्टि का इंतजार कर रहा है। यह घटना दोनों पक्षों के बीच कैदियों की अदला-बदली को लेकर चल रहे विवाद के बीच हुई।

अमेरिका ने नहीं आने दिया 12 देशों के नागरिकों को, सात देशों पर आंशिक प्रतिबंध

ट्रम्प ने सुरक्षा की दी दुहाई

ट्रम्प ने 4 जून को कहा था कि अमेरिका को ऐसे विदेशी नागरिकों से सुरक्षित रखना जरूरी है जो आतंक फैलाने की कोशिश करते हैं

वाशिंगटन। अमेरिका में आज से 12 देशों के नागरिकों की एंट्री पर बैन लागू हो गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने 4 जून को इसे लेकर एक आदेश जारी किया था, जो आज 9 जून से लागू होगा।

12 देशों के अलावा 7 देशों के नागरिकों पर आज से आंशिक रोक लागू होगी। ये इमिग्रेशन और नान-इमिग्रेशन दोनों तरह के वीजा पर लागू होगी। ट्रम्प ने अपने इस फैसले के पीछे अमेरिकी लोगों की सुरक्षा और जान की हिफाजत का हवाला दिया था। ट्रम्प ने 4 जून को कहा था कि अमेरिका को ऐसे विदेशी नागरिकों से सुरक्षित रखना जरूरी है जो आतंकवादी हमले करने, राष्ट्रीय सुरक्षा को नुकसान पहुंचाने, नफरत फैलाने या इमिग्रेशन कानूनों का गलत फायदा उठाने की कोशिश करते हैं। अमेरिकी विदेश विभाग के मुताबिक पूर्ण बैन का मतलब है कि उस देश के अधिकतर नागरिकों का अमेरिका में प्रवेश पूरी तरह से प्रतिबंधित होता है। इनमें टूरिस्ट वीजा, स्टूडेंट वीजा, वर्क वीजा और इमिग्रेंट वीजा चाहने वाले लोग शामिल होते हैं। वहीं, आंशिक बैन का मतलब है कि उस देश के नागरिकों पर कुछ खास प्रकार के वीजा या एंट्री पर रोक लगाई जाती है, बाकी पर नहीं। यानी इमिग्रेंट वीजा नहीं मिलेगा, लेकिन टूरिस्ट वीजा मिल सकता है। स्टूडेंट्स को परमिशन मिलेगी, लेकिन वर्क वीजा पर रोक रहेगी। ट्रम्प ने 4 जून को दूसरे देशों के नागरिकों को वीजा जारी करते वक्त सावधानी बरतने के लिए कहा था। उन्होंने कहा था कि वीजा जारी करते वक्त ध्यान रखना चाहिए कि ऐसे लोग अमेरिका न आ सकें, जो अमेरिकियों या देश के हितों को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

इमरान की 11 जून को रिहाई की उम्मीद

पीटीआई अध्यक्ष गौहर अली खान ने किया दावा

■ हालांकि, इमरान खान ने खुद इन खबरों को सिरे से खारिज किया

इस्लामाबाद। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के एक शीर्ष नेता ने दावा किया कि पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान जल्द जेल से रिहा हो सकते हैं। उनकी इस बात से संकेत मिलता है कि सेना प्रमुख असीम मुनीर आखिरकार खान के सामने झुक सकते हैं।

न्यूज एजेंसी 'पीटीआई' के मुताबिक, पीटीआई अध्यक्ष गौहर अली खान ने दावा किया अगस्त 2023 से रावलपिंडी की उच्च सुरक्षा वाली अदियाला जेल में बंद इमरान खान को 11 जून को जमानत मिल सकती है। यह बयान ऐसे समय आया है, जब कुछ दिन पहले ही इमरान खान ने खुद को पीटीआई का संरक्षक घोषित किया था और जेल से ही राष्ट्रव्यापी आंदोलन का एलान किया था। गौहर का दावा उन खबरों के बाद भी आया है, जिनमें कहा गया कि इमरान की रिहाई को लेकर पर्दे के पीछे बातचीत चल रही है। हालांकि, इमरान खान ने खुद इन खबरों को सिरे से खारिज किया है। जनता में इमरान खान के लिए बढ़ते समर्थन और जेल से ही देशव्यापी आंदोलन का नेतृत्व करने के उनके फैसले ने सेना प्रमुख असीम मुनीर पर दबाव बढ़ा दिया है। पहले से ही 'ऑपरेशन सिंदूर' के चलते बैकफुट पर चल रहे मुनीर अब इमरान के सामने पीछे हटते दिख रहे हैं। हालांकि, इमरान खान ने अभी तक कुछ स्पष्ट नहीं कहा है। लेकिन गौहर अली खान ने कराची के एआरवाई न्यूज के हवाले से कहा कि 11 जून का दिन इमरान खान और उनकी पत्नी दोनों के लिए अहम होगा। गौहर ने यह भी स्पष्ट किया कि इमरान खान की रिहाई किसी भी समझौते के तहत नहीं होगी। इस्लामाबाद हाईकोर्ट पहले ही अल-कादिर ट्रस्ट मामले की सुनवाई को 11 जून तक के लिए टाल चुकी है। इमरान खान पर कई केस चल रहे हैं और वह अगस्त 2023 से रावलपिंडी की अदियाला जेल में बंद हैं। वह अपनी गिरफ्तारी को गैरकानूनी बताते हैं।

उनकी पार्टी पीटीआई लगातार प्रदर्शन करती रही है, जिसमें नवम्बर 2024 में इस्लामाबाद की घेराबंदी भी शामिल थी। जनवरी 2024 में इमरान की पत्नी बुशरा बीबी को तोशाखाना मामले में 14 साल की सजा सुनाई गई थी। उन पर राज्य को मिले तोहफों को गैरकानूनी तरीके से बेचने का आरोप है। इमरान खान का असीम मुनीर से टकराव लंबे समय से चला आ रहा है। वह मुनीर पर उनकी सरकार गिरवाने और उन्हें जेल भिजवाने का आरोप लगाते हैं। खान का कहना है कि बुशरा बीबी की गिरफ्तारी भी मुनीर की निजी दुश्मनी का नतीजा है। उन्होंने इसे 'बदले की भावना' बताया था और कहा था कि जेल में उनकी पत्नी के साथ अमानवीय व्यवहार हो रहा है। गौहर अली खान का यह दावा कि खान को 11 जून को अल-कादिर ट्रस्ट मामले में जमानत मिल सकती है, तब आया है जब इमरान ने हाल ही में खुद को पीटीआई का संरक्षक घोषित किया है।

लॉस एंजिल्स में हिंसा, झंडे पर थूका, सैकड़ों गाड़ियां जलाई

दुकानों और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में लूट-पाट की

■ मास्क पहनने वालों की तुरंत गिरफ्तारी का आदेश

लॉस एंजिल्स। अमेरिका के लॉस एंजिल्स में अवैध प्रवासियों पर हो रही कार्रवाई के विरोध में चल रहा प्रदर्शन बीते दो दिनों से हिंसक हो गया है। उपद्रवियों ने शहर की सड़कों को जाम कर, सैकड़ों गाड़ियों में आग लगा दी। दुकानों और शापिंग काम्प्लेक्स में लूट-पाट की है। शहर के एक चौराहे पर प्रदर्शनकारियों ने अमेरिकी झंडे पर थूका और उसे जला दिया। कई इलाकों में उपद्रवियों ने सुरक्षाबलों पर पत्थर और पटाखे फेंके।

वहीं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने लॉस एंजिल्स में हो रहे प्रदर्शनों को रोकने के लिए कड़ा रुख अपनाया है। उन्होंने कानून प्रवर्तन एजेंसियों को आदेश दिया है कि जो लोग प्रदर्शन के दौरान मास्क पहन रहे हैं, उन्हें तुरंत गिरफ्तार किया जाए। ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर कहा कि अब से किसी भी प्रदर्शन में मास्क पहनने की अनुमति नहीं दी जाएगी। अमेरिका के लॉस एंजिल्स शहर में सरकार की आव्रजन नीतियों के खिलाफ 3 दिन से हिंसक प्रदर्शन हो रहे हैं। उपद्रवियों ने पूरे शहर में कई सड़कों पर आगजनी की है। इस दौरान सैकड़ों गाड़ियों को आग के हवाले किया है। कई प्रदर्शनकारी अमेरिकी झंडे पर थूकते और जलाते भी नजर आए। प्रदर्शनकारी मास्क पहनकर सड़कों पर उतर रहे हैं ताकि वे सुरक्षा कैमरों से बच सकें। ट्रम्प ने लॉस एंजिल्स में फैली हिंसा और तोड़फोड़ के बाद वहां तैनात किए गए नेशनल गार्ड के जवानों की तारीफ भी की है। ये जवान आमतौर पर राज्य के गवर्नरों के आदेश पर बुलाए जाते हैं, लेकिन इस बार ट्रम्प ने खुद उनकी तैनाती कर दी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर लिखा कि शहर पर अवैध प्रवासियों का कब्जा है, इसे जल्द आजाद कराया जाएगा। उन्होंने प्रदर्शनकारियों पर एक्शन लेने की बात भी कही है।

इजरायल ने ग्रेटा थनबर्ग के जहाज को कब्जे में लिया

■ हिरासत में लिए स्वीडिश पर्यावरण कार्यकर्ता इजरायली सेना हमास हमले का वीडियो दिखाएगी

तेल अवीव। इजरायल ने स्वीडिश पर्यावरण कार्यकर्ता और नोबेल पीस प्राइज विजेता ग्रेटा थनबर्ग और उनके जहाज को कब्जे में ले लिया है। सोमवार तड़के इजरायल की 5 स्पीड बोट्स ने जहाज को घेर लिया। इसके बाद सैनिकों ने जहाज पर चढ़कर उसे अपने कंट्रोल में ले लिया।

यह जहाज गाजा के लोगों के लिए राहत सामग्री लेकर जा रहा था। मैडलीन नाम के इस जहाज पर 12 लोग सवार हैं। सभी सेना की हिरासत में हैं। इस जहाज को गाजा की जगह इजरायल ले जाया गया। इन सभी कार्यकर्ताओं को अशदोद पोर्ट लाया गया है। यह इजरायल के पश्चिम में एक अहम पोर्ट है। गाजा से इसकी दूरी 27 किमी है। ग्रेटा थनबर्ग और बाकी लोगों को हमास के 7 अक्टूबर 2023 के हमले का वीडियो दिखाया जाएगा। रक्षा मंत्री इजरायल काट्ज ने सेना को यह आदेश दिया है। इजरायली सैनिकों के पहुंचने के बाद जहाज पर सवार सभी कार्यकर्ताओं ने इमरजेंसी से निपटने के लिए लाइफ जैकेट पहन लिए थे। काट्ज ने यह आदेश देते हुए खासतौर पर थनबर्ग का नाम लिया। उन्होंने कहा कि ग्रेटा और उनके हमास समर्थक साथियों को देखना चाहिए कि हमास असल में क्या है और उन्होंने कैसे इजरायल की महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों को मारा। 43 मिनट के इस वीडियो में दिखाया गया है कि हमले के दौरान किस तरह निर्दोष लोगों की हत्या की गई और उनके शवों के साथ क्या क्रूरता हुई। वीडियो की फुटेज आतंकवादियों के बाडीकैम से ली गई है और इसमें किसी भी फुटेज को सेंसर नहीं किया गया है।

बम की धमकी के बाद गल्फ एयर विमान कुवैत में सुरक्षित उतरा

■ संदिग्ध को लिया हिरासत में

कुवैत सिटी। कुवैत में गल्फ एयर के एक विमान को उडान भरने के कुछ समय बाद बम से उडाने की धमकी मिलने के बाद कुवैत अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सुरक्षित उतर लिया गया है। विमान से सभी यात्रियों को सुरक्षित निकाल लिया गया और संदिग्ध को गिरफ्तार किया गया है। कुवैत के विमानन प्राधिकरण ने यह जानकारी दी।

कुवैत के नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने एक बयान में कहा कि उड़ान जीएफ213 के आगमन पर पूरी सुरक्षा जांच की गई और डीजीसीए और आंतरिक मंत्रालय के समन्वय में आपातकालीन प्रक्रियाएं सक्रिय की गईं। बयान में कहा गया कि रविवार को सभी यात्रियों को सुरक्षित निकाल लिया गया और किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। साथ ही कहा गया कि यात्रियों को हवाई अड्डे के निर्दिष्ट लाउंज में ले जाया गया और उनकी हालत अच्छी है। डीजीसीए के प्रवक्ता अब्दुल्ला अल राजी ने कहा कि इस घटना से हवाई अड्डे के संचालन पर कोई असर नहीं पड़ा और उड़ानें निर्धारित समय पर जारी रहीं। सुरक्षा टीमों ने मानक आपातकालीन प्रक्रियाओं के अनुरूप विमान की गहन जांच की और एहतियात के तौर पर यात्रियों को उतार दिया गया। अधिकारियों ने पुष्टि की है कि बम की धमकी देने वाले व्यक्ति को हिरासत में ले लिया गया है।

अमेरिकी संसद में मस्क पर इशारा करते हुए स्पीकर की दो टूक

मस्क के लिए कानून नहीं बदलूंगा

■ मस्क पर स्पीकर ने कसा बड़ा तंज

वाशिंगटन। स्पीकर माइक जॉनसन ने साफ कर दिया कि वह एलन मस्क के खिलाफ और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के साथ हैं। मस्क ने रिपब्लिकन पार्टी के टैक्स और बजट विधेयक की आलोचना की थी, लेकिन जॉनसन ने कहा कि मस्क की आलोचना से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। उन्होंने जीओपी-नियंत्रित कांग्रेस पर मस्क के प्रभाव को कम करके आंका।

एक टीवी शो में जॉनसन ने कहा कि मैं दुनिया के सबसे अमीर आदमी को खुश करने के लिए कानून नहीं बनाऊंगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि हमारा मकसद मेहनत करने वाले आम अमेरिकियों की मदद करना है। जो अपने परिवारों के लिए प्रावधान करने और गुजारा करने की कोशिश कर रहे हैं। जॉनसन ने कहा कि उन्होंने ट्रम्प के सरकारी दक्षता विभाग के पूर्व प्रमुख मस्क से कुछ टेक्स्ट संदेशों का आदान-प्रदान किया, जब मस्क ने जीओपी बिल को 'घटिया' कहा और कहा कि इससे अमिरेका का कर्ज और भी बढ़ेगा। मस्क ने कैपिटल हिल में मतदाताओं से इस बिल के खिलाफ वोट करने की अपील की, जो सदन से पारित होने के बाद सीनेट में लंबित है। मस्क की इस आलोचन से राष्ट्रपति ट्रम्प भी नाराज हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें मस्क के साथ अपने संबंधों को सुधारने की कोई इच्छा नहीं है। स्पीकर जॉनसन ने रिपब्लिकन नेताओं के खिलाफ डेमोक्रेट्स को फंड देने की मस्क की धमकियों को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि हमें कांग्रेस के किसी भी रिपब्लिकन सदस्य की ओर से कोई चिंता नहीं दिख रही है। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि लोग प्रतीक्षा करने और देखने का रवैया अपना रहे हैं। कुछ लोग उनके कुछ तर्कों से सहमत हो सकते हैं, लेकिन बाकी लोग समझते हैं कि यह एक बहुत ही रोमांचक कानून है। स्पीकर जॉनसन ने कहा कि मस्क को सही जानकारी नहीं है, और जो रिपोर्ट कहती है कि इस बिल से अमेरिका का कर्ज 2.4 ट्रिलियन डॉलर और बढ़ेगा, वह रिपोर्ट गलत आधार पर बनाई गई है। उन्होंने तर्क दिया कि कम टैक्स और खर्च की कटौती से अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और इससे आगे चलकर घाटा भी कम हो सकता है।

ईरान में सड़क पर कुत्ता घुमाने पर बैन

■ लोगों की सुरक्षा के लिए 20 शहरों में नियम लागू

तेहरान। ईरान के 20 शहरों में पार्क या फिर सड़कों पर लोगों के कुत्ते टहलाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, सरकार ने यह कदम लोगों की सेहत, समाज में शांति और सुरक्षा के लिए उठाया गया है।

यह बैन 6 जून से लागू हो गया है। एक स्थानीय अधिकारी ने कहा कि जो लोग इस नियम का पालन नहीं करेंगे, उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इस तरह का नियम पहले 2019 में तेहरान में भी लागू किया गया था। अब यह इस्फहान और केरमान जैसे बड़े शहर में भी लागू हो गया है। ईरान में 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद से कुत्ते पालने और उन्हें सार्वजनिक तौर पर घुमाना एक विवाद का विषय रहा है। कुछ अधिकारी मानते हैं कि कुत्ते पालने की आदत पश्चिमी देशों की संस्कृति का हिस्सा है और इसे ईरानी संस्कृति के लिए खतरा माना जाता है। वहीं, कई धार्मिक नेता मानते हैं कि कुत्तों को छूना या उनकी लार से संपर्क में आना धार्मिक रूप से गंदा होता है। ईरान के सर्वोच्च धार्मिक नेता अयातुल्ला खामेनेई ने 2017 में कहा था कि सिर्फ चरवाहों, शिकारी या सुरक्षा के लिए कुत्ता पालना सही है। हालांकि इन्हें लेकर कोई सख्त कानून नहीं है, जो कुत्तों को पालने से पूरी तरह रोके।